केन्द्रीय विद्यालय संगठन

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

ZONAL INSTITUTE OF EDUCATION AND TRAINING, CHANDIGARH

अध्ययन सामग्री / Study Material

शैक्षिक सत्र / Session – 2023-24

कक्षा बारहवीं / Class - XII

विषय- हिन्दी (आधार) / Subject – HINDI(CORE)

विषय कोड / Subject Code - 302

तैयारकर्ता : संतोष कुमार कुशवाहा, सह-प्रशिक्षक (हिन्दी)

Prepared By: SANTOSH KUMAR KUSHWAHA, TA (HINDI)

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

ZONAL INSTITUTE OF EDUCATION AND TRAINING, CHANDIGARH

सेक्टर-33 सी, चंडीगढ़ / SECTOR-33C, CHANDIGARH

वेबसाइट / Website : zietchandigarh.kvs.gov.in

ई-मेल / e-mail :kvszietchd@gmail.com दूरभाष / Phone : 0172-2621302, 2621364

निदेशक की कलम से

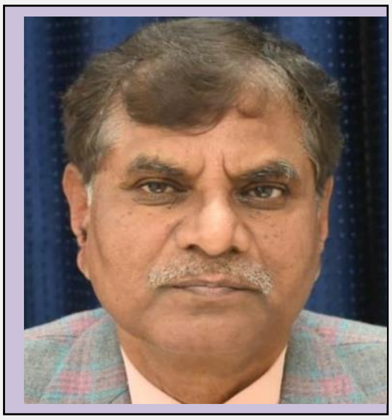

व्यावसायिक संगठन की तरह ही शैक्षिक संगठन में भी शिक्षकों एवं अन्य कार्मिकों के ज्ञान और कौशल की उन्नति के लिए प्रशिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सरल शब्दों में कहा जाए तो प्रशिक्षण व्यावसायिक कुशलता हेतु जरूरी योग्यताओं को प्राप्त करने का समुचित माध्यम है। समय की माँग और आधुनिक तकनीकी के विकास से तारतम्य न बैठा पाने के कारण कई कर्मचारी अपने कार्यस्थल पर अपनी बेहतर सेवाएँ नहीं दे पाते हैं। ऐसे माहौल में प्रशिक्षण उनकी कमियों को दूर करता है और उनमें कार्यकुशलता कि वृद्धि करते हुए सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करता है। संयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों एवं कार्मिकों में आत्मविश्वास जाग्रत करता है और उन्हें दूसरों के समकक्ष ऊँचे स्तर तक लाता है। आशय यह है कि प्रशिक्षण के माध्यम से सभी सहकर्मी सक्षम और विश्वसनीय बनते हैं और किसी एक पर संगठन की निर्भरता नहीं रहती है। प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक या कर्मचारी अपनी भूमिका और उत्तरदायित्व के प्रति पूर्ण रूप से सजग रहता है तथा विभिन्न कार्यों को उचित रूप में करने संबंधी प्रक्रियाओं से भली-भांति परिचित होता है। इससे एक कर्मचारी अपने संगठन के प्रति स्वयं द्वारा निभाई गई भूमिका से संतोष का अनुभव करता है। इसका कारण प्रशिक्षण के माध्यम से बढ़ी हुई उसकी वह योग्यता होती है जो उसे अपना कार्य करने हेतु समर्थ बनाती है। वह उस संगठन से लगाव महसूस करता है जिसके लिए काम करता है और उसका प्रतिदान अपनी बेहतर सेवाओं के माध्यम से दे पाने में सफल होता है।

केंद्रीय विद्यालय संगठन देश के हजारों-लाखों विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करने के लिए प्रतिबद्ध है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में उल्लेखित अवधारणाओं को आत्मसात करते हुए यह संगठन स्वयं द्वारा स्थापित प्रशिक्षण नीति का अनुगमन करता है। शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर हो रहे परिवर्तन के अनुसार शिक्षकों को प्रशिक्षण देना अनिवार्य है। शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में मिल रही चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाने हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम की आवश्यकता होती है। प्रशिक्षण के दौरान शिक्षक नई चुनौतियों का सामना करने की युक्तियाँ सीखते हैं। बदलते परिवेश में सीबीएसई की परीक्षाओं में भी शिक्षा को रटंत अधिगम के बजाय दैनिक जीवन में आत्मसात करने की दिशा में आकलन करने का प्रयास किया जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अध्ययन सामग्री विद्यार्थियों को विषय में पारंगत बनाएगी और सफलता के नए आयाम को छूने में सहायक सिद्ध होगी।

मुकेश कुमार
उपायुक्त एवं निदेशक

विषय-सूची

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1	नील पत्र : सी.बी.एस.ई.	4-5
2.	अपठित बोध : गद्यांश व काव्यांश (बहुविकल्पीय प्रश्न)	6-16
3.	अभिव्यक्ति और माध्यम (बहुविकल्पीय प्रश्न)	16-21
4.	आरोह भाग -2 : काव्य खंड (बहुविकल्पीय प्रश्न)	21-44
5.	आरोह भाग -2 : गद्य खंड (बहुविकल्पीय प्रश्न)	44-60
6.	वितान भाग -2 (बहुविकल्पीय प्रश्न)	60-70
7.	अभिव्यक्ति और माध्यम (पाठ संख्या-11 और 12) (वर्णनात्मक प्रश्न)	70-73
8.	नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन (वर्णनात्मक प्रश्न)	74-77
9.	अभिव्यक्ति और माध्यम (वर्णनात्मक प्रश्न)	77-90
10.	आरोह भाग -2 : काव्य खंड (वर्णनात्मक प्रश्न)	90-102
11.	आरोह भाग -2 : गद्य खंड (वर्णनात्मक प्रश्न)	102-108
12.	वितान भाग -2 (वर्णनात्मक प्रश्न)	108-117

परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

के.मा.शि.बो. हिंदी (केन्द्रिक) (कोड सं 302)

प्रश्न पत्र प्रारूप कक्षा-बारहवीं (2023-24)

- प्रश्न पत्र दो खंडो- खंड 'अ' और 'ब' का होगा ।
- खंड- अ में 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे ।
- खंड- ब में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे । प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे ।

भारांक 100 | निर्धारित समय 3 घंटे

खंड- अ वस्तुपरक प्रश्न			
विषयवस्तु			*अंक*
1	**अपठित बोध (गद्यांश व पद्यांश)**		*15*
	अ	एक अपठित गद्यांश पर आधारित 10 बहुविकल्पात्मक प्रश्न (अधिकतम 300 शब्दों का) **(1x10=10 अंक)**	10
	ब	एक अपठित पद्यांश पर आधारित 5 बहुविकल्पात्मक प्रश्न (अधिकतम 150 शब्दों का) **(1x5=5 अंक)**	05
2	**पाठ्य पुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम की पाठ संख्या 3, 4 तथा 5 पर आधारित**		*05*
	अभिव्यक्ति और माध्यम की पाठ संख्या 3, 4 तथा 5 पर आधारित 5 बहुविकल्पात्मक प्रश्न (1x5=5 अंक)		05
3	**पाठ्य-पुस्तक आरोह भाग -2**		*10*
	अ	पठित काव्यांश पर 5 बहुविकल्पात्मक प्रश्न **(1x5=5 अंक)**	05
	ब	पठित गद्यांश पर 5 बहुविकल्पात्मक प्रश्न **(1x5=5 अंक)**	05
4	**पूरक पाठ्य पुस्तक वितान भाग-2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		*10*
	अ	पठित पाठों पर 10 बहुविकल्पात्मक प्रश्न (1x10=10 अंक)	10
खंड- ब वर्णनात्मक प्रश्न			
विषयवस्तु			**अंक**
	पाठ्य पुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से जनसंचार और सृजनात्मक लेखन पाठ संख्या 3,4,5,11,12 तथा 13 पर आधारित		**16**
5	1.	दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी **एक विषय** पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन **(6 अंक 1 प्रश्न=06 अंक)**	06
	2.	कहानी का नाट्य रूपांतरण/रेडियो नाटक/अप्रत्याशित विषयों के लेखन पर आधारित तीन में से दो प्रश्न (विकल्प सहित) **(2 अंक x 2 प्रश्न)** (लगभग 40 शब्दों में)	04

	3.	पत्रकारिता और जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित तीन में से दो प्रश्न (विकल्प सहित) **(3 अंक x 2 प्रश्न)** (लगभग 40 शब्दों में)	06
6	**पाठ्य-पुस्तक आरोह भाग-2 एवं वितान भाग-2 पर आधारित**		**24**
	1.	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर(लगभग 60 शब्दों में) **(3 अंक x 2 प्रश्न)**	06
	2.	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर(लगभग 40 शब्दों में) **(2 अंक x 2 प्रश्न)**	04
	3.	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर(लगभग 60 शब्दों में) **(3 अंक x 2 प्रश्न)**	06
	4.	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर(लगभग 40 शब्दों में) **(2 अंक x 2 प्रश्न)**	04
	5.	वितान भाग-2 पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर(लगभग 40 शब्दों में) **(2 अंक x 2 प्रश्न)**	04
7.	**(क)**	श्रवण तथा वाचन -10	10
	(ख)	परियोजना-10	10
	कुल अंक		***100***

प्रस्तावित पुस्तकें:

1. आरोह भाग-2 2. वितान भाग-2 3. अभिव्यक्ति और माध्यम (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित)

नोट : पाठ्यक्रम से निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं :

आरोह भाग-2	**काव्य खंड**	• **गजानन माधव मुक्तिबोध -सहर्ष स्वीकारा है** • **फ़िराक गोरखपुरी -ग़ज़ल**
	गद्य खंड	• **विष्णु खरे - चार्ली चैपलिन और हम सब** • **रज़िया सज्ज़ाद ज़हीर- नमक**
वितान भाग-2		• **एन फ्रैंक-डायरी के पन्ने**

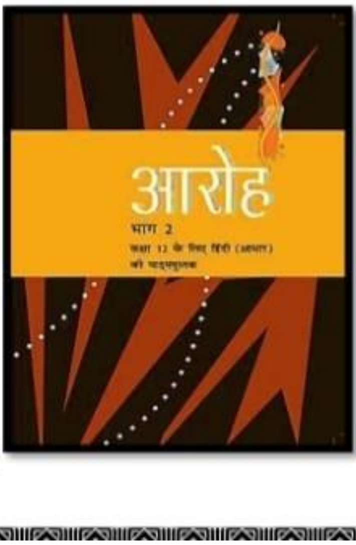

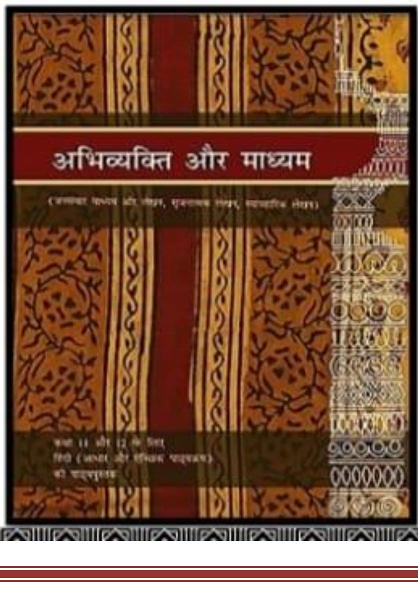

खंड-'अ' - अपठित बोध

अपठित गद्यांश

(1)

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

बड़ी चीजें संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्जा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था, जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे, मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि जिंदगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है।

आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से पैदा होते हैं। जिंदगी की दो ही सूरतें हैं। एक तो आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली या जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए-दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए, जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं, जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है।

इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं वे जिंदगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी जिंदगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनंद नहीं है? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो, तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है। साहस की जिंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है। ऐसी जिंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं।

i- बड़ी हस्तियाँ दुनिया पर किस प्रकार कब्जा करती हैं?

(क) रेगिस्तान में जन्म लेकर

(ख) जनमत की उपेक्षा करके

(ग) बड़ी मुसीबतों में पलकर

(घ) वनवास के जोखिमों को झेलकर

ii- महाभारत के युद्ध में किसकी जीत हुई थी?

(क) बादशाह अकबर की

(ख) युद्ध के वीरों की

(ग) कौरव सेना की

(घ) पांडवों की

iii- "जिंदगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है" - यह कथन किसका है?

(क) युद्ध में लड़ने वाले वीरों का

(ख) विंस्टन चर्चिल का

(ग) रेगिस्तान में जन्म लेने वालों का

(घ) जोखिम झेलने वालों का

iv- "जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है" यह तथ्य किससे संबंधित है?

(क) जिंदगी की पहली सूरत से

(ख) जिंदगी की दूसरी सूरत से
(ग) क और ख दोनों से
(घ) इनमें से कोई नहीं

v- आदमी के सारे गुण किस तरह पैदा होते हैं?
(क) दूसरों को विद्या सिखाने से
(ख) शांत रहने से
(ग) भयभीत होने से
(घ) आदमी के हिम्मती होने से

vi- कौन लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं?
(क) रेगिस्तान में जन्मे
(ख) साहस करने वाले
(ग) गोधूलि वाली दुनिया वाले
(घ) जोखिम लेने वाले

vii- अगर रास्ता आगे निकल रहा हो तो असली मज़ा किसमें है?
(क) पाँव पीछे हटाने में
(ख) पाँव बढ़ाते जाने में
(ग) चुपके से निकल जाने में
(घ) शोर मचाने में

viii- साहस की जिंदगी की क्या विशेषता है?
(क) वह निडर होती है
(ख) बिलकुल बेखौफ़ होती है
(ग) सबसे बड़ी होती है
(घ) उपर्युक्त सभी

ix- "तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं" – यह कथन किसके लिए है?
(क) बामुश्किल के लिए
(ख) बेखौफ़ के लिए
(ग) साहसी मनुष्य के लिए
(घ) नामुमकिन के लिए

x- साहसी शब्द साहस + ई से बना है। इसमें .... है।
(क) संधि
(ख) प्रत्यय
(ग) उपसर्ग
(घ) समास

उत्तर-

i-(ग) बड़ी मुसीबतों में पलकर ii-(घ) पांडवों की iii-(ख) विंस्टन चर्चिल का iv-(ख) जिंदगी की दूसरी सूरत से v-(घ) आदमी के हिम्मती होने से vi-(ग) गोधूलि वाली दुनिया वाले vii-(ख) पाँव बढ़ाते जाने में viii-(घ) उपर्युक्त सभी ix-(ग) साहसी मनुष्य के लिए x-(ख) प्रत्यय

(2)

संवाद में दोनों पक्ष बोलें यह आवश्यक नहीं। प्रायः एक व्यक्ति की संवाद में मौन भागीदारी अधिक लाभकर होती है। यह स्थिति संवादहीनता से भिन्न है। मन से हारे दुखी व्यक्ति के लिए दूसरा पक्ष अच्छे वक्ता के रूप में नहीं अच्छे श्रोता के रूप

में अधिक लाभकर होता है। बोलने वाले के हावभाव और उसका सलीका, उसकी प्रकृति और सांस्कृतिक-सामाजिक पृष्ठभूमि को पल भर में बता देते हैं। संवाद से संबंध बेहतर भी होते हैं और अशिष्ट संवाद संबंध बिगाड़ने का कारण भी बनता है। बात करने से बड़े-बड़े मसले, अंतर्राष्ट्रीय समस्याएँ तक हल हो जाती हैं।

पर संवाद की सबसे बड़ी शर्त है एक-दूसरे की बातें पूरे मनोयोग से, संपूर्ण धैर्य से सुनी जाएँ। श्रोता उन्हें कान से सुनें और मन से अनुभव करें तभी उनका लाभ है, तभी समस्याएँ सुलझने की संभावना बढ़ती है और कम-से-कम यह समझ में आता है कि अगले के मन की परतों के भीतर है क्या? सच तो यह है कि सुनना एक कौशल है जिसमें हम प्रायः अकुशल होते हैं। दूसरे की बात काटने के लिए, उसे समाधान सुझाने के लिए हम उतावले होते हैं और यह उतावलापन संवाद की आत्मा तक हमें पहुँचने नहीं देता।

हम तो बस अपना झंडा गाड़ना चाहते हैं। तब दूसरे पक्ष को झुंझलाहट होती है। वह सोचता है व्यर्थ ही इसके सामने मुँह खोला। रहीम ने ठीक ही कहा था-"सुनि इठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।" ध्यान और धैर्य से सुनना पवित्र आध्यात्मिक कार्य है और संवाद की सफलता का मूल मंत्र है। लोग तो पेड़-पौधों से, नदी-पर्वतों से, पशु-पक्षियों तक से संवाद करते हैं। राम ने इन सबसे पूछा था क्या आपने सीता को देखा?' और उन्हें एक पक्षी ने ही पहली सूचना दी थी। इसलिए संवाद की अनंत संभावनाओं को समझा जाना चाहिए।

i- संवाद में व्यक्ति की कौन-सी भागीदारी अधिक लाभकर होती है?

(क) चपल
(ख) मौन
(ग) संवादहीन
(घ) निरुद्देश्य

ii- अशिष्ट संवाद का क्या परिणाम होता है?

(क) वाद-विवाद होता है
(ख) संबंध बेहतर होते हैं
(ग) संबंध बिगड़ जाते हैं
(घ) जादू-सा असर होता है

iii- संवाद की सबसे बड़ी शर्त क्या है?

(क) बातें पूरे मनोयोग से सुनी जाएँ
(ख) संपूर्ण धैर्य से सुनी जाएँ
(ग) मन से अनुभव की जाएँ
(घ) उपर्युक्त सभी

iv- हम प्रायः किसमें अकुशल होते हैं?

(क) बात सुनने में
(ख) बात सुनाने में
(ग) बात काटने में
(घ) बात बनाने में

v- संवाद की आत्मा तक पहुँचने के लिए हमें क्या नहीं करना चाहिए?

(क) शिष्ट संवाद
(ख) बोलने की गंभीरता
(ग) बात के लिए उतावलापन
(घ) इनमें से कोई नहीं

vi- दूसरे पक्ष को झुंझलाहट कब होती है?

(क) जब हम शिष्ट संवाद करते हैं

(ख) जब हम मौन होकर दूसरों को सुनते हैं

(ग) जब हम अपना झंडा उतरना चाहते हैं

(घ) जब हम अपना झंडा गाड़ना चाहते हैं

vii- -"सुनि इठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।" यह पंक्ति किस कवि की है?

(क) संत कबीर की

(ख) कवि रहीम की

(ग) तुलसीदास की

(घ) इनमें से कोई नहीं

viii- ध्यान और धैर्य से सुनना -

I. पवित्र आध्यात्मिक कार्य है

II. संवाद की सफलता का मूल मंत्र है

(क) केवल एक

(ख) केवल दो

(ग) एक और दो, दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

ix- राम ने किससे संवाद किया था?

(क) पेड़-पौधों से

(ख) नदी-पर्वतों से

(ग) पशु-पक्षियों से

(घ) उपर्युक्त सभी से

x- 'आध्यात्मिक' शब्द में प्रत्यय है-

(क) इक

(ख) आत्मिक

(ग) मिक

(घ) आ

उत्तर-

i-(ख) मौन ii-(ग) संबंध बिगड़ जाते हैं iii-(घ) उपर्युक्त सभी iv-(क) बात सुनने में v-(ग) बात के लिए उतावलापन vi-(घ) जब हम अपना झंडा गाड़ना चाहते हैं vii-(ख) कवि रहीम की viii-(ग) एक और दो, दोनों ix-(घ) उपर्युक्त सभी से x-(क) इक

(3)

परियोजना शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। इसे तैयार करने में किसी खेल की तरह का ही आनंद मिलता है। इस तरह परियोजना तैयार करने का अर्थ है-खेल-खेल में बहुत कुछ सीख जाना। यदि आपको कहा जाए कि दशहरा पर निबंध लिखिए, तो आपको शायद उतना आनंद नहीं आएगा। लेकिन यदि आपसे कहा जाए कि अखबारों से प्राप्त जानकारियों के अलावा भी आपको देश-दुनिया की बहुत सारी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। यह आपको तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने का अवसर प्रदान करती है। इससे आप में नए-नए तथ्यों के कौशल का विकास होता है। इससे आपमें एकाग्रता का विकास होता है। लेखन संबंधी नई-नई शैलियों का विकास होता है।

आपमें चिंतन करने तथा किसी पूर्व घटना से वर्तमान घटना को जोड़कर देखने की शक्ति का विकास होता है। परियोजना कई प्रकार से तैयार की जा सकती है। हर व्यक्ति इसे अलग ढंग से, अपने तरीके से तैयार कर सकता है। ठीक उसी प्रकार जैसे हर व्यक्ति का बातचीत करने का, रहने का, खाने-पीने का अपना अलग तरीका होता है। ऐसा निबंध, कहानी कविता लिखते या चित्र बनाते समय भी होता है। लेकिन ऊपर कही गई बातों के आधार पर यहाँ हम परियोजना को मोटे तौर पर दो भागों

में बाँट सकते हैं-एक तो वे परियोजनाएँ, जो समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाती हैं और दूसरी वे, जो किसी विषय की समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार की जाती हैं।

समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाने वाली परियोजनाओं में संबंधित समस्या से जुड़े सभी तथ्यों पर प्रकाश डाला जाता है और उस समस्या के निदान के लिए भी दिए जाते हैं। इस तरह की परियोजनाएँ प्राय: सरकार अथवा संगठनों द्वारा किसी समस्या पर कार्य–योजना तैयार करते समय बनाई जाती हैं। इससे उस समस्या के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने में आसानी हो जाती हैं। किंतु दूसरे प्रकार की परियोजना को आप आसानी से तैयार कर सकते हैं। इसे 'शैक्षिक परियोजना' भी कहा जाता है। इस तरह की परियोजनाएँ तैयार करते समय आप संबंधित विषय पर तथ्यों को जुटाते हुए बहुत सारी नई-नई बातों से अपने-आप परिचित भी होते हैं।

i- लेखक के अनुसार किसे तैयार करने में खेल की तरह आनंद मिलता है?

(क) पढ़ना-लिखना न पड़े बस खेलते रहने में
(ख) खेल के दौरान दिए गए गृह कार्य को करने में
(ग) शिक्षा के तहत दी गई परियोजना को तैयार करने में
(घ) खेलना भी जरुरी है और पढ़ना भी जरुरी है

ii- आपको किस कार्य में बहुत आनंद आएगा?

(क) दशहरा विषय पर निबंध लिखने में
(ख) क्रिकेट या फुटबाल खेलकर समय बिताने में
(ग) अख़बार के अलावा भी अपनी पसंद की बातें एकत्रित करने में
(घ) अपने से छोटे बच्चों को चिढ़ाने में

iii- किस कार्य से बच्चों में नए-नए तथ्यों के कौशल का विकास होता है।

(क) मित्रों के साथ बैठकर बातें करने से
(ख) तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने से
(ग) घर में बड़ों द्वारा कही गई बात को नजरअंदाज करनेसे
(घ) इनमें से कोई नहीं

iv- परियोजना तैयार करने की क्या शैली हो सकती है?

(क) हर व्यक्ति इसे अलग ढंग से, अपने तरीके से तैयार कर सकता है
(ख) इसे एक ही ढंग से दूसरों के साथ मिलकर तैयार किया जा सकता है
(ग) कुछ लोग इसे सहज ढंग से समझ नहीं पाते हैं
(घ) कुछ लोग परियोजना कार्य करना ही नहीं चाहते

v- निबंध, कहानी, कविता लिखते या चित्र बनाते समय कैसा परिणाम होता है?

(क) सबका एक जैसा ही होता है
(ख) कुछ लोगों का एक जैसा और कुछ का अलग-अलग होता है
(ग) सब लोग किसी एक का देखकर लिख या बना लेते हैं
(घ) सबका अलग-अलग होता है

vi- 'एकाग्रता' शब्द में 'ता' क्या है?

(क) उपसर्ग
(ख) प्रत्यय
(ग) संधि
(घ) समास

vii- हम मोटे तौर पर परियोजना को जिन दो भागों में बाँट सकते हैं,वे हैं-

(क) समस्याओं को छोड़ देने के लिए और नई जानकारी प्राप्त करने के लिए
(ख) समस्याओं के निदान के लिए और समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए

(ग) समस्याओं के समझने के लिए और विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए

(घ) 'क' और 'ख' दोनों

viii- सरकार अथवा संगठनों द्वारा किसी समस्या पर तैयार होने वाली कार्ययोजना है-

(क) समस्याओं के निदान के लिए

(ख) समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए

(ग) 'क' और 'ख' दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

ix- 'परियोजना' शब्द में 'परि' है-

(क) उपसर्ग

(ख) प्रत्यय

(ग) संधि

(घ) समास

x- दूसरे प्रकार की परियोजना को कहा जा सकता है-

(क) शैक्षिक परियोजना

(ख) गैर-शैक्षिक परियोजना

(ग) इनमें से दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-

i-(ग) शिक्षा के तहत दी गई परियोजना को तैयार करने में ii-(ग) अख़बार के अलावा भी अपनी पसंद की बातें एकत्रित करने में iii-(ख) तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने से iv-(क) हर व्यक्ति इसे अलग ढंग से, अपने तरीके से तैयार कर सकता है v-(घ) सबका अलग-अलग होता है vi-(ख) प्रत्यय vii-(ख) समस्याओं के निदान के लिए और समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए viii- (ग) 'क' और 'ख' दोनों ix-(क) उपसर्ग x-(क) शैक्षिक परियोजना

अपठित काव्यांश

(1)

प्रश्न- निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

नए युग में विचारों की नई गंगा बहाओ तुम,
कि सब कुछ जो बदल दे ऐसे तूफाँ में नहाओ तुम।
अगर तुम ठान लो तो आँधियों को मोड़ सकते हो,
अगर तुम ठान लो तारे गगन के तोड़ सकते हो
अगर तुम ठान लो तो विश्व के इतिहास में अपने-
सुयश का एक नव अध्याय भी तुम जोड़ सकते हो,
तुम्हारे बाहुबल पर विश्व को भारी भरोसा है –
उसी विश्वास को फिर आज जन-जन में जगाओ तुम।
पसीना तुम अगर इस में अपना मिला दोगे,
करोड़ों दीन-हीनों को नया जीवन दिला दोगे।
तुम्हारी देह के श्रम-सीकरों में शक्ति है इतनी
कहीं भी धूल में तुम फूल सोने के खिला दोगे।
नया जीवन तुम्हारे हाथ का हल्का इशारा है।
इशारा कर वही इस देश को फिर लहलहाओ तुम।

i- कवि ने नए युग में विचारों की नई गंगा बहाने के लिए किसे प्रेरित किया है?

(क) योद्धाओं को

(ख) नवयुवकों को

(ग) नेताओं को

(घ) सिपाहियों को

ii- यदि युवा ठान ले तो क्या कर सकता है?

(क) आँधियों का रुख मोड़ सकते हैं

(ख) गगन के तारे तोड़ सकते हैं

(ग) विश्व के इतिहास में नया अध्याय जोड़ सकते हैं

(घ) उपर्युक्त सभी

iii- करोड़ों दीन-हीनों को नया जीवन किस तरह से मिल सकेगा?

(क) धनिकों से मदद माँगकर

(ख) निर्धन को महत्व देने से

(ग) नवयुवकों के परिश्रम करने से

(घ) नेताओं से कहकर

iv- 'धूल में सोने के फूल खिला देने' का क्या आशय है?

(क) मिट्टी से धन-धान्य उपजाना

(ख) सोने की मिट्टी में फूल लगाना

(ग) सोने की मिट्टी में सोने का फूल आना

(घ) मिट्टी में सोने का फूल खिलाना

v- उक्त काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है-

(क) गीत गाओ तुम

(ख) कवि की सीख

(ग) परिश्रम का फल

(घ) नवयुवक

उत्तर-

i-(ख) नवयुवकों को ii-(घ) उपर्युक्त सभी iii-(ग) नवयुवकों के परिश्रम करने से

iv-(क) मिट्टी से धन-धान्य उपजाना v-(घ) नवयुवक

(2)

पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।
पुरुष क्या, पुरुषार्थ हुआ न जो,
हृदय की सब दुर्बलता तजो।
प्रबल जो तुम में पुरुषार्थ हो,
सुलभ कौन तुम्हें न पदार्थ हो?
प्रगति के पथ में विचरों उठो।
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।।
न पुरुषार्थ बिना कुछ स्वार्थ है,
न पुरुषार्थ बिना परमार्थ है।
समझ लो यह बात यथार्थ है

कि पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ है।
भुवन में सुख-शांति भरो, उठो।
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ।।
न पुरुषार्थ बिना स्वर्ग है,
न पुरुषार्थ बिना अपवर्ग है।
न पुरुषार्थ बिना क्रियत कहीं,
न पुरुषार्थ बिना प्रियता कहीं।
सफलता वर-तुल्य वरो, उठो ।
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।।

i- पुरुष में पुरुषार्थ होने का क्या मतलब है?

(क) व्यक्ति में परिश्रम होना
(ख) जीवन में त्याग होना
(ग) कार्य में परावलंबी होना
(घ) जीवन में सत्य होना

ii- यदि व्यक्ति में प्रबल पुरुषार्थ हो तो इसका क्या परिणाम होगा?

(क) व्यक्ति जीवन में कभी सफल नहीं होगा
(ख) व्यक्ति का जीवन बहुत कठिन होगा
(ग) व्यक्ति को संसार की वांछित सभी वस्तुएँ सुलभ हो सकती हैं
(घ) व्यक्ति को जीवन भर पछताना पड़ेगा

iii- 'कि पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ है'- इस पंक्ति का क्या आशय है?

(क) व्यक्ति चाहे कुछ करे या न करे लाभ मिलता ही है
(ख) जीवन में परिश्रम के अलावा भी बहुत कुछ है
(ग) यह सच्चाई है कि जीवन में परिश्रम का ही महत्त्व है
(घ) जीवन में परिश्रम का ही महत्त्व है, यह सही नहीं है

iv- न पुरुषार्थ बिना स्वर्ग है, न पुरुषार्थ बिना अपवर्ग है- इसमें है-

(क) पदमैत्री एवं तुक का निर्वाह
(ख) दोहा एवं चौपाई छंद
(ग) रूपक एवं श्लेष अलंकार
(घ) प्रसाद गुण संपन्न भाषा

v- उक्त काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक है-

(क) पुरुषार्थ और कवि
(ख) पुरूषार्थी की विशेषता
(ग) पुरुषार्थ की महत्ता
(घ) पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ

उत्तर-

i-(क) व्यक्ति में परिश्रम होना ii- (ग) व्यक्ति को संसार की वांछित सभी वस्तुएँ सुलभ हो सकती हैं iii- (ग) यह सच्चाई है कि जीवन में परिश्रम का ही महत्त्व है iv -(क) पदमैत्री एवं तुक का निर्वाह v- (ग) पुरुषार्थ की महत्ता

(3)

चिड़िया को लाख समझाओ
कि पिंजड़े के बाहर

धरती बड़ी है, निर्मम है,
वहाँ हवा में उसे
अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी।
यूँ तो बाहर समुद्र है, नदी है, झरना है,
पर पानी के लिए भटकना है,
यहाँ कटोरी में भरा जल गटकना है।
बाहर दाने का टोटा है
यहाँ चुग्गा मोटा है।
बाहर बहेलिये का डर है
यहाँ निद्र्वद्व कंठ-स्वर है।
फिर भी चिड़िया मुक्ति का गाना गाएगी,
मारे जाने की आशंका से भरे होने पर भी
पिंजड़े से जितना अंग निकल सकेगा निकालेगी,
हर सू जोर लगाएगी
और पिंजड़ा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी।

i- कवि के अनुसार चिड़िया के लिए पिंजड़े के बाहर क्या कठिनाई है -
(क) पिंजड़े के बाहर आराम और मौज अधिक है
(ख) पिंजड़े के बाहर विस्तार अधिक है और हमेशा जीवन का संकट है
(ग) धरती दिखाई नहीं पड़ती है
(घ) लोग बहुत ही निर्मम होते हैं

ii- बाहर समुद्र, नदी, और झरना होते हुए भी चिड़िया को पानी के लिए क्यों भटकना पड़ेगा?
(क) इन पर पहरा होता है और उसे शिकारियों से भी बचना पड़ेगा इसलिए
(ख) समुद्र का पानी खारा होता है इसलिए
(ग) नदियों का पानी सूख गया है इसलिए
(घ) झरने का पानी पीने लायक नहीं होता इसलिए

iii- यहाँ चुग्गा मोटा है- इस पंक्ति में 'यहाँ' शब्द किसके लिए आया है?
(क) चिड़िया के लिए
(ख) धरती के लिए
(ग) पिंजड़े के लिए
(घ) शिकारी के लिए

iv- चिड़िया मुक्ति का गाना क्यों गाएगी?
(क) उसे सुविधाओं से अधिक आजादी प्रिय है
(ख) उसे सुविधाएँ पसंद हैं
(ग) उसे पिंजड़े में रहना पसंद है
(घ) इनमें से कोई नहीं

v- उक्त काव्यांश का उपयुक्त सारांश है-
(क) धरती और पिंजड़ा
(ख) चिड़िया का गीत
(ग) कवि की चिड़िया
(घ) आजादी महत्त्वपूर्ण है

उत्तर-

i-(ख) पिंजड़े के बाहर विस्तार अधिक है और हमेशा जीवन का संकट है ii-(क) इन पर पहरा होता है और उसे शिकारियों से भी बचना पड़ेगा इसलिए iii-(ग)पिंजड़े के लिए iv-(क)उसे सुविधाओं से अधिक आजादी प्रिय है v-(घ) आजादी महत्त्वपूर्ण है

(4)

होकर बड़े लड़ेंगे यों
यदि कहीं जान मैं लेती
कुल-कलंक-संतान
सौर में गला घोंट मैं देती।
लोग निपूती कहते पर
यह दिन न देखना पड़ता
मैं न बंधनों में सड़ती
छाती में शूल न गड़ता।
बैठी यही बिसूर रही माँ, नीचों ने घर घाला।
मेरा देश जल रहा, कोई नहीं बुझाने वाला।

भगत सिंह, अशफ़ाक़,
लालमोहन, गणेश बलिदानी
सोच रहे होंगे, हम सबकी
व्यर्थ गई क़ुर्बानी।
जिस धरती को तन की
देकर खाद, ख़ून से सींचा
अंकुर लेते समय, उसी पर
किसने ज़हर उलीचा।
हरी भरी खेती पर ओले गिरे, पड़ गया पाला।
मेरा देश जल रहा, कोई नहीं बुझाने वाला।

i- देश के लाडले बड़े होकर लड़-मर रहे हैं- इस बात से कौन बहुत दुखी है?

(क) प्रकृति माँ
(ख) धरती माँ
(ग) देवी माता
(घ) संवेदनशील माँ

ii- किसका गला सौर में घोंट देने की बात कही गई है?

(क) उन लोगों का जो बड़े होकर आपस में लड़ रहे हैं
(ख) जो देश की भलाई नहीं करते हैं
(ग) जो लोग परिश्रम नहीं करते हैं
(घ) जो दूसरों का शोषण करते हैं

iii- "मेरा देश जल रहा, कोई नहीं बुझाने वाला" – कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

I- देश में जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र आदि को लेकर हर तरफ संघर्ष है।
II- देश में हिंसा, लूटपाट और विभाजन को बढ़ावा दिया जा रहा है।

(क) कथन एक सही है

(ख) कथन दो सही है

(ग) दोनों कथन सही है

(घ) कोई कथन सही नहीं है

iv- कवि ने भगत सिंह, अशफ़ाक़, लाल मोहन, गणेश इत्यादि बलिदानियों को क्यों याद किया है?

(क) वे एक बार फिर से जन्म लें

(ख) कवि को लगता है कि उनका बलिदान व्यर्थ हो गया

(ग) उन्हें कोई महत्त्व नहीं दे रहा है

(घ) सब अपने स्वार्थ में जी रहे हैं

v- उक्त पंक्तियों में कवि की मुख्य भावना क्या है?

(क) किसानों के प्रति अत्यधिक मोह

(ख) नवजवानों के लिए विद्रोह

(ग) देश की एकता एवं अखंडता के प्रति आकुलता

(घ) सरकार की बेरुखी की आलोचना

उत्तर-

i- (घ) संवेदनशील माँ ii-(क) उन लोगों का जो बड़े होकर आपस में लड़ रहे हैं iii-(ग) दोनों कथन सही है iv- (ख) कवि को लगता है कि उनका बलिदान व्यर्थ हो गया v-(ग) देश की एकता एवं अखंडता के प्रति आकुलता

अभिव्यक्ति और माध्यम (बहुविकल्पीय प्रश्न उत्तर)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए-

i- समाचार लेखन की सबसे उपयोगी एवं लोकप्रिय शैली कौन-सी है ?

(क) संक्षेप शैली

(ख) कथा शैली

(ग) उल्टा पिरामिड शैली

(घ) सीधा पिरामिड शैली

ii- उलटा पिरामिड शैली में-

(क) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे बाद में लिखा जाता है

(ख) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को मध्य में लिखा जाता है

(ग) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को नहीं लिखा जाता है

(घ) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है

iii- समाचार माध्यमों में पाठकों एवं श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए पत्रकारों द्वारा किए जाने वाले लेखन को क्या कहा जाता है?

(क) पत्रकारीय लेखन

(ख) संपादकीय लेखन

(ग) फीचर लेखन

(घ) स्तंभ लेखन

iv- पत्रकारीय लेखन के अंतर्गत क्या आता है?

(क) संपादकीय

(ख) समाचार

(ग) आलेख

(घ) उपर्युक्त सभी

v- किसी समाचार पत्र या संगठन का नियमित वेतनभोगी पत्रकार कहलाता है-

(क) पूर्णकालिक पत्रकार

(ख) अंशकालिक पत्रकार
(ग) स्वतंत्र पत्रकार
(घ) इनमें से कोई नहीं

vi- समाचार के तत्वों में शामिल है-
(क) नवीनता
(ख) प्रभावकारिता,
(ग) निकटता
(घ) उक्त तीनों

vii- समाचार लेखन में कुल कितने ककारों का प्रयोग किया जाता है?
(क) आठ
(ख) चार
(ग) छह
(घ) पाँच

viii- सूचनात्मक एवं तथ्यों पर आधारित ककार कौन-से हैं?
(क) कब, कौन, कैसे, कहाँ
(ख) कब, कौन, क्या, कहाँ
(ग) कब, क्यों, क्या, कहाँ
(घ) कौन, क्या, कहाँ, कैसे

ix- किसी क्षेत्र विशेष से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों एवं समस्याओं का सूक्ष्म विश्लेषण करके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की जाने वाली रिपोर्ट को कहते हैं -
(क) सार्वजनिक रिपोर्ट
(ख) व्यक्तिगत रिपोर्ट
(ग) विशेष रिपोर्ट
(घ) एकल रिपोर्ट

x- राजनीति, अपराध, खेल, फ़िल्म व कृषि क्षेत्र के लिए संवाददाताओं के बीच रूचि एवं विशेज्ञता के आधार पर काम के बँटवारे को क्या कहते हैं?
(क) ताजा खबर
(ख) सीधा प्रसारण
(ग) बीट
(घ) पत्रकारिता

xi- स्वतंत्र पत्रकार कहलाता है-
(क) किसी समाचार संगठन का नियमित एवं वेतनभोगी कर्मचारी
(ख) किसी समाचार संगठन का निश्चित मानदेय पर कार्य करने वाला अनियमित कर्मचारी
(ग) किसी समाचार संगठन के लिए अपने लेख के लिए भुगतान पाने वाला पत्रकार
(घ) इनमें से ‘क’ और ‘ख’

xii- समाचार पत्र में संपादकीय लिखने का दायित्व किसका होता है?
(क) प्रकाशक का
(ख) संपादक और उसके सहयोगियों का
(ग) संवाददाता का
(घ) मुद्रक का

xiii- किसी विशेष विषय पर विचार एवं गद्य प्रधान अभिव्यक्ति को क्या कहा जाता है?
(क) संपाकीय

(ख) समाचार
(ग) टिप्पणी
(घ) आलेख

xiv- इंट्रो, मुखड़ा और बाडी किसके महत्त्वपूर्ण भाग हैं-
(क) समाचार पत्र के
(ख) टेलीविजन के
(ग) उलटा पिरामिड शैली के
(घ) इंटरनेट के

xv- निम्नलिखित में से किसे समाचार पत्र की आवाज माना जाता है?
(क) फीचर को
(ख) संपादकीय को
(ग) रिपोर्ट को
(घ) आलेख को

xvi- इंटरनेट पत्रकारिता का आशय है-
(क) इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान
(ख) इंटरनेट पर वीडियो गेम का आदान-प्रदान
(ग) इंटरनेट पर पैसों का लेन-देन
(घ) इनमें से कोई नहीं

xvii- भारत में सबसे पहला समाचार पत्र कब और कहाँ से प्रकाशित हुआ?
(क) 1835 ई. में गोवा से प्रकाशित हुआ
(ख) 1780 ई. में जेम्स ऑगस्ट हिकी का 'बंगाल गजट' कोलकाता से प्रकाशित हुआ
(ग) 1826 ई. में कोलकाता से प्रकाशित हुआ
(घ) 1885 ई. में मुंबई से प्रकाशित हुआ

xviii- पत्रकारिता से क्या आशय है?
(क) अखबार, रेडियो, टेलीविजन या इंटरनेट के माध्यम से खबरों का संचार ही पत्रकारिता है
(ख) विविध क्षेत्रों से ख़बरों का संकलन करना पत्रकारिता कहलाती है
(ग) संवाददाताओं से प्राप्त ख़बरों में काट-छाँट करना ही पत्रकारिता है
(घ) उक्त तीनों सही हैं

xix- झूठी अफवाहों, सनसनीखेज मुद्दों को प्रमुखता देने वाली पत्रकारिता क्या कहलाती है?
(क) खोजी पत्रकारिता
(ख) पीत पत्रकारिता
(ग) वैकल्पिक पत्रकारिता
(घ) पेज थ्री पत्रकारिता

xx- निम्नलिखित में से मुद्रित माध्यम नहीं है?
(क) अखबार,
(ख) रेडियो
(ग) पुस्तक
(घ) बैनर

xxi- सुव्यवस्थित, सृजनात्मक एवं आत्मनिष्ठ लेखन को क्या कहते हैं?
(क) समाचार
(ख) स्तंभ
(ग) आलेख

(घ) फीचर

xxii- अनुपलब्ध तथ्यों की गहरी छानबीन करके सार्वजनिक की जाने वाली रिपोर्ट कहलाती है-

(क) विशेषीकृत रिपोर्ट
(ख) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट
(ग) खोजी रिपोर्ट
(घ) विवेचनात्मक रिपोर्ट

xxiii- एक अच्छे और रोचक फीचर लेखन के लिए निम्नांकित में किसे शामिल किया जाता है?

(क) रेखांकन, फोटो, ग्राफिक्स
(ख) सूचना, मुद्दे, तथ्य
(ग) रिपोर्ट, स्तंभ, आलेख
(घ) इनमें से कोई नहीं

xxiv- पत्रकारीय लेखन के लिए पत्रकार किस स्रोत से कच्चा माल प्राप्त करता है?

(क) फीचर से
(ख) साक्षात्कार से
(ग) समाचार से
(घ) आलेख से

xxv- निम्नांकित में से स्तंभ लेखन संबंधित है?

(क) सृर्जनात्मक लेखन से
(ख) विवरणात्मक लेखन से
(ग) विचारपरक लेखन से
(घ) कथात्मक लेखन से

xxvi- कॉलम 'क' का कॉलम 'ख' से उचित मिलन कीजिए :

कॉलम 'क'	कॉलम 'ख'
(i) बीट रिपोर्टर	(i) निवेशक
(ii) फीचर	(ii) संवाददाता
(iii) कारोबार	(iii) घुटने टेकना
(iv) खेल	(iv) कथात्मक

(क) (i)-(iii), (ii)-(iv), (iii)-(i), (iv)-(ii)

(ख) (i)-(ii), (ii)-(iv), (iii)-(i), (iv)-(iii)

(ग) (i)-(iv), (ii)-(iii), (iii)-(ii), (iv)-(i)

(घ) (i)-(ii), (ii)-(i), (iii)-(iv), (iv)-(iii)

xxvii-. कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक जो अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं, ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर उन्हें समाचार पत्र के लिए क्या कार्य सौंपा जाता है?

(क) नियमित स्तंभ लेखन (ख) नियमित फीचर लेखन
(ग) समाचार लेखन (घ) उपरोक्त सभी

xxviii-. दिए गए विकल्पों का सही मिलान करें।

अ. क्लीशे	I. विचारपरक लेखन
ब. अंशकालिक पत्रकार	II. किसी से भी संबद्ध नहीं

स. फ्रीलांसर पत्रकार III. दुहराव

द. स्तंभ लेखन IV. स्ट्रिंगर

क) अ I ब II स III द IV

ख) अ III ब II स IV द I

ग) अ IV ब III स II द I

घ) अ III ब IV स II द I

xxix- 'डेस्क' से क्या अभिप्राय है ?

क) यहाँ रिपोर्टरों को उनके क्षेत्र बाँटे जाते हैं।
ख) यह एक मशीन है।
ग) यहाँ समाचारों को छापने योग्य बनाया जाता है।
घ) यहाँ लेखन कार्य किया जाता है।

xxx-. अभिकथन- विशेष लेखन समाचार-पत्रों में विविधता आती है और उनका कलेवर बढ़ता है।

कारण- पाठकों की व्यापक अभिरुचियों को ध्यान में रखते हुए उनकी जिज्ञासा शांत करते करने के लिए विशेष लेखन किया जाता है।

क) अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, अभिकथन की सही व्याख्या करता है।

ख) अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं और कारण, अभिकथन की सही व्याख्या नहीं है।

ग) अभिकथन सही है लेकिन कारण गलत है।

घ) अभिकथन गलत है लेकिन कारण सच है।

उत्तर-

i-(ग) उल्टा पिरामिड शैली
ii-(घ) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है
iii-(क) पत्रकारीय लेखन
iv-(घ) उपर्युक्त सभी
v-(क) पूर्णकालिक पत्रकार
vi-(घ) उक्त तीनों
vii-(ग) छह
viii-(ख) कब, कौन, क्या, कहाँ
ix-(ग) विशेष रिपोर्ट
x-(ग) बीट
xi-(ग) किसी समाचार संगठन के लिए अपने लेख के लिए भुगतान पाने वाला पत्रकार
xii-(ख) संपादक और उसके सहयोगियों का
xiii-(घ) आलेख
xiv-(ग) उलटा पिरामिड शैली के
xv-(ख) संपादकीय को
xvi-(क) इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान
xvii-(ख) 1780 ई. में जेम्स ऑगस्ट हिकी का 'बंगाल गजट' कोलकाता से प्रकाशित हुआ
xviii-(घ) उक्त तीनों
xix-(ख) पीत पत्रकारिता
xx-(ख) रेडियो

xxi-(घ) फीचर

xxii-(ग) खोजी रिपोर्ट

xxiii-(क) रेखांकन, फोटो, ग्राफिक्स

xxiv-(ख) साक्षात्कार से

xxv-(ग) विचारपरक लेखन से

xxvi- (ख) (i)-(ii), (ii)-(iv), (iii)-(i), (iv)-(iii)

xxvii- (क) नियमित स्तंभ लेखन

xxviii- (घ) अ III ब IV स II द I

xxix- (ग) यहाँ समाचारों को छापने योग्य बनाया जाता है ।

xxx- (क) अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, अभिकथन की सही व्याख्या करता है ।

काव्य-खंड

आत्मपरिचय, दिन जल्दी-जल्दी ढलता है - हरिवंश राय बच्चन

कवि परिचय- कविवर हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवंबर सन 1907 को इलाहाबाद में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1942-1952 ई० तक यहीं पर प्राध्यापक रहे। उन्होंने कैंब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैंड से पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। अंग्रेजी कवि कीट्स पर उनका शोधकार्य बहुत चर्चित रहा। वे आकाशवाणी के साहित्यिक कार्यक्रमों से संबंद्ध रहे और फिर विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ रहे। उन्हें राज्यसभा के लिए भी मनोनीत किया गया। 1976 ई० में उन्हें 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया गया।

रचनाएँ- हरिवंश राय बच्चन की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

1. **काव्य-संग्रह**-मधुशाला (1935), मधुबाला (1938), मधुकलश (1938), निशा-निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल-अंतर, मिलनयामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नए-पुराने झरोखे, टूटी-फूटी कड़ियाँ।
2. **आत्मकथा**-क्या भूलें क्या याद करूं, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक।
3. **अनुवाद**-हैमलेट, जनगीता, मैकबेथ।
4. **डायरी**-प्रवासी की डायरी।

काव्यगत विशेषताएँ- बच्चन हालावाद के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। दोनों महायुद्धों के बीच मध्यवर्ग के विक्षुब्ध विकल मन को बच्चन ने वाणी दी। उन्होंने छायावाद की लाक्षणिक वक्रता की बजाय सीधी-सादी जीवंत भाषा और संवेदना से युक्त गेय शैली में अपनी बात कही। उन्होंने व्यक्तिगत जीवन में घटी घटनाओं की सहज अनुभूति की ईमानदार अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से की है। यही विशेषता हिंदी काव्य-संसार में उनकी प्रसिद्ध का मूलाधार है। कवि ने अपनी अनुभूतियाँ सहज स्वाभाविक ढंग से कही हैं। इनकी भाषा आम व्यक्ति के निकट है। बच्चन का कवि-रूप सबसे विख्यात है उन्होंने कहानी, नाटक, डायरी आदि के साथ बेहतरीन आत्मकथा भी लिखी है। इनकी रचनाएँ ईमानदार आत्मस्वीकृति और प्रांजल शैली के कारण आज भी पठनीय हैं।

आत्मपरिचय

प्रतिपादय- कवि का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन है। समाज से व्यक्ति का नाता खट्टा-मीठा तो होता ही है। संसार से पूरी तरह निरपेक्ष रहना संभव नहीं। दुनिया अपने व्यंग्य-बाण तथा शासन-प्रशासन से चाहे जितना कष्ट दे, पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता। क्योंकि उसकी अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का उत्स, उसका परिवेश ही उसकी दुनिया है। कवि अपना परिचय देते हुए लगातार दुनिया से अपने द्विधात्मक और

द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्घाटित करता चलता है। वह पूरी कविता का सार एक पंक्ति में कह देता है कि दुनिया से मेरा संबंध प्रीतिकलह का है, मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है- *उन्मादों में अवसाद, रोदन में राग, शीतल वाणी में आग, विरुद्धों का विरोधाभासमूलक सामंजस्य साधते-साधते ही वह बेखुदी, वह मस्ती, वह दीवानगी व्यक्तित्व में उत्तर आई है कि दुनिया का तलबगार नहीं हूँ। बाजार से गुजरा हूँ, खरीदार नहीं हूँ*- जैसा कुछ कहने का ठस्सा पैदा हुआ है। यह ठस्सा ही छायावादोत्तर गीतिकाव्य का प्राण है। किसी असंभव आदर्श की तलाश में सारी दुनियादारी ठुकराकर उस भाव से कि जैसे दुनिया से इन्हें कोई वास्ता ही नहीं है।

सार- कवि कहता है कि यद्यपि वह सांसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, फिर भी वह इस जीवन से प्यार करता है। वह अपनी आशाओं और निराशाओं से संतुष्ट है। वह संसार से मिले प्रेम व स्नेह की परवाह नहीं करता क्योंकि संसार उन्हीं लोगों की जयकार करता है जो उसकी इच्छानुसार व्यवहार करते हैं। वह अपनी धुन में रहने वाला व्यक्ति है। वह निरर्थक कल्पनाओं में विश्वास नहीं रखता क्योंकि यह संसार कभी भी किसी की इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर पाया है। कवि सुख-दुख, यश-अपयश, हानि-लाभ आदि द्वंद्वात्मक परिस्थितियों में एक जैसा रहता है। यह संसार मिथ्या है, अत: यहाँ स्थायी वस्तु की कामना करना व्यर्थ है। कवि संतोषी प्रवृत्ति का है। वह अपनी वाणी के जरिये अपना आक्रोश व्यक्त करता है। उसकी व्यथा शब्दों के माध्यम से प्रकट होती है तो संसार उसे गाना मानता है। संसार उसे कवि कहता है, परंतु वह स्वयं को नया दीवाना मानता है। वह संसार को अपने गीतों, द्वंद्वों के माध्यम से प्रसन्न करने का प्रयास करता है। कवि सभी को सामंजस्य बनाए रखने के लिए कहता है।

विशेष-

1. कवि ने स्वयं के निजी प्रेम को स्वीकार किया है।
2. संसार के स्वार्थी स्वभाव पर टिप्पणी की है।
3. 'स्नेह-सुरा' व 'साँसों के तार' में रूपक अलंकार है।
4. 'जग-जीवन', 'स्नेह-सुरा' में अनुप्रास अलंकार है।
5. खड़ी बोली का स्वाभाविक प्रयोग है।
6. 'किया करता हूँ', 'लिए फिरता हूँ' की आवृत्ति में गीत की मस्ती है।
7. तत्सम शब्दावली की बहुलता है।
8. श्रृंगार रस की सरस अभिव्यक्ति हुई है।
9. 'मैं' शैली के प्रयोग से कविता का सौन्दर्य बढ़ गया।

एक गीत

प्रतिपादय- कवि **ने 'निशा-निमंत्रण'** से उद्धृत इस गीत में प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश की है। कवि का मानना है कि किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयास के पगों में गति भर सकता है अन्यथा हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने को अभिशिप्त हो जाते हैं। प्रस्तुत गीत इस बड़े सत्य के साथ समय के गुजरते जाने के एहसास में लक्ष्य-प्राप्ति के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा भी लिए हुए है। 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता प्रेम की महत्ता पर प्रकाश डालती है। प्रेम की तरंग ही मानव के जीवन में उमंग और भावना की हिलोर पैदा करती है। प्रेम के कारण ही मनुष्य को लगता है कि दिन जल्दी-जल्दी बीता जा रहा है। इससे अपने प्रियजनों से मिलने की उमंग से कदमों में तेजी आती है तथा पक्षियों के पंखों में तेजी और गति आ जाती है। यदि जीवन में प्रेम न हो तो शिथिलता आ जाती है।

सार- कवि गीत का आशय स्पष्ट करते हुए कहता है कि साँझ घिरते ही पथिक लक्ष्य की ओर तेजी से कदम बढ़ाने लगता है। उसे रास्ते में रात होने का भय होता है। जीवन-पथ पर चलते हुए जब व्यक्ति अपने लक्ष्य के निकट होता है तो उसकी उत्सुकता और बढ़ जाती है। पक्षी भी बच्चों की चिंता करके तेजी से पंख फड़फड़ाने लगते हैं। अपनी संतान से मिलने की चाह में हर प्राणी आतुर हो जाता है। आशा व्यक्ति के जीवन में नई चेतना भर देती है। जिनके जीवन में कोई आशा नहीं होती, वे शिथिल हो जाते हैं। उनका जीवन नीरस हो जाता है। उनके भीतर उत्साह समाप्त हो जाता है।

विशेष-

1. समय की गतिशीलता का यथार्थ चित्रण है।
2. कवि ने जीवन की क्षणभंगुरता व प्रेम की व्यग्रता को व्यक्त किया है।
3. 'जल्दी-जल्दी' में पुनरुक्तिप्रकाश तथा 'मुझसे मिलने' में अनुप्रास अलंकार है।
4. भाषा सरल, सहज और भावानुकूल है, जिसमें खड़ी बोली का प्रयोग है।
5. कविता में बिम्बों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।
6. पथिक के प्रसंग में वीर, चिड़िया के प्रसंग में वात्सल्य और कवि (प्रेमी) के प्रसंग वियोग श्रृंगार रस की अनुभूति है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र-1 कवि के हृदय रूपी वीणा के तारों को किसने झंकृत कर दिया?

(क) सांसारिक लोगों ने
(ख) कवि की प्रेमिका ने
(ग) ज्ञानी मनुष्यों ने
(घ) ईश्वर के भक्तों ने

प्र-2 कवि के अनुसार संसार अधूरा क्यों है?

(क) क्योंकि सांसारिक लोग प्रेम रहित जीवन जीते है
(ख) क्योंकि वे स्वार्थ के पीछे भागते हैं
(ग) क्योंकि उनमें घृणा का भाव है
(घ) उपर्युक्त सभी

प्र-3 सांसारिक लोग दुःख रूपी सागर से बचने के लिए क्या करते हैं?

(क) प्रेम को महत्त्व देते हैं
(ख) स्वार्थपूर्ण जीवन जीते हैं
(ग) धर्म-कर्म, पूजा-पाठ और सेवा-भाव का सहारा लेते हैं
(घ) दूसरों से भेदभाव करते हैं

प्र-4 'शीतल वाणी में आग' होने का क्या आशय है?

(क) मधुर वचनों में क्रोध
(ख) कोमल वाणी में व्यंग्य
(ग) सहज स्वर में प्रेम
(घ) सरस स्वर में विरह की तीव्रता

प्र-5 कवि स्वयं के विषय में दुनिया वालों को क्या बताता है?

(क) वह एक ज्ञानवान व्यक्ति है
(ख) वह संन्यासियों-सा जीता है
(ग) वह प्रेम करने वाला एक दीवाना है
(घ) वह दुनियादारी को महत्त्व देता है

प्र-6 दिन भर का थका होने पर भी पथिक जल्दी-जल्दी क्यों चलता है?

(क) पथिक के जीवन में अंधेरा है
(ख) उसकी मंजिल दिखाई पड़ रही है और रात होने वाली है
(ग) चिड़िया के बच्चे उसके साथ हैं
(घ) उसे अपने बच्चों की याद आ रही है

प्र-7 चिड़ियों के पंखों में तेजी आने का क्या कारण है?

(क) वे बहुत दूर चले गए हैं
(ख) उनके घोसलों में कोई नहीं है
(ग) चिड़ियों के बच्चे उड़ गए होंगे

(घ) बच्चे अपने माता-पिता के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे

प्र-8 दिन जल्दी-जल्दी ढलता है- पंक्ति का क्या अर्थ है?

(क) समय स्थिर है

(ख) समय गतिशील है

(ग) समय न तो स्थिर है और न ही गतिशील है

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-9 कवि के ह्रदय में किस बात की वेदना है?

(क) उससे मिलने वाला कोई नहीं है

(ख) वह अपनी मंजिल से दूर है

(ग) चिड़ियों का दु:ख देखकर

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-10 बच्चे प्रत्याशा में होंगे.... में कौन-सा रस है?

(क) वीर रस

(ख) संयोग श्रृंगार रस

(ग) करुण रस

(घ) वात्सल्य रस

उत्तर-

1-(ख) कवि की प्रेमिका ने 2-(घ) उपर्युक्त सभी 3-(ग) धर्म-कर्म, पूजा-पाठ और सेवा-भाव का सहारा लेते हैं 4-(घ) सरस स्वर में विरह की तीव्रता 5-(ग) वह प्रेम करने वाला एक दीवाना है 6-(ख) उसकी मंजिल दिखाई पड़ रही है और रात होने वाली है 7-(घ) बच्चे अपने माता-पिता के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे 8-(ख) समय गतिशील है 9-(क) उससे मिलने वाला कोई नहीं है 10- (घ) वात्सल्य रस

पतंग - आलोक धन्वा

जीवन परिचय- आलोक धन्वा सातवें-आठवें दशक के बहुचर्चित कवि हैं। इनका जन्म सन 1948 में बिहार के मुंगेर जिले में हुआ था। इनकी साहित्य-सेवा के कारण इन्हें राहुल सम्मान मिला। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ने इन्हें साहित्य सम्मान से सम्मानित किया। इन्हें बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान व पहल सम्मान से नवाजा गया। ये पिछले दो दशकों से देश के विभिन्न हिस्सों में सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय रहे हैं। इन्होंने जमशेदपुर में अध्ययन मंडलियों का संचालन किया और रंगकर्म तथा साहित्य पर कई राष्ट्रीय संस्थानों व विश्वविद्याल रचनाएँ-इनकी पहली कविता जनता का आदमी सन 1972 में प्रकाशित हुई। उसके बाद भागी हुई लड़कियाँ, ब्रूनो की बेटियाँ कविताओं से इन्हें प्रसिद्ध मिली। इनकी कविताओं का एकमात्र संग्रह सन 1998 में 'दुनिया रोज बनती है' शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

काव्यगत विशेषताएँ- कवि की 1972-73 में प्रकाशित कविताएँ हिंदी के अनेक गंभीर काव्य-प्रेमियों को जबानी याद रही हैं। आलोचकों का मानना है कि इनकी कविताओं के प्रभाव का अभी तक ठीक से मूल्यांकन नहीं किया गया है। इसी कारण शायद कवि ने अधिक लेखन नहीं किया। इनके काव्य में भारतीय संस्कृति का चित्रण है। ये बाल मनोविज्ञान को अच्छी तरह समझते हैं। 'पतंग' कविता बालसुलभ इच्छाओं व उमंगों का सुंदर चित्रण है।

भाषा-शैली- कवि ने शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया है। ये बिंबों का सुंदर प्रयोग करते हैं। इनकी भाषा सहज व सरल है। इन्होंने अलंकारों का सुंदर व कुशलता से प्रयोग किया है।

प्रतिपादय- 'पतंग' कविता कवि के 'दुनिया रोज बनती है' व्यंग्य संग्रह से ली गई है। इस कविता में कवि ने बालसुलभ इच्छाओं और उमंगों का सुंदर चित्रण किया है। बाल क्रियाकलापों एवं प्रकृति में आए परिवर्तन को अभिव्यक्त करने के लिए इन्होंने सुंदर बिंबों का उपयोग किया है। पतंग बच्चों की उमंगों का रंग-बिरंगा सपना है जिसके जरिये वे आसमान की ऊँचाइयों को छूना चाहते हैं तथा उसके पार जाना चाहते हैं।

यह कविता बच्चों को एक ऐसी दुनिया में ले जाती है जहाँ शरद ऋतु का चमकीला इशारा है, जहाँ तितलियों की रंगीन दुनिया है, दिशाओं के मृदंग बजते हैं, जहाँ छतों के खतरनाक कोने से गिरने का भय है तो दूसरी ओर भय पर विजय पाते बच्चे हैं जो गिरगिरकर सँभलते हैं तथा पृथ्वी का हर कोना खुद-ब-खुद उनके पास आ जाता है। वे हर बार नई-नई पतंगों को सबसे ऊँचा उड़ाने का हौसला लिए औंधेरे के बाद उजाले की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

सार- कवि कहता है कि भादों के बरसते मौसम के बाद शरद ऋतु आ गई। इस मौसम में चमकीली धूप थी तथा उमंग का माहौल था। बच्चे पतंग उड़ाने के लिए इकट्ठे हो गए। मौसम साफ़ हो गया तथा आकाश मुलायम हो गया। बच्चे पतंगें उड़ाने लगे तथा सीटियाँ व किलकारियाँ मारने लगे। बच्चे भागते हुए ऐसे लगते हैं मानो उनके शरीर में कपास लगे हों। उनके कोमल नरम शरीर पर चोट व खरोंच अधिक असर नहीं डालती। उनके पैरों में बेचैनी होती है जिसके कारण वे सारी धरती को नापना चाहते हैं। वे मकान की छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं मानो छतें नरम हों। खेलते हुए उनका शरीर रोमांचित हो जाता है। इस रोमांच मैं वे गिरने से बच जाते हैं। बच्चे पतंग के साथ उड़ते-से लगते हैं। कभी-कभी वे छतों के खतरनाक किनारों से गिरकर भी बच जाते हैं। इसके बाद इनमें साहस तथा आत्मविश्वास बढ़ जाता है।

विशेष-

1. कवि ने बिंबात्मक शैली में शरद ऋतु का सुंदर चित्रण किया है।
2. बाल-सुलभ चेष्टाओं का अनूठा वर्णन है।
3. शरद ऋतु का मानवीकरण किया गया है।
4. उपमा, अनुप्रास, श्लेष, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों का सुंदर प्रयोग है।
5. खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।
6. लक्षणा शब्द-शक्ति का प्रयोग है।
7. मिश्रित शब्दावली है।
8. मुक्त छंद का प्रयोग है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र-1 पतंग कविता में कवि ने वर्षा के बाद किस ऋतु का मनोहारी चित्रण किया है?

(क) वसंत ऋतु का
(ख) शीत ऋतु का
(ग) शरद ऋतु का
(घ) ग्रीष्म ऋतु का

प्र-2 पतंग के माध्यम से कवि ने क्या चित्रित क्या है?

(क) बाल-सुलभ उमंगों एवं चेष्टाओं का
(ख) वर्षा ऋतु की घनघोर बारिश का
(ग) धरती के जीव-जंतुओं का
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-3 पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास- पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) उपमा
(ख) मानवीकरण
(ग) अनुप्रास
(घ) रूपक

प्र-4 खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा- पंक्ति में कौन-सा बिम्ब है?

(क) श्रव्य बिम्ब
(ख) स्पर्श बिम्ब
(ग) दृश्य बिम्ब
(घ) उपर्युक्त सभी

प्र-5 बच्चों के शरीर का लचीलापन किसकी तरह है?

(क) इन्द्रधनुष की तरह

(ख) कपास की तरह

(ग) जलधारा की तरह

(घ) पेड़ की डाल की तरह

प्र-6 घंटी बजाते हुए जोर जोर से – इस पंक्ति में कौन-सा बिम्ब है?

(क) श्रव्य बिम्ब

(ख) दृश्य बिम्ब

(ग) स्पर्श बिम्ब

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-

1-(ग) शरद ऋतु का 2-(क) बाल-सुलभ उमंगों एवं चेष्टाओं का 3- (ख) रूपक 4-(ग) दृश्य बिम्ब 5-(घ) पेड़ की डाल की तरह 6- (क) श्रव्य बिम्ब

कविता के बहाने - कुँवर नारायण

कवि परिचय - कुँवर नारायण आधुनिक हिंदी कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनका जन्म 19 सितंबर, सन 1927 को फैजाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई थी। विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से पूरी की। कुँवर नारायण ने सन 1950 के आस-पास काव्य-लेखन की शुरुआत की। इन्होंने चिंतनपरक लेख, कहानियाँ सिनेमा और अन्य कलाओं पर समीक्षाएँ भी लिखी हैं। इन्हें अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया है; जैसे-कबीर सम्मान, व्यास सम्मान, लोहिया सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा केरल का कुमारन आशान पुरस्कार आदि।

रचनाएँ- कुँवर नारायण का 'तीसरे सप्तक' के कवियों में प्रमुख स्थान है। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

1. काव्य-संग्रह- चक्रव्यूह, परिवेश : हम तुम, अपने सामने, कोई दूसरा नहीं, इन दिनों।
2. प्रबंध-काव्य-आत्मजयी।
3. कहानी-संग्रह-आकारों के आस-पास।
4. समीक्षा-आज और आज से पहले।
5. सामान्य—मेरे साक्षात्कार।

काव्यगत विशेषताएँ- कुँवर नारायण ने कविता को अपने सृजन कर्म में हमेशा प्राथमिकता दी। आलोचकों का मानना है कि उनकी कविता में व्यर्थ का उलझाव, अखबारी सतहीपन और वैचारिक धुंध की बजाय संयम, परिष्कार और साफ-सुथरापन है। कुँवर नारायण नगरीय संवेदना के कवि हैं। इनके यहाँ विवरण बहुत कम हैं, परंतु वैयक्तिक तथा सामाजिक ऊहापोह का तनाव पूरी व्यंजकता में सामने आता है। भाषा और विषय की विविधता इनकी कविताओं के विशेष गुण माने जाते हैं। इनमें यथार्थ का खुरदरापन भी मिलता है और उसका सहज सौंदर्य भी। सीधी घोषणाएँ और फैसले इनकी कविताओं में नहीं मिलते क्योंकि जीवन को मुकम्मल तौर पर समझने वाला एक खुलापन इनके कवि-स्वभाव की मूल विशेषता है।

प्रतिपादय- 'कविता के बहाने' कविता कवि के कविता-संग्रह 'इन दिनों' से ली गई है। आज के समय में कविता के अस्तित्व के बारे में संशय हो रहा है। यह आशंका जताई जा रही है कि यांत्रिकता के दबाव से कविता का अस्तित्व नहीं रहेगा। ऐसे में यह कविता, कविता की अपार संभावनाओं को टटोलने का एक अवसर देती है।

सार- 'कविता के बहाने' कविता एक यात्रा है जो चिड़िया और फूल से लेकर बच्चे तक की है। एक ओर प्रकृति है दूसरी ओर भविष्य की ओर कदम बढ़ाता बच्चा। कवि कहता है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है, फूल के खिलने के साथ उसकी परिणति निश्चित है, लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं। बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं होता।

कविता भी शब्दों का खेल है और शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य-सभी उपकरण मात्र हैं। इसीलिए जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होगी, वहाँ सीमाओं के बंधन खुद-ब-खुद टूट जाते हैं। वह सीमा चाहे घर की हो, भाषा की हो या समय की ही क्यों न हो।

विशेष–

1. कविता की रचनात्मक व्यापकता को प्रकट किया गया है।
2. 'बच्चा ही जाने' पंक्ति से बालमन की सरलता की अभिव्यक्ति होती है।
3. चिड़िया क्या जाने?- में प्रश्न अलंकार है।
4. कविता का मानवीकरण किया गया है।
5. कविता में लाक्षणिकता तथा शांत रस विद्यमान है
6. मुक्त छंद से युक्त पंक्तियों में सरल एवं सहज खड़ीबोली भावानुकूल है।
7. मुरझाए महकने - में अनुप्रास अलंकार तथा 'फूल क्या जाने?" में प्रश्न अलंकार है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र-1 'कविता के बहाने' कविता में किसकी महत्ता को स्थापित किया गया है?

(क) यांत्रिक जीवन को

(ख) विलासितापूर्ण जीवन को

(ग) कविता (साहित्य) को

(घ) चिड़िया और फूल को

प्र-2 'चिड़िया की उड़ान' की क्या विशेषता होती है?

(क) कविता में कल्पनाओं उड़ान असीमित होती है

(ख) चिड़िया की उड़ान सीमित होती है

(ग) चिड़िया की उड़ान असीमित होती है

(घ) कविता में कल्पनाओं की उड़ान सीमित होती है

प्र-3 'बिना मुरझाए महकने के माने' पंक्ति से किसकी ओर संकेत है?

(क) फूल के मुरझाने की ओर

(ख) कविता के मुरझाने की ओर

(ग) कविता के शाश्वत होने की ओर

(घ) फूल के खिलने की क्षमता की ओर

प्र-4 कविता में किसके खेल की चर्चा की गई है?

(क) क्रिकेट के खेल की

(ख) गिल्ली-डंडे के खेल की

(ग) रंगों के खेल की

(घ) बच्चों के खेल की

प्र-5 कविता एक खेल है बच्चों के बहाने – इस पंक्ति का क्या आशय है?

(क) बच्चों के खेल की तरह ही कविता भी शब्दों का खेल है

(ख) बच्चे भेदभाव रहित होकर खेलते हैं, वही भाव कविता में भी है

(ग) बच्चों के खेल की तरह ही कविता सीमा से परे होती है

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर-

1-(ग) कविता (साहित्य) को 2- (ख) चिड़िया की उड़ान सीमित होती है 3- (ग) कविता के शाश्वत होने की ओर
4- (घ) बच्चों के खेल की 5- (घ) उपरोक्त सभी

बात सीधी थी पर- कुँवर नारायण

प्रतिपादय- यह कविता 'कोई दूसरा नहीं' कविता-संग्रह से संकलित है। इसमें कथ्य के द्वंद्व उकेरते हुए भाषा की सहजता की बात की गई है। हर बात के लिए कुछ खास शब्द नियत होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हर पेंच के लिए एक निश्चित खाँचा होता है। अब तक जिन शब्दों को हम एक-दूसरे के पर्याय के रूप में जानते रहे हैं, उन सबके भी अपने अर्थ होते हैं। अच्छी बात या अच्छी कविता का बनना सही बात का सही शब्द से जुड़ना होता है और जब ऐसा होता है तो किसी दबाव या अतिरिक्त मेहनत की जरूरत नहीं होती, वह सहूलियत के साथ हो जाता है। सही बात को सही शब्दों के माध्यम से कहने से ही रचना प्रभावशाली बनती है।

सार- इस कविता में किसी बात को कहने के लिए भाषा की सहजता व सरलता में जोर दिया गया हैं ताकि कविता या बात के भाव व उद्देश्य श्रोता व् पाठक तक आसानी से पहुँच सके।

इस कविता में कवि कहते हैं कि उनकी कविता के भाव बिलकुल सीधे थे जो श्रोताओं और पाठकों को सीधे समझ में आ जाने चाहिए थे। परन्तु भाषा को प्रभावी बनाने के चक्कर में कवि जो बात कविता के माध्यम से कहना चाहते थे, वो बात स्पष्ट नहीं हो पायी जिस कारण लोग कविता के भावों को अच्छी तरह से समझ नहीं पाये। अपनी बात को श्रोताओं और पाठकों तक आसानी से पहुँचाने के लिए उन्होंने भाषा के शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों आदि को बदल कर आसान किया और तथा शब्दों को उलट-पुलट कर प्रयोग किया। कवि ने पूरी कोशिश की कि या तो इस भाषा के बदलाव से उनके भाव लोगों तक पहुँच जाएँ या फिर वह भाषा के इस उलट-फेर के जंजाल से मुक्त हो जाएँ, परंतु कवि को इससे कोई भी सफलता नहीं मिली। बात को सही तरीके से कैसे कहा जाय या कैसे लिखा जाए, ताकि वह लोगों की समझ में आसानी से आ सके। इस समस्या को धैर्यपूर्वक समझे बिना कवि कविता के शब्दों को तोड़-मरोड़ कर भाषा को और अधिक जटिल बनाता चला गया। कविता में प्रभावशाली व जटिल शब्दों के प्रयोग से कविता पढ़ने व् सुनने वाले कवि की प्रशंसा करने लगे क्योंकि कविता देखने व सुनने में तो प्रभावशाली लग रही थी। परन्तु अंत में वही हुआ जिसका कवि को डर था। भाव स्पष्ट करने के लिए जब कवि ने जोर-जबरदस्ती भाषा में बदलाव किए तो कविता प्रभावहीन व उद्देश्यहीन हो गई और कविता केवल शब्दों के आसपास घूमती नज़र आने लगी। जब कवि हर तरह से बदलाव करने पर भी अपनी बात को स्पष्ट नहीं कर सका तो कवि ने अपनी कविता को उसी तरह छोड़ दिया जिस तरह पेंच को अंत में ठोक दिया जाता है। जिस स्थिति में कवि की कविता थी वह बाहर से देखने पर तो कविता जैसी लगती थी, परंतु उसमें भावों की गहराई नहीं थी, उसके शब्दों में ताकत नहीं थी। अच्छी बात को कहने के लिए और अच्छी कविता को बनाने के लिए सही भाषा व सही शब्दों का, सही बात अथवा भाव से जुड़ना आवश्यक है। तभी उसे समझने में आसानी होगी।

विशेष–

1. कवि ने भाषा की जटिलता पर कटाक्ष किया है।
2. भाषा सरल, सहज साहित्यिक खड़ी बोली है।
3. काव्यांश रचना मुक्त छंद में है।
4. 'टेढ़ी फँसना', 'पेचीदा होना' मुहावरों का सुंदर प्रयोग है।
5. 'साथ-साथ' 'वाह-वाह' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
6. 'पेंच कसने' के बिंब से कवि का कथ्य प्रभावी बना है।
7. 'बेतरह' विशेषण सटीक है।
8. 'करतब' शब्द में व्यंग्यात्मकता का भाव निहित है।
9. लोकप्रिय उर्दू शब्दों-बेतरह, करतब, तमाशबीन, साफ़ आदि का सुंदर प्रयोग है।

10. कवि ने कविताओं की आडंबरपूर्ण भाषा पर व्यंग्य किया है।
11. बात का मानवीकरण किया है।
12. 'कील की तरह', 'शरारती बच्चे की तरह' में उपमा अलंकार है।
13. 'जोर-जबरदस्ती', 'पसीना पोंछते' में अनुप्रास तथा 'बात की चूड़ी' में रूपक अलंकार है।
14. 'कील की तरह ठोंकना' भाषा को जबरदस्ती जटिल बनाने का परिचायक है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र-1 कवि पेंच को क्या कर रहा था ?

क) खोल रहा था
ख) कस रहा था
ग) बेकार घूमा रहा था
घ) खेल रहा था

प्र-2 कवि को किस बात का ड़र था ?

क) लोगों की शाबासी का
ख) लोगों के कठोर व्यवहार करने का
ग) बात की चूड़ी मर जाने का
घ) कविता समझ न आने का

प्र-3 बात किसकी तरह खेल रही थी?

क) शरारती बच्चे की तरह
ख) फूलों की तरह
ग) शब्दों की तरह
घ) आदमी की तरह

प्र-4 काव्यांश में कौन सी बोली का प्रयोग है?

क) ब्रज
ख) अवधी
ग) खड़ी बोली
घ) कठिन बोली

प्र-5 'बात की चूड़ी' में अलंकार है

क) उपमा
ख) रूपक
ग) अनुप्रास
घ) यमक

उत्तर-

1- ख) कस रहा था 2- ग) बात की चूड़ी मर जाने का 3- क) शरारती बच्चे की तरह
4- ग) खड़ी बोली 5- ख) रूपक

कविता- कैमरे में बंद अपाहिज - रघुवीर सहाय

कवि परिचय- रघुवीर सहाय समकालीन हिंदी कविता के संवेदनशील कवि हैं। इनका जन्म लखनऊ (उ०प्र०) में सन् 1929 में हुआ था। इनकी संपूर्ण शिक्षा लखनऊ में ही हुई। वहीं से इन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम०ए० किया। प्रारंभ में ये पेशे से पत्रकार थे। इन्होंने 'प्रतीक' अखबार में सहायक संपादक के रूप में काम किया। फिर ये आकाशवाणी के समाचार विभाग में रहे। कुछ समय तक हैदराबाद से निकलने वाली पत्रिका 'कल्पना' और उसके बाद 'दैनिक नवभारत टाइम्स' तथा

‘दिनमान’ से संबद्ध रहे। साहित्य-सेवा के कारण इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनका देहावसान सन 1990 में दिल्ली में हुआ।

रचनाएँ- रघुवीर सहाय नई कविता के कवि हैं। इनकी कुछ आरंभिक कविताएँ अज्ञेय द्वारा संपादित दूसरा सप्तक (1935) में प्रकाशित हुई। इनकी रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं-

काव्य-संकलन- सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो-हँसो जल्दी हँसी, लोग भूल गए हैं आदि।

काव्यगत विशेषताएँ- रघुवीर सहाय ने अपने काव्य में आम आदमी की पीड़ा को बड़ी गहराई से व्यक्त किया है। ये साठोत्तरी काव्य-लेखन के सशक्त, प्रगतिशील व चेतना-संपन्न रचनाकार हैं। इन्होंने सड़क, चौराहा, दफ़्तर, अखबार, संसद, बस, रेल और बाजार की बेलौस भाषा में कविता लिखी। घर-मोहल्ले के चरित्रों पर कविता लिखकर उन्हें हमारी चेतना का स्थायी नागरिक बनाया। इन्होंने कविता को एक कहानीपन और नाटकीय वैभव दिया। रघुवीर सहाय ने बतौर पत्रकार और कवि घटनाओं में निहित विडंबना और त्रासदी को देखा। इन्होंने छोटे की महत्ता को स्वीकारा और उन लोगों व उनके अनुभवों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया जिन्हें समाज में हाशिए पर रखा जाता है। इन्होंने भारतीय समाज में ताकतवरों की बढ़ती हैसियत व सत्ता के खिलाफ़ भी साहित्य और पत्रकारिता के पाठकों का ध्यान खींचा। रघुवीर सहाय ने अपने काव्य में अधिकतर बातचीत की सहज शैली में लिखा और सीधी, सरल तथा सधी भाषा का प्रयोग किया । ये अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से बचते रहे हैं। इन्होंने कविताओं में अत्यंत साधारण तथा अनायास-सी प्रतीत होने वाली शैली में समाज की दारुण विडंबनाओं को व्यक्त किया है।

प्रतिपादय- ‘कैमरे में बंद अपाहिज’ कविता ‘लोग भूल गए हैं’ काव्य-संग्रह से संकलित है। इस कविता में कवि ने शारीरिक चुनौती को झेल रहे व्यक्ति की पीड़ा के साथ-साथ दूर-संचार माध्यमों के चरित्र को भी रेखांकित किया है। किसी की पीड़ा को दर्शक वर्ग तक पहुँचाने वाले व्यक्ति को उस पीड़ा के प्रति स्वयं संवेदनशील होने और दूसरों को संवेदनशील बनाने का दावेदार होना चाहिए। किन्तु आज विडंबना यह है कि जब पीड़ा को परदे पर उभारने का प्रयास किया जाता है तो कारोबारी दबाव के तहत प्रस्तुतकर्ता का रवैया संवेदनहीन हो जाता है। यह कविता टेलीविजन स्टूडियो के भीतर की दुनिया को समाज के सामने प्रकट करती है। साथ ही उन सभी व्यक्तियों की तरफ इशारा करती है जो दुख-दर्द, यातना-वेदना आदि को बेचना चाहते हैं।

सार- इस कविता में दूरदर्शन (मीडिया) के लोग स्वयं को शक्तिशाली बताते हैं तथा दूसरे को कमजोर मानते हैं। वे शारीरिक चुनौती झेलने वाले से पूछते हैं कि क्या आप अपाहिज हैं? तो आप अपाहिज क्यों हैं? क्या आपको इससे दुख होता है? ऊपर से वह दुख भी जल्दी बताइए क्योंकि समय नहीं है। प्रश्नकर्ता इन सभी प्रश्नों के उत्तर अपने हिसाब से चाहता है। इतने प्रश्नों से विकलांग घबरा जाता है। प्रश्नकर्ता अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए उसे रुलाने की कोशिश करता है ताकि दर्शकों में करुणा का भाव जगा सके। इसी से उसका उद्देश्य पूरा होगा। वह इसे सामाजिक उद्देश्य कहता है, परंतु ‘परदे पर वक्त की कीमत है’ वाक्य से उसके व्यापार की पोल खुल जाती है।

विशेष -

1. कवि ने क्षीण होती मानवीय संवेदना का चित्रण किया है।
2. मीडिया की मानसिकता पर करारा व्यंग्य है।
3. दूरदर्शन के कार्यक्रम निर्माताओं पर करारा व्यंग्य है।
4. काव्यांश में नाटकीयता है।
5. सरल एवं भावानुकूल खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।
6. व्यंजना शब्द-शक्ति का प्रयोग किया गया है।
7. ‘परदे पर’ तथा ‘बहुत बड़ी’ में अनुप्रास अलंकार है।
8. कविता में मुक्तक छंद का प्रयोग है। कोष्ठकों का प्रयोग किया गया है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र-1 ‘हम समर्थ शक्तिमान’ पंक्ति में किसे सामर्थ्यवान बताया गया है?

(क) अपाहिज व्यक्ति को

(ख) कैमरामैन कोर

(ग) मीडियाकर्मियों को

(घ) कवि ने स्वयं को

प्र-2 'कमरे में बंद अपाहिज' कविता में मीडिया के किस माध्यम का उल्लेख है?

(क) रेडियो

(ख) समाचारपत्र

(ग) इंटरनेट

(घ) टेलीविजन

प्र-3 'कमरे में बंद अपाहिज' कविता में कार्यक्रम प्रस्तुतकर्त्ता किससे सवाल करता है?

(क) कैमरामैन से

(ख) शारीरिक चुनौती झेलने वाले अपाहिज से

(ग) दर्शकों से

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-4 'परदे पर वक्त कीमत है'- इसका सही आशय क्या होगा?

(क) टेलीविजन पर सबको मौका मिलता है

(ख) शारीरिक चुनौती झेलने वाले अपाहिज को अवसर दिया जाता है

(ग) टेलीविजन पर कोई भी दिखाया जा सकता है

(घ) टेलीविजन पर सिर्फ नामी-गिरामी लोगों को ही अवसर मिलता है

प्र-5 बस थोड़ी ही कसर रह गयी – इस पंक्ति का क्या मतलब है?

(क) कार्यक्रम समाप्त हो गया

(ख) कार्यक्रम फिर से दिखाया जाएगा

(ग) कार्यक्रम अधूरा रह गया

(घ) कार्यक्रम अभी शुरू नहीं हुआ

प्र-6 'कमरे में बंद अपाहिज' कविता किस शैली में रचित है?

(क) व्यंग्य प्रधान नाटकीय तत्वों से युक्त मुक्तक काव्य-शैली

(ख) तुक प्रधान कथात्मक काव्य-शैली

(ग) छंद बद्ध लयात्मक काव्य-शैली

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-

1-(ग) मीडियाकर्मियों को 2-(घ) टेलीविजन 3- (ख) शारीरिक चुनौती झेलने वाले अपाहिज से 4- (घ) टेलीविजन पर सिर्फ नामी-गिरामी लोगों को ही अवसर मिलता है 5 -(ग) कार्यक्रम अधूरा रह गया 6- (घ) व्यंग्य प्रधान नाटकीय तत्वों से युक्त मुक्तक काव्य-शैली

उषा - शमशेर बहादुर सिंह

जीवन परिचय- नई कविता के कवियों में शमशेर बहादुर सिंह की एक अलग छवि है। इनका जन्म 13 जनवरी, सन 1911 को देहरादून में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा देहरादून में ही हुई। इन्होंने उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की। चित्रकला में इनकी रुचि प्रारंभ से ही थी। इन्होंने प्रसिद्ध चित्रकार उकील बंधुओं से चित्रकारी में प्रशिक्षण लिया। इन्होंने सुमित्रानंदन पंत के पत्र 'रूपाभ' में कार्य किया। 1977 ई. में 'चुका भी हूँ नहीं मैं' काव्य-संग्रह पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया। इन्हें कबीर सम्मान सहित अनेक पुरस्कार मिले। सन 1993 में अहमदाबाद में इनका देहांत हो गया।

रचनाएँ- शमशेर बहादुर सिंह ने अनेक विधाओं में रचना की। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कवितासंग्रह— कुछ कविताएँ, कुछ और कविताएँ, चुका भी हूँ नहीं मैं, इतने पास अपने

संपादन-उर्दू-हिंदी कोश

निबंध-संग्रह-दोआब

कहानी-संग्रह-प्लाट का मोर्चा

काव्यगत विशेषताएँ- वैचारिक रूप से प्रगतिशील एवं शिल्पगत रूप से प्रयोगधर्मी कवि शमशेर को एक बिंबधर्मी कवि के रूप में जाना जाता है। इनकी बिंबधर्मिता शब्दों में माध्यम से रंग, रेखा, एवं सूची की अद्‌भुत कशीदाकारी का माद्दा रखती है। इन्होंने अपनी कविताओं में समाज की यथार्थ स्थिति का भी चित्रण किया है। ये समाज में व्याप्त गरीबी का चित्रण करते हैं। कवि ने प्रकृति के सौंदर्य का सुंदर वर्णन किया है। प्रकृति के नजदीक रहने के कारण इनके प्राकृतिक चित्र अत्यंत जीवंत लगते हैं। 'उषा' कविता में प्रात:कालीन वातावरण का सजीव चित्रण है। शमशेर की कविता एक संधिस्थल पर खड़ी है। यह संधि एक ओर साहित्य, चित्रकला और संगीत की है तो दूसरी ओर मूर्तता और अमूर्तता की तथा ऐंद्रिय और ऐंद्रियेतर की है।

भाषा-शैली- शमशेर बहादुर सिंह ने साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया है। कथा और शिल्प-दोनों ही स्तरों पर इनकी कविता का मिजाज अलग है। उर्दू शायरी के प्रभाव से संज्ञा और विशेषण से अधिक बल सर्वनामों, क्रियाओं, अव्ययों और मुहावरों को दिया है। सचेत इंद्रियों का यह कवि जब प्रेम, पीड़ा, संघर्ष और सृजन को गूँथकर कविता का महल बनाता है तो वह ठोस तो होता ही है, अनुगूंजों से भी भरा होता है।

प्रतिपाद्य- प्रस्तुत कविता 'उषा' में कवि शमशेर बहादुर सिंह ने सूर्योदय से ठीक पहले के पल-पल परिवर्तित होने वाली प्रकृति का शब्द-चित्र उकेरा है। कवि ने प्रकृति की गति को शब्दों में बाँधने का अद्‌भुत प्रयास किया है। कवि भोर की आसमानी गति की धरती के हलचल भरे जीवन से तुलना कर रहा है। इसलिए वह सूर्योदय के साथ एक जीवंत परिवेश की कल्पना करता है जो गाँव की सुबह से जुड़ता है-वहाँ सिल है, राख से लीपा हुआ चौका है और स्लेट की कालिमा पर चाक से रंग मलते अदृश्य बच्चों के नन्हे हाथ हैं। कवि ने नए बिंब, नए उपमान, नए प्रतीकों का प्रयोग किया है।

सारांश- कवि कहता है कि सूर्योदय से पहले आकाश का रंग गहरे नीले रंग का होता है तथा वह सफेद शंखकी नीली आभा से युक्त दिखाई देता है। आकाश का रंग ऐसा लगता है मानो किसी गृहिणी ने राख से चौका लीप दिया हो। सूर्य के ऊपर उठने पर लाली फैलती है तो ऐसा लगता है जैसे काली सिल पर किसी ने केसर मल कर उसे धो दिया हो या किसी ने स्लेट पर लाल खड़िया चाक से लिखकर उसे मिटा दिया हो। नीले आकाश में सूर्य ऐसा लगता है मानो नीले जल में स्नान करती हुई किसी गोरी युवती का शरीर झिलमिला रहा है। सूर्योदय होते ही उषा का यह जादुई प्रभाव समाप्त हो जाता है।

विशेष-

1-कवि ने इस कविता में प्रकृति का मनोहारी चित्रण किया है।

2-ग्रामीण परिवेश की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत की गई है जिसमें दृश्य सजीव हो उठा है।

3-कवि ने उषा का सुंदर दृश्य बिंब प्रस्तुत किया है।

4-प्रकृति के उपादानों का मनोरम चित्रण हुआ है।

5-सरल, सहज खड़ी बोली में सुंदर अभिव्यक्ति हुई है।

6-नए उपमानों का प्रयोग किया गया है।

7-'शंख जैसे' में उपमा अलंकार है।

8-पूरे काव्यांश में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

9-मुक्तक छंद का प्रयोग है।

10-नए बिंबों व उपमानों का प्रयोग है।

11-कविता में माधुर्य गुण विद्यमान है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र-1 कवि ने भोर के नभ के सौन्दर्य की तुलना के लिए किन किन उपमानों को चुना है?

(क) नीली आभा से युक्त शंख

(ख) राख से लीपा चौका

(ग) काली सिल पर केसर का मलना
(घ) उपर्युक्त सभी

प्र-2 राख से लीपा हुआ चौका अभी गीला पड़ा है- से भोर के नभ की किस विशेषता का पता चलता है?

(क) नमी और सौंधापन
(ख) गरम और भुरभुरापन
(ग) ठंडा और फीकापन
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-3 गौर झिलमिल देह प्रकृति के किस उपादान की है?

(क) धरती
(ख) चन्द्रमा
(ग) सूर्य
(घ) जंगल

प्र-4 उषा कविता में किस जीवन शैली को चित्रित किया गया है?

(क) शहरी जीवन शैली
(ख) ग्रामीण जीवन शैली
(ग) कस्बाई जीवन शैली
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-5 भोर के नभ का सौन्दर्य कब विनष्ट हो जाता है?

(क) सूर्योदय से पहले
(ख) सूर्योदय के दौरान
(ग) सूर्योदय के बाद
(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-

1-(घ) उपर्युक्त सभी 2-(क) नमी और सौंधापन 3-(ग) सूर्य 4-(ख) ग्रामीण जीवन शैली 5- सूर्योदय के बाद

बादल राग- कवि – सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला

प्रतिपाद्य- 'बादल राग' कविता सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य संग्रह 'अनामिका' में दी गई है । यह उनकी एक ओजपूर्ण कविता है । इस कविता में कवि बादल को क्रांति एवं विप्लव का प्रतीक मानकर उसका आह्वान करता है। किसान एवं जन सामान्य की आकांक्षाएँ- आशाएँ बादल को नव निर्माण के राग के रूप में पुकारती है । निराला बादल को क्रांति दूत मानते है । बादल शोषितों का जीवनदाता है, और शोषकों अर्थात् पूंजीपतियों को भयभीत कर देते हैं। बादल की भयंकर गर्जना से धरती में सोए अंकुर भी सतर्क हो जाते हैं और नए जीवन की ऊष्मा में नए अंकुर सिर उठाकर बादल को ताकते रहते हैं जैसे कि क्रांति की आशा बंध जाती है । बादल की वज्र के समान भयंकर गर्जना से संसार डरकर अपना दिल थाम लेता है । बिजली गिरने से ऊंचे-बड़े पर्वत भी खंड-खंड हो जाते हैं। वीर रण क्षेत्र में वज्र के प्रहार से मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, वैसे ही क्रांति के बिगुल से बड़े लोगों या पूंजीपतियों का विनाश होता है क्योंकि वे खिन्न एवं दलित, गरीब लोगों का शोषण करते हैं जबकि छोटे शक्तिहीन कमल के समान बच्चे गरीबों और किसानों में क्रांति से नवजीवन का संचार होता है। कवि बादलों को देखकर कल्पना करता है कि बादल हवारूपी समुद्र में तैरते हुए क्षणिक सुखों पर दुख की छाया हैं जो संसार या धरती की जलती हुई छाती पर मानी छाया करके उसे शांति प्रदान करने के लिए आए हैं। बाढ़ की विनाश-लीला रूपी युद्ध-भूमि में वे नौका के समान लगते हैं। बादल की गर्जना को सुनकर धरती के अंदर सोए हुए बीज या अंकुर नए जीवन की आशा से अपना सिर ऊँचा उठाकर देखने लगते हैं। उनमें भी धरती से बाहर आने की आशा जागती है। बादलों की भयंकर गर्जना से संसार हृदय थाम लेता है। आकाश में तैरते बादल ऐसे लगते हैं मानो वज्रपात से सैकड़ों वीर धराशायी हो गए हों और उनके शरीर क्षत-विक्षत है। कवि कहता है कि छोटे व हलके पौधे हिल-डुल कर हाथ हिलाते हुए बादलों को बुलाते

प्रतीत होते हैं। कवि बादलों को क्रांति-दूत की संज्ञा देता है। बादलों का गर्जन किसानों व मजदूरों को नवनिर्माण की प्रेरणा देता है। क्रांति से सदा आम आदमी को ही फ़ायदा होता है। बादल आतंक के भवन जैसे हैं जो कीचड़ पर कहर बरसाते हैं। बुराई रूपी कीचड़ के सफ़ाए के लिए बादल प्रलयकारी होते हैं। छोटे- से तालाब में उगने वाले कमल सदैव उसके पानी को स्वच्छ व निर्मल बनाते हैं। आम व्यक्ति हर स्थिति में प्रसन्न व सुखी रहते हैं। अमीर अत्यधिक संपत्ति इकट्ठी करके भी असंतुष्ट रहते हैं और अपनी प्रियतमाओं से लिपटने के बावजूद क्रांति की आशंका से काँपते हैं। कवि कहता है कि कमजोर शरीर वाले कृषक बादलों को अधीर होकर बुलाते हैं क्योंकि पूँजीपति वर्ग ने उनका अत्यधिक शोषण किया है। वे सिर्फ़ जिंदा हैं। बादल ही क्रांति करके शोषण को समाप्त कर सकता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1) कवि ने बादल को क्या कहा ?

क) सामजिक क्रांति का प्रतीक
ख) आर्थिक क्रांति का प्रतीक
ग) राजनीतिक क्रांति का प्रतीक
घ) नैतिक क्रांति का प्रतीक

2) मनुष्य के जीवन में किस छाया का आवागमन लगा रहता है ?

क) सुख समृद्धि की छाया
ख) सुख और दुख की छाया
ग) दुख दर्द की छाया
घ) गरीबी एवं दरिद्रता की छाया

3) कवि ने बादल को क्रांति का प्रतीक क्यों कहा है ?

क) बादल वर्षा करते हैं
ख) बादलों के कारण गर्मी नहीं सताती
ग)बादल आपस में टकराते रहते हैं
घ)बादल के भीतर सृजन और ध्वंस की ताकत है

4) क्रांति से या विनाश से कौन सबसे अधिक प्रभावित होते हैं ?

क) गरीब वर्ग
ख)पूंजीपति वर्ग
ग) माध्यम वर्ग
घ) दलित वर्ग

5) कविता में रण-तरी किस से भरी होने की बात कही है ?

क) आकांक्षाओं से
ख) गर्जना से
ग) धन-दौलत से
घ) अस्त्र-शस्त्र से

6) क्रांति के विप्लवकारी बादलों को देखकर कौन प्रसन्न होता है ?

क)बड़े पेड़
ख) पर्वत
ग) छोटे पौधे
घ) झाड़ियाँ

7) समाज का साधन हीन वर्ग कब प्रसन्न होता है ?

क) जब समाज में क्रांति के स्वर का उद्घोष होता है
ख) जब साधनहीन वर्ग को मकान मिलते हैं
ग) जब साधनहीन वर्ग को भरपेट भोजन मिलता है

घ) जब साधनहीन वर्ग को विलासिता पूर्ण जीवन मिलता है

8) पूंजीपति किस का शोषण कर रहे हैं ?

क) अमीर लोगों का

ख) मध्यमवर्गीय लोगों का

ग) जनसामान्य का, किसान का

घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

9) 'विप्लव-रव से छोटे ही है शोभा पाते' यहाँ "छोटे' शब्द प्रयुक्त हुआ है –

क) शोषित वर्ग के लिए

ख) शोषक वर्ग के लिए

ग) मध्यम वर्ग के लिए

घ) उच्च वर्ग के लिए

10) 'जल-विप्लव-प्लावन' किस पर होता है ?

क) जलज पर

ख) नौका पर

ग) कीचड़ पर

घ) नभ पर

11) धनिक वर्ग ने किसान की क्या हालत कर दी है ?

क) किसान का शोषण करके शरीर की सारी शक्ति छीन ली है।

ख) उसका शरीर टूट गया है

ग) वह हड्डियों का ढांचा बनकर रह गया है

घ) उपर्युक्त सभी

12) धनी वर्ग के लोग क्यों काँप रहे हैं?

क) सत्ता के डर से

ख) शोषण के डर से

ग) घनघोर बारिश के डर से

घ) क्रांति एवं विद्रोह के डर से

उत्तर- 1-क) सामजिक क्रांति का प्रतीक 2-ख) सुख और दुख की छाया 3-घ)बादल के भीतर सृजन और ध्वंस की ताकत है 4-ख)पूंजीपति वर्ग 5- क) आकांक्षाओं से 6-ग) छोटे पौधे 7-क) जब समाज में क्रांति के स्वर का उद्घोष होता है 8 ग)- जनसामान्य का, 9-क) शोषित वर्ग के लिए 10-ग) कीचड़ पर 11-घ) उपर्युक्त सभी 12- घ) क्रांति एवं विद्रोह के डर से

कवितावली (उत्तर कांड से), लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप (लंका कांड) - तुलसीदास

जीवन परिचय- गोस्वामी तुलसीदास का जन्म बाँदा जिले के राजापुर गाँव में सन 1532 में हुआ था। कुछ लोग इनका जन्म-स्थान सोरों मानते हैं। इनका बचपन कष्ट में बीता। बचपन में ही इन्हें माता-पिता का वियोग सहना पड़ा। गुरु नरहरिदास की कृपा से इनको रामभक्ति का मार्ग मिला। इनका विवाह रत्नावली नामक युवती से हुआ। कहते हैं कि रत्नावली की फटकार से ही वे वैरागी बनकर रामभक्ति में लीन हो गए थे। विरक्त होकर ये काशी, चित्रकूट, अयोध्या आदि तीर्थों पर भ्रमण करते रहे। इनका निधन काशी में सन 1623 में हुआ।

रचनाएँ- गोस्वामी तुलसीदास की रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

रामचरितमानस, कवितावली, रामलला नहछु, गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका, रामाज्ञा-प्रश्न, कृष्ण गीतावली,

पार्वती–मंगल, जानकी-मंगल, हनुमान बाहुक, वैराग्य संदीपनी। इनमें से 'रामचरितमानस' एक महाकाव्य है।

'कवितावली' में रामकथा कवित्त व सवैया छंदों में रचित है। 'विनयपत्रिका' में स्तुति के गेय पद हैं।

काव्यगत विशेषताएँ- गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति शाखा के सर्वोपरि कवि हैं। ये लोकमंगल की साधना के कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। यह तथ्य न सिर्फ़ उनकी काव्य-संवेदना की दृष्टि से, वरन काव्यभाषा के घटकों की दृष्टि से भी सत्य है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि शास्त्रीय भाषा (संस्कृत) में सर्जन-क्षमता होने के बावजूद इन्होंने लोकभाषा (अवधी व ब्रजभाषा) को साहित्य की रचना का माध्यम बनाया। तुलसीदास में जीवन व जगत की व्यापक अनुभूति और मार्मिक प्रसंगों की अचूक समझ है। यह विशेषता उन्हें महाकवि बनाती है। 'रामचरितमानस' में प्रकृति व जीवन के विविध भावपूर्ण चित्र हैं जिसके कारण यह हिंदी का अनुपम महाकाव्य बनकर उभरा है। इसकी लोकप्रियता का कारण लोक-संवेदना और समाज की नैतिक बनावट की समझ है। इनके सीता-राम ईश्वर की अपेक्षा तुलसी के देशकाल के आदर्शों के अनुरूप मानवीय धरातल पर पुनः सृष्ट चरित्र हैं।

भाषा-शैली- गोस्वामी तुलसीदास अपने समय में हिंदी-क्षेत्र में प्रचलित सारे भावात्मक तथा काव्यभाषायी तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनमें भाव-विचार, काव्यरूप, छंद तथा काव्यभाषा की बहुल समृद्ध मिलती है। ये अवधी तथा ब्रजभाषा की संस्कृति कथाओं में सीताराम और राधाकृष्ण की कथाओं को साधिकार अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हैं। उपमा अलंकार के क्षेत्र में जो प्रयोग-वैशिष्ट्य कालिदास की पहचान है, वही पहचान सांगरूपक के क्षेत्र में तुलसीदास की है।

सारांश-1 पहले कवित्त में कवि ने पेट की आग को सबसे बड़ा बताया है। मनुष्य सारे काम इसी आग को बुझाने के उद्देश्य से करते हैं चाहे वह व्यापार, खेती, नौकरी, नाच-गाना, चोरी, गुप्तचरी, सेवा-टहल, गुणगान, शिकार करना या जंगलों में घूमना हो। इस पेट की आग को बुझाने के लिए लोग अपनी संतानों तक को बेचने के लिए विवश हो जाते हैं। यह पेट की आग समुद्र की बड़वानल से भी बड़ी है। अब केवल रामरूपी घनश्याम ही इस आग को बुझा सकते हैं।

दूसरे कवित्त में कवि अकाल की स्थिति का चित्रण करता है। इस समय किसान खेती नहीं कर सकता, भिखारी को भीख नहीं मिलती, व्यापारी व्यापार नहीं कर पाता तथा नौकरी की चाह रखने वालों को नौकरी नहीं मिलती। लोगों के पास आजीविका का कोई साधन नहीं है। वे विवश हैं। वेद-पुराणों में कही और दुनिया की देखी बातों से अब यही प्रतीत होता है कि अब तो भगवान राम की कृपा से ही कुशल होगी। वह राम से प्रार्थना करते हैं कि अब आप ही इस दरिद्रता रूपी रावण का विनाश कर सकते हैं।

सवैये में कवि ने भक्त की गहनता और सघनता में उपजे भक्त-हृदय के आत्मविश्वास का सजीव चित्रण किया है। वे कहते हैं कि चाहे कोई मुझे धूर्त कहे, अवधूत या जोगी कहे, कोई राजपूत या जुलाहा कहे, किंतु मैं किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करने वाला और न किसी की जाति बिगाड़ने वाला हूँ। मैं तो केवल अपने प्रभु राम का गुलाम हूँ। जिसे जो अच्छा लगे, वही कहे। मैं माँगकर खा सकता हूँ तथा मस्जिद में सो सकता हूँ किंतु मुझे किसी से कुछ लेना-देना नहीं है। मैं तो सब प्रकार से भगवान राम को समर्पित हूँ।

सारांश-2 युद्ध में लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम की सेना में हाहाकार मच गया। सब वानर सेनापति इकट्ठे हुए तथा लक्ष्मण को बचाने के उपाय सोचने लगे। सुषेण वैद्य के परामर्श पर हनुमान हिमालय से संजीवनी बूटी लाने के लिए चल पड़े। लक्ष्मण को गोद में लिटाकर राम व्याकुलता से हनुमान की प्रतीक्षा करने लगे। आधी रात बीत जाने के बाद राम अत्यधिक व्याकुल हो गए। वे विलाप करने लगे कि तुम मुझे कभी भी दुखी नहीं देख पाते थे। मेरे लिए ही तुमने वनवास स्वीकार किया। अब वह प्रेम मुझसे कौन करेगा? यदि मुझे तुम्हारे वियोग का पता होता तो मैं तुम्हें कभी साथ नहीं लाता। संसार में सब कुछ दुबारा मिल सकता है, परंतु सहोदर भाई नहीं। तुम्हारे बिना मेरा जीवन पंखरहित पक्षी के समान है। अयोध्या जाकर मैं क्या जवाब दूँगा? लोग कहेंगे कि पत्नी के लिए भाई को गँवा आया। तुम्हारी माँ को मैं क्या जवाब दूँगा? तभी हनुमान संजीवनी बूटी लेकर आए। वैद्य ने दवा बनाकर लक्ष्मण को पिलाई और उनकी मूर्च्छा ठीक हो गई। राम ने उन्हें गले से लगा लिया। वानर सेना में उत्साह आ गया। रावण को यह समाचार मिला तो उसने परेशान होकर कुंभकरण को उठाया। कुंभकरण ने जगाने का कारण पूछा तो रावण ने सीता के हरण से युद्ध तक की सारी बात बताई तथा बड़े-बड़े वीरों के मारे जाने की बात कही। कुंभकरण ने रावण को बुरा-भला कहा और कहा कि तुमने साक्षात

ईश्वर से वैर लिया है और अब अपना कल्याण चाहते हो! राम साक्षात् हरि तथा सीता जी जगदंबा हैं। उनसे वैर लेना कभी कल्याणकारी नहीं हो सकता।

विशेष-1 कवि ने समाज में भूख की स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है। पेट की आग बुझाने के लिए मनुष्य द्वारा किए जाने वाले कार्यों का प्रभावपूर्ण वर्णन है। तत्कालीन समाज की बेरोजगारी व अकाल की भयावह स्थिति का चित्रण है। तत्सम शब्दावली की प्रधानता है। ब्रजभाषा का लालित्य विद्यमान है। राम घनश्याम' में रूपक अलंकार है। 'किसबी किसान-कुल', 'चाकर चपल', 'बेचत बेटा-बेटकी' आदि में अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है। अभिधा शब्द-शक्ति है। भगवान श्रीराम के प्रति तुलसीदास की भक्ति भावना प्रकट हुई है। वह समाज की मनोवृत्ति से बहुत दुखी है। समाज में समन्वय स्थापित करने का प्रयास दिखाई पड़ता है। कवि का दास्यभक्ति भाव चित्रित है। ब्रजभाषा का सुंदर प्रयोग है। सवैया छंद में सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' मुहावरे का सशक्त प्रयोग है। अनुप्रास अलंकार की छटा विद्यमान है।

विशेष-2 श्रीराम के मानवीय रूप एवं उनके विलाप का मार्मिक वर्णन है। प्रस्तुत प्रसंग में राम का भ्रातृ-प्रेम प्रशंसनीय है। करुण रस की प्रधानता है। सरल और सहज अवधी भाषा का प्रयोग है। दोहा, चौपाई और सोरठा छंद का सुंदर प्रयोग है। अनुप्रास, उत्प्रेक्षा तथा पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। 'सिर धुनना' व 'मुख सूखना' मुहावरे का सुंदर प्रयोग है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र-1 संसार के सभी लोग तरह-तरह के काम किसलिए करते हैं?

(क) मनोरंजन करने के लिए
(ख) पेट की भूख शांत करने के लिए
(ग) शांतिपूर्ण जीवन बिताने के लिए
(घ) दूसरों से आगे बढ़ने के लिए

प्र-2 कवि के अनुसार पेट की भूख का शमन किसकी कृपा से हो सकता है?

(क) प्रभु श्री विष्णु की कृपा से
(ख) भगवान श्री कृष्ण की कृपा से
(ग) प्रभु श्रीराम की कृपा से
(घ) श्री ब्रह्मा जी की कृपा से

प्र-3 जीविकोपार्जन से विहीन लोग किस चिंता में डूबे हैं?

(क) कोई दूसरा व्यवसाय नहीं है
(ख) नगर छोड़कर कहाँ जाएँ
(ग) राजा ने कोई प्रबंध नहीं किया है
(घ) उपर्युक्त सभी

प्र-4 कवि के अनुसार संकट की घड़ी में कौन सभी पर कृपा करके दुःख दूर करते हैं?

(क) भगवान श्रीकृष्ण
(ख) प्रभु श्रीराम
(ग) श्री हरि विष्णु
(घ) भगवान शिव

प्र-5 भक्त कवि तुलसीदास का स्वाभिमान क्या है?

(क) ऊँचे कुल का होना
(ख) उच्च कुल में बेटे की शादी करना
(ग) प्रभु श्रीराम का परम भक्त होना
(घ) भिक्षा माँगकर भोजन करना

प्र-6 प्रभु श्रीराम की आज्ञा पाकर हनुमान जी क्या लेने के चल पड़ते हैं?

(क) संजीवनी बूटी
(ख) हिमालय पर्वत

(ग) गंगाजल

(घ) कठोर शिला

प्र-7 'लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप' में किस रस की प्रमुखता है?

(क) वीर रस

(ख) शांत रस

(ग) हास्य रस

(घ) करुण रस

प्र-8 मूर्च्छित पड़े लक्ष्मण के बिना श्रीराम का जीवन किस तरह है?

(क) मणिहीन सर्प के समान

(ख) सूंड़विहीन हाथी के समान

(ग) पख रहित पक्षी के समान

(घ) उपर्युक्त सभी

प्र-9 'मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता' यह कथन किसका है?

(क) लक्ष्मण का

(ख) श्रीराम का

(ग) रावण का

(घ) विभीषण का

प्र-10 जागने के बाद कुंभकरण कैसा दिखाई दे रहा था?

(क) साक्षात् मौत की तरह

(ख) राक्षस की तरह

(ग) मनुष्य की तरह

(घ) वानर की तरह

उत्तर-

1-(ख) पेट की भूख शांत करने के लिए 2- (ग) प्रभु श्रीराम की कृपा से 3-(घ) उपर्युक्त सभी 4-(ख) प्रभु श्रीराम 5-(ग) प्रभु श्रीराम का परम भक्त होना 6-(क) संजीवनी बूटी 7-(घ) करुण रस 8-(घ) उपर्युक्त सभी 9-(ख) श्रीराम का 10-(घ) साक्षात् मौत की तरह

रुबाइयाँ- फ़िराक गोरखपुरी

जीवन परिचय-फ़िराक गोरखपुरी उर्दू-फ़ारसी के जाने-माने शायर थे। इनका जन्म 28 अगस्त, सन 1896 को गोरखपुर में हुआ था। इनका मूल नाम रघुपति सहाय 'फ़िराक' था। इन्होंने रामकृष्ण की कहानियों से अपनी शिक्षा की शुरुआत की। बाद में अरबी, फ़ारसी और अंग्रेजी में शिक्षा ग्रहण की। 1917 ई० में ये डिप्टी कलेक्टर के पद पर चयनित हुए, परंतु स्वतंत्रता आंदोलन के कारण इन्होंने 1918 ई० में इस पद को त्याग दिया। आंदोलन में हिस्सा लेने के कारण सन 1920 में इन्हें डेढ़ वर्ष की जेल हुई। ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विषय के अध्यापक भी रहे। इन्हें 'गुले-नग्मा' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार और सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड मिला। सन 1938 में इनका देहावसान हो गया। रचनाएँ-गोरखपुरी जी ने शायरी के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किए।

महत्वपूर्ण कृतियाँ -गुले-नग्मा, बज्में जिंदगी, रंगे-शायरी, उर्दू गजलगोई।

काव्यगत विशेषताएँ-उर्दू शायरी साहित्य का बड़ा हिस्सा रुमानियत, रहस्य और शास्त्रीयता से बँधा रहा है जिसमें लोकजीवन और प्रकृति के पक्ष बहुत कम उभरकर सामने आए हैं। नजीर अकबराबादी, इल्ताफ हुसैन हाली जैसे कुछ शायरों ने इस परंपरा को तोड़ा है, फिराक गोरखपुरी भी उनमें से एक हैं। फ़िराक ने परंपरागत भावबोध और शब्द-भंडार का उपयोग करते हुए उसे नयी भाषा और नए विषयों से जोड़ा। उनके यहाँ सामाजिक दुख-दर्द व्यक्तिगत अनुभूति बनकर शायरी

में ढला है। इंसान के हाथों इंसान पर जो गुजरती है, उसकी तल्ख सच्चाई और आने वाले कल के प्रति एक उम्मीद, दोनों को भारतीय संस्कृति और लोकभाषा के प्रतीकों से जोड़कर उन्होंने अपनी शायरी का अनूठा महल खडा किया।

भाषा-शैली-उर्दू शायरी अपने लाक्षणिक प्रयोगों और चुस्त मुहावरेदारी के लिए प्रसिद्ध है। शेर लिखे नहीं, कहे जाते हैं। यह एक तरह का संवाद होता है। मीर, गालिब की तरह फिराक ने भी इस शैली को साधकर आम-आदमी या साधारण-जन से अपनी बात कही है।

प्रतिपाद्य -फ़िराक की रुबाइयाँ उनकी रचना 'गुले-नग्मा' से उद्धृत हैं। रुबाई उर्दू और फ़ारसी का एक छंद या लेखन शैली है। इसकी पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है और तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है। इन रुबाइयों में हिंदी का एक घरेलू रूप दिखता है। इन्हें पढ़ने से सूरदास के वात्सल्य वर्णन की याद आती है। सार-इस रचना में कवि ने वात्सल्य वर्णन किया है। माँ अपने बच्चे को आँगन में खड़ी होकर अपने हाथों में प्यार से झुला रही है। वह उसे बार-बार हवा में उछाल देती है जिसके कारण बच्चा खिलखिलाकर हँस उठता है। वह उसे साफ़ पानी से नहलाती है तथा उसके उलझे हुए बालों में कंघी करती है।

बच्चा भी उसे प्यार से देखता है जब वह उसे कपड़े पहनाती है। दीवाली के अवसर पर शाम होते ही पुते व सजे हुए घर सुंदर लगते हैं। चीनी-मिट्टी के खिलौने बच्चों को खुश कर देते हैं। वह बच्चों के छोटे घर में दीपक जलाती है जिससे बच्चों के सुंदर चेहरों पर दमक आ जाती है। आसमान में चाँद देखकर बच्चा उसे लेने की जिद पकड़ लेता है। माँ उसे दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाती है और उसे कहती है कि दर्पण में चाँद उतर आया है। रक्षाबंधन एक मीठा बंधन है। रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं। सावन में रक्षाबंधन आता है। सावन का जो संबंध झीनी घटा से है, घटा का जो संबंध बिजली से है वहीं संबंध भाई का बहन से है।

विशेष–

1. माँ द्वारा बच्चे को झुलाना, बच्चे का हँसना आदि स्वाभाविक क्रियाएँ हैं। स्वभावोक्ति अलंकार है।
2. वात्सल्य रस है।
3. दृश्य बिंब है-
   'आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी', 'गोद-भरी', 'हाथों पे झुलाती', 'हवा में जो लोका देती है'।
4. अंतिम पंक्ति में श्रव्य बिंब है।
5. 'चाँद के टुकड़े' मुहावरे का सुंदर प्रयोग है।
6. 'रह-रह' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
7. 'लोका देना' देशज भाषा का प्रयोग है।
8. उर्दू-हिंदी मिश्रित शब्दावली है।
9. बच्चे की जिद तथा माँ द्वारा उसके समाधान का स्वाभाविक वर्णन हुआ है। अत: स्वभावोक्ति अलंकार है।
10. 'जिदयाया' और 'हई' शब्द का प्रयोग विशेष है। इससे कोमलता में वृद्धि हुई है।
11. 'आईने में चाँद उतर आया'-सुंदर कल्पना है।
12. 'ठुनक' शब्द में बच्चे के बाल-मनोविज्ञान का सहज वर्णन है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. रुबाइयाँ के कवि कौन हैं?

(क) अली गोरखपुरी

(ख) मज़रूह सुल्तानपुरी

(ग) फ़िराक गोरखपुरी

(घ) अमज़द अली

2.– प्रयोग हुआ है रुबाइयां में किस रस का.

(क) ग्रामीण रस

(ख) भक्ति रस

(ग) वात्सल्य रस

(घ) वीर रस

3. माँ अपने बच्चे को लेकर कहाँ खड़ी है?

(क) घर की छत पर

(ख) घर के मंदिर में

(ग) घर के द्वार पर

(घ) घर के आँगन में

4. माँ बार-बार हवा में क्या उछल देती है?

(क) अपना नन्हा बच्चा

(ख) बॉल

(ग) कपड़ा

(घ) पत्थर

5. हवा में बच्चे की क्या गूंज रही है –

(क) हँसीं खिलखिलाहट

(ख) उसका रोना

(ग) उसकी बातें

(घ) उसका गाना

6 बच्चा क्यों ठुनक रहा है?

(क) वह खुश है

(ख) वह दुखी है

(ग) वह जिदयाया है

(घ) वह रो रहा है

7. 'घिरौंदें' किसे कहते है?

(क) सीमेंट का घर

(ख) शीशे का घर

(ग) मिट्टी के घर

(घ) प्लास्टिक के घर

8. कथन- बहन, भाई को राखी बांधती है
कारण- यह पुरानी परम्परा है

(क) कथन और कारण दोनों सही है।

(ख) कथन सही है, परन्तु कारण उसका सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(ग) कथन गलत है परन्तु कारण सही है।

(घ) कथन और कारण दोनों गलत है।

9 कथन- माँ बच्चे के बाल में कंघी करती है

कारण- बच्चे का बाल अच्छे नहीं होते

(क) कथन और कारण दोनों सही है

(ख) कथन सही है परन्तु कारण उसका सही स्पष्टीकरण नहीं है

(ग) कथन गलत है परन्तु कारण सही है

(घ) कथन और कारण दोनों गलत है

10. 'निर्मल जल' और 'कंघी करके' में कौन- सा अलंकार हैं

(क) अनुप्रास अलंकार

(ख) रूपक

(ग) पुनरुक्ति प्रकाश

(घ) यमक

उत्तर-

1. (ग) फ़िराक गोरखपुरी 2. (ग) वात्सल्य 3. (घ) घर के आँगन मे 4. (क) अपना नन्हा बच्चा 5. (क) हँसीं
6. (क) वह खुश है 7. (ग) मिट्टी के घर 8. (क) उत्तर: कथन और कारण दोनों सही है 9. (ख) कथन सही है परन्तु कारण उसका सही स्पष्टीकरण नहीं है 10. (क) अनुप्रास

छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख - उमाशंकर जोशी

जीवन परिचय- गुजराती कविता के सशक्त हस्ताक्षर उमाशंकर जोशी का जन्म 1911 ई० में गुजरात में हुआ था। 20वीं सदी में इन्होंने गुजराती साहित्य को नए आयाम दिए। इनको परंपरा का गहरा ज्ञान था। इन्होंने गुजराती कविता को प्रकृति से जोड़ा, आम जिंदगी के अनुभव से परिचय कराया और नयी शैली दी। इन्होंने भारत की आजादी की लड़ाई में भाग लिया तथा जेल भी गए। इनका देहावसान सन् 1988 में हुआ।

रचनाएँ- उमाशंकर जोशी का साहित्यिक अवदान पूरे भारतीय साहित्य के लिए महत्वपूर्ण है। इन्होंने एकांकी, निबंध, कहानी, उपन्यास, संपादन व अनुवाद आदि पर अपनी लेखनी सफलतापूर्वक चलाई। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

एकांकी- विश्व-शांति, गंगोत्री, निशीथ, प्राचीना, आतिथ्य, वसंत वर्षा, महाप्रस्थान, अभिज्ञा आदि।

कहानी- सापनाभारा, शहीद।

उपन्यास- श्रावणी मेणी, विसामो।

निबंध- पारकांजव्या ।

संपादन- गोष्ठी, उघाड़ीबारी, क्लांत कवि, म्हारा सॉनेट, स्वप्नप्रयाण तथा 'संस्कृति' पत्रिका का संपादन।

अनुवाद- अभिज्ञान शाकुंतलम् व उत्तररामचरित का गुजराती भाषा में अनुवाद।

काव्यगत विशेषताएँ- उमाशंकर जोशी ने गुजराती कविता को नया स्वर व नयी भंगिमा प्रदान की। इन्होंने जीवन के सामान्य प्रसंगों पर आम बोलचाल की भाषा में कविता लिखी। इनका साहित्य की विविध विधाओं में योगदान बहुमूल्य है। हालाँकि निबंधकार के रूप में ये गुजराती साहित्य में बेजोड़ माने जाते हैं। जोशी जी की काव्य-भाषा सरल है। इन्होंने मानवतावाद, सौंदर्य व प्रकृति के चित्रण पर अपनी कलम चलाई है। इन्होंने कविता के माध्यम से शब्दचित्र प्रस्तुत किए हैं।

छोटा मेरा खेत- इस कविता में कवि ने खेती के रूप में कवि-कर्म के हर चरण को बाँधने की कोशिश की है। कवि को कागज़ का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है। इस खेत में किसी अंधड़ अर्थात भावनात्मक आँधी के प्रभाव से किसी क्षण

एक बीज बोया जाता है। यह बीज रचना, विचार और अभिव्यक्ति का हो सकता है। यह कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और इस प्रक्रिया में स्वयं गल जाता है। उससे शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंतत: कृति एक पूर्ण स्वरूप ग्रहण करती है जो कृषि-कर्म के लिहाज से पुष्पित-पल्लवित होने की स्थिति है। साहित्यिक कृति से जो अलौकिक रस-धारा फूटती है, वह क्षण में होने वाली रोपाई का ही परिणाम है। पर यह रस-धारा अनंत काल तक चलने वाली कटाई से कम नहीं होती। खेत में पैदा होने वाला अन्न कुछ समय के बाद समाप्त हो जाता है, किंतु साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता।

विशेष-

1- कवि ने कल्पना के माध्यम से रचना-कर्म की गहराई को व्यक्त किया है।

2- कवि ने खेती व कविता की तुलना सूक्ष्म ढंग से की है।

3- 'पल्लव-पुष्प', 'गल गया' में अनुप्रास अलंकार है।

4- 'रस' शब्द के अर्थ हैं-काव्य रस और फल का रस। अत: यहाँ श्लेष अलंकार है

5- तत्सम शब्दावलीयुक्त खड़ी बोली में सुंदर अभिव्यक्ति हुई है।

6- दृश्य बिंब का सुंदर उदाहरण है।

7- प्रतीकात्मकता का समावेश है। कवि-कर्म का सुंदर वर्णन है।

8- कविता का आनंद शाश्वत है।

9- 'छोटा मेरा खेत चौकाना' में रूपक अलंकार है।

बगुलों के पंख- यह कविता सुंदर दृश्य बिंबयुक्त कविता है जो प्रकृति के सुंदर दृश्यों को हमारी आँखों के सामने सजीव रूप में प्रस्तुत करती है। सौंदर्य का अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कवियों ने कई युक्तियाँ अपनाई हैं जिनमें से सर्वाधिक प्रचलित युक्ति है-सौंदर्य के ब्यौरों के चित्रात्मक वर्णन के साथ अपने मन पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का वर्णन। कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते सफेद बगुलों को देखता है। वे कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की श्वेत काया के समान प्रतीत होते हैं। इस नयनाभिराम दृश्य में कवि सब कुछ भूलकर उसमें खो जाता है। वह इस माया से अपने को बचाने की गुहार लगाता है, लेकिन वह स्वयं को इससे बचा नहीं पाता।

विशेष-

1- कवि ने प्रकृति के उपादानों का मनोरम चित्रण किया है।

2- पंक्तिबध्द होकर उड़ते जा रहे बगुलों के दृश्य का मनोहारी वर्णन हुआ है ।

3- 'हौले-हौले' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

4- 'आँखें चुराना' मुहावरे का सुंदर प्रयोग है।

5- साहित्यिक खड़ी बोली है।

6- बिंब-योजना का सुंदर प्रयोग है।

7- कोमलकांत पदावली का प्रयोग है। जैसे-पाँती बँधे, हौले-हौले, बगुलों की पाँखें।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र-1 कविता में कवि-कर्म की तुलना किससे की गई है?

(क) शिल्प-कर्म से

(ख) लौह-कर्म से

(ग) कृषि-कर्म से

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-2 कवि कागज़ के एक पन्ने को किस रूप में देखता है?

(क) चौकोर खेत के रूप में

(ख) आयताकार आकृति के रूप में

(ग) हरे-भरे बाग के रूप में

(घ) निश्छल भावनाओं के रूप में

प्र-3 'कोई अंधड़ कहीं से आया' – पंक्ति में 'अंधड़' से क्या संकेत किया गया है?

(क) चौकोर खेत के रूप में

(ख) विचारों एवं भावनाओं की आँधी

(ग) आँधी और बारिश

(घ) गरम हवाओं की आँधी

प्र-4 'शब्द के अंकुर फूटे' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) उपमा

(ख) अनुप्रास

(ग) यमक

(घ) रूपक

प्र-5 'झूमने लगे फल' इसमें क्या अर्थ निहित है?

(क) कवि की रचना तैयार हो जाती है

(ख) किसान की फसल पक जाती है

(ग) चित्रकार का चित्र बन जाता है

(घ) शिल्पी का शिल्प सामने आ जाता है

प्र-6 रस का अक्षय पात्र किसे कहा गया है?

(क) फ़सल को

(ख) खेत को

(ग) साहित्य को

(घ) फल को

प्र-7 आसमान में बगुले किस तरह उड़ते जा रहे हैं?

(क) अलग-थलग होकर

(ख) सब एक झुंड में

(ग) पंक्तिबद्ध होकर

(घ) वृत्ताकार रूप में

प्र-8 पंक्तिबद्ध होकर उड़ते जा रहे बगुलों के दृश्य में कौन-सा बिम्ब है?

(क) गतिशील बिम्ब

(ख) स्थिर बिम्ब

(ग) स्पर्श बिम्ब

(घ) श्रव्य बिम्ब

प्र-9 उड़ते जा रहे बगुलों को देखकर कवि पर क्या प्रभाव पड़ा?

(क) कवि एक टक उन्हें देखता रहा

(ख) कवि उन्हें पकड़ना चाह रहा था

(ग) कवि स्वयं उड़ रहा था

(घ) कवि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा

प्र-10 'बगुलों के पंख' कविता के रचनाकार का नाम बताइए।

(क) शिवमंगल सिंह सुमन

(ख) शमशेर बहादुर सिंह
(ग) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(घ) उमाशंकर जोशी

उत्तर-

1-(ग) कृषि-कर्म से 2-(क) चौकोर खेत के रूप में 3-(ख) विचारों एवं भावनाओं की आँधी 4-(घ) रूपक 5-(क) कवि की रचना तैयार हो जाती है 6-(ग) साहित्य को 7-(ग) पंक्तिबद्ध होकर 8-(क) गतिशील बिम्ब 9-(क) कवि एक टक उन्हें देखता रहा 10- उमाशंकर जोशी

गद्य-खंड

भक्तिन - महादेवी वर्मा

प्रतिपादय- 'भक्तिन' महादेवी जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है जो **'स्मृति की रेखाएँ'** में संकलित है। इसमें लेखिका ने अपनी सेविका भक्तिन के अतीत और वर्तमान का परिचय देते हुए उसके व्यक्तित्व का दिलचस्प खाका खींचा है। महादेवी के घर में काम शुरू करने से पहले उसने कैसे एक संघर्षशील, स्वाभिमानी और कर्मठ जीवन जिया, कैसे पितृसत्तात्मक मान्यताओं और छल-छद्म भरे समाज में अपने और अपनी बेटियों के हक की लड़ाई लड़ती रही और हारकर कैसे ज़िंदगी की राह पूरी तरह बदल लेने के निर्णय तक पहुँची, इसका संवेदनशील चित्रण लेखिका ने किया है। साथ ही, भक्तिन लेखिका के जीवन में आकर छा जाने वाली एक ऐसी परिस्थिति के रूप में दिखाई पड़ती है, जिसके कारण लेखिका के व्यक्तित्व के कई अनछुए आयाम उद्घाटित होते हैं। इसी कारण अपने व्यक्तित्व का जरूरी अंश मानकर वे भक्तिन को खोना नहीं चाहतीं।

सारांश- लेखिका कहती है कि भक्तिन का कद छोटा व शरीर दुबला था। उसके होंठ पतले थे। वह गले में कंठी-माला पहनती थी। उसका नाम लक्ष्मी था, परंतु उसने लेखिका से यह नाम प्रयोग न करने की प्रार्थना की। उसकी कंठी-माला को देखकर लेखिका ने उसका नाम 'भक्तिन' रख दिया। सेवा-धर्म में वह हनुमान से स्पर्द्धा करती थी। उसके अतीत के बारे में यही पता चलता है कि वह ऐतिहासिक झूसी के गाँव के प्रसिद्ध अहीर की इकलौती बेटी थी। उसका लालन-पालन उसकी सौतेली माँ ने किया। पाँच वर्ष की उम्र में इसका विवाह हंडिया गाँव के एक गोपालक के पुत्र के साथ कर दिया गया था। नौ वर्ष की उम्र में गौना हो गया। भक्तिन की विमाता ने उसके पिता की मृत्यु का समाचार देर से भेजा। सास ने रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए उसे पीहर यह कहकर भेज दिया कि वह बहुत दिनों से गई नहीं है। मायके जाने पर विमाता के दुर्व्यवहार तथा पिता की मृत्यु से व्यथित होकर वह बिना पानी पिए ही घर वापस चली आई। घर आकर सास को खरी-खोटी सुनाई तथा पति के ऊपर गहने फेंककर अपनी व्यथा व्यक्त की। भक्तिन को जीवन के दूसरे भाग में भी सुख नहीं मिला। उसके लगातार तीन लड़कियाँ पैदा हुई तो सास व जेठानियों ने उसकी उपेक्षा करनी शुरू कर दी। इसका कारण यह था कि सास के तीन कमाऊ बेटे थे तथा जेठानियों के काले-काले पुत्र थे। जेठानियाँ बैठकर खातीं तथा घर का सारा काम-चक्की चलाना, कूटना, पीसना, खाना बनाना आदि कार्य-भक्तिन करती। छोटी लड़कियाँ गोबर उठातीं तथा कंडे थापती थीं। खाने के मामले में भी भेदभाव था। जेठानियाँ और उनके लड़कों को भात पर सफेद राब, दूध व मलाई मिलती तथा भक्तिन को काले गुड़ की डली, मट्ठा तथा लड़कियों को चने-बाजरे की घुघरी मिलती थी। इस पूरे प्रकरण में भक्तिन के पति का व्यवहार अच्छा था। उसे अपनी पत्नी पर विश्वास था।

पति-प्रेम के बल पर ही वह परिवार से अलग हो गई। अलग होते समय अपने ज्ञान के कारण उसे गाय-भैंस, खेत, खलिहान, अमराई के पेड़ आदि ठीक-ठाक मिल गए। परिश्रम के कारण घर में समृद्ध आ गई। पति ने बड़ी लड़की का विवाह धूमधाम से किया। इसके बाद वह दो कन्याओं को छोड़कर चल बसा। इस समय भक्तिन की आयु 29 वर्ष की थी। उसकी संपत्ति देखकर परिवार वालों के मुँह में पानी आ गया। उन्होंने दूसरे विवाह का प्रस्ताव किया तो भक्तिन ने स्पष्ट मना कर दिया। उसने केश कटवा दिए तथा गुरु से मंत्र लेकर कंठी बाँध ली। उसने दोनों लड़कियों की शादी कर दी और पति के चुने दामाद को घर-जमाई बनाकर रखा। जीवन के तीसरे परिच्छेद में दुर्भाग्य ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। उसकी लड़की भी विधवा हो गई। परिवार वालों की दृष्टि उसकी संपत्ति पर थी। उसका जेठ अपनी विधवा बहन के विवाह के लिए अपने तीतर लड़ाने वाले साले को बुला लाया क्योंकि उसका विवाह हो जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता।

भक्तिन की लड़की ने उस तीतरबाज वर को नापसंद कर दिया। माँ-बेटी मन लगाकर अपनी संपत्ति की देखभाल करने लगीं। एक दिन भक्तिन की अनुपस्थिति में उस तीतरबाज वर ने बेटी की कोठरी में घुसकर भीतर से दरवाजा बंद कर लिया और उसके समर्थक गाँव वालों को बुलाने लगे। लड़की ने उसकी खूब मरम्मत की तो पंच समस्या में पड़ गए। अंत में पंचायत ने कलियुग को इस समस्या का कारण बताया और अपीलहीन फैसला हुआ कि दोनों को पति-पत्नी के रूप में रहना पड़ेगा। अपमानित बालिका व माँ विवश थीं। यह संबंध सुखकर नहीं था। दामाद निश्चित होकर तीतर लड़ाता था, जिसकी वजह से पारिवारिक द्वेष इस कदर बढ़ गया कि लगान अदा करना भी मुश्किल हो गया। लगान न पहुँचने के कारण जमींदार ने भक्तिन को कड़ी धूप में खड़ा कर दिया।

यह अपमान वह सहन न कर सकी और कमाई के विचार से शहर चली आई। जीवन के अंतिम परिच्छेद में, घुटी हुई चाँद, मैली धोती तथा गले में कंठी पहने वह लेखिका के पास नौकरी के लिए पहुँची और उसने रोटी बनाना, दाल बनाना आदि काम जानने का दावा किया। नौकरी मिलने पर उसने अगले दिन स्नान करके लेखिका की धुली धोती भी जल के छींटों से पवित्र करने के बाद पहनी। निकलते सूर्य व पीपल को अर्घ दिया। दो मिनट जप किया और कोयले की मोटी रेखा से चौके की सीमा निर्धारित करके खाना बनाना शुरू किया। भक्तिन छूत-पाक को मानने वाली थी। लेखिका ने समझौता करना उचित समझा। भोजन के समय भक्तिन ने लेखिका को दाल के साथ मोटी काली चित्तीदार चार रोटियाँ परोसीं तो लेखिका ने टोका। उसने अपना तर्क दिया कि अच्छी सेंकने के प्रयास में रोटियाँ अधिक कड़ी हो गई। उसने सब्जी न बनाकर दाल बना दी। इस खाने पर प्रश्नवाचक दृष्टि होने पर वह अमचूरण, लाल मिर्च की चटनी या गाँव से लाए गुड़ का प्रस्ताव रखा।

भक्तिन के लेक्चर के कारण लेखिका रूखी दाल से एक मोटी रोटी खाकर विश्वविद्यालय पहुँची और न्यायसूत्र पढ़ते हुए शहर और देहात के जीवन के अंतर पर विचार करने लगी। गिरते स्वास्थ्य व परिवार वालों की चिंता निवारण के लिए लेखिका ने खाने के लिए अलग व्यवस्था की, किंतु इस देहाती वृद्धा की सरलता से वह इतना प्रभावित हुई कि वह अपनी असुविधाएँ छिपाने लगी। भक्तिन स्वयं को बदल नहीं सकती थी। वह दूसरों को अपने मन के अनुकूल बनाने की इच्छा रखती थी। लेखिका देहाती बन गई, परंतु भक्तिन को शहर की हवा नहीं लगी। उसने लेखिका को ग्रामीण खाना-खाना सिखा दिया, परंतु स्वयं 'रसगुल्ला' भी नहीं खाया। उसने लेखिका को अपनी भाषा की अनेक दंतकथाएँ कंठस्थ करा दीं, परंतु खुद 'आँय' के स्थान पर 'जी' कहना नहीं सीखा। भक्तिन में दुर्गुणों का अभाव नहीं था। वह इधर-उधर पड़े पैसों को किसी मटकी में छिपाकर रख देती थी जिसे वह बुरा नहीं मानती थी। पूछने पर वह कहती कि यह उसका अपना घर ठहरा, पैसा-रुपया जो इधर-उधर पड़ा देखा, सँभालकर रख लिया। यह क्या चोरी है! अपनी मालकिन को खुश करने के लिए वह बात को बदल भी देती थी। वह अपनी बातों को शास्त्र-सम्मत मानती थी। वह अपने तर्क देती थी। लेखिका ने उसे सिर घुटाने से रोका तो उसने **'तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध'** कहकर अपने कार्य को शास्त्र-सिद्ध बताया। वह स्वयं पढ़ी-लिखी नहीं थी। अब वह हस्ताक्षर करना भी सीखना नहीं चाहती थी। उसका तर्क था कि उसकी मालकिन दिन-रात किताब पढ़ती है। यदि वह भी पढ़ने लगे तो घर के काम कौन करेगा। भक्तिन अपनी मालकिन को असाधारणता का दर्जा देती थी। इसी से वह अपना महत्व साबित कर सकती थी। उत्तर-पुस्तिका के निरीक्षण-कार्य में लेखिका का किसी ने सहयोग नहीं दिया। इसलिए वह कहती फिरती थी कि उसकी मालकिन जैसा कार्य कोई नहीं जानता। वह स्वयं सहायता करती थी। कभी उत्तर-पुस्तिकाओं को बाँधकर, कभी अधूरे चित्र को कोने में रखकर, कभी रंग की प्याली धोकर और कभी चटाई को आँचल से झाड़कर वह जो सहायता करती थी उससे भक्तिन का अन्य व्यक्तियों से अधिक बुद्धिमान होना प्रमाणित हो जाता है। लेखिका की किसी पुस्तक के प्रकाशन होने पर उसे प्रसन्नता होती थी। उस कृति में वह अपना सहयोग खोजती थी। लेखिका भी उसकी आभारी थी क्योंकि जब वह बार-बार के आग्रह के बाद भी भोजन के लिए न उठकर चित्र बनाती रहती थी, तब भक्तिन कभी दही का शरबत अथवा कभी तुलसी की चाय पिलाकर उसे भूख के कष्ट से बचाती थी।

भक्तिन में गजब का सेवा-भाव था। छात्रावास की रोशनी बुझने पर जब लेखिका के परिवार के सदस्य-हिरनी सोना, कुत्ता बसंत, बिल्ली गोधूलि भी-आराम करने लगते थे, तब भी भक्तिन लेखिका के साथ जागती रहती थी। वह उसे कभी पुस्तक देती, कभी स्याही तो कभी फ़ाइल देती थी। भक्तिन लेखिका के जागने से पहले जागती थी तथा लेखिका के बाद सोती थी। बदरी-केदार के पहाड़ी तंग रास्तों पर वह लेखिका से आगे चलती थी, परंतु गाँव की धूलभरी पगडंडी पर उसके पीछे रहती थी। लेखिका भक्तिन को छाया के समान समझती थी। युद्ध के समय लोग डरे हुए थे, उस समय वह बेटी-दामाद के आग्रह पर लेखिका के साथ रहती थी। युद्ध में भारतीय सेना के पलायन की बात सुनकर वह लेखिका को अपने गाँव ले जाना

चाहती थी। वहाँ वह लेखिका के लिए हर तरह के प्रबंध करने का आश्वासन देती थी। वह अपनी पूँजी को भी दाँव पर लगाने के लिए तैयार थी। लेखिका का मानना है कि उनके बीच स्वामी-सेवक का संबंध नहीं था।

इसका कारण यह था कि वह उसे इच्छा होने पर भी हटा नहीं सकती थी और भक्तिन चले जाने का आदेश पाकर भी हँसकर टाल रही थी। वह उसे नौकर भी नहीं मानती थी। भक्तिन लेखिका के जीवन को घेरे हुए थी। भक्तिन छात्रावास की बालिकाओं के लिए चाय बना देती थी। वह उन्हें लेखिका के नाश्ते का स्वाद भी लेने देती थी। वह लेखिका के परिचितों व साहित्यिक बंधुओं से भी परिचित थी। वह उनके साथ वैसा ही व्यवहार करती थी जैसा लेखिका करती थी। वह उन्हें आकार-प्रकार, वेश-भूषा या नाम के अपभ्रंश द्वारा जानती थी। कवियों के प्रति उसके मन में विशेष आदर नहीं था, परंतु दूसरे के दुख से वह कातर हो उठती थी। किसी विद्यार्थी के जेल जाने पर वह व्यथित हो उठती थी। वह कारागार से डरती थी, परंतु लेखिका के जेल जाने पर खुद भी उनके साथ चलने का हठ किया। अपनी मालकिन के साथ जेल जाने के हक के लिए वह बड़े लाट तक से लड़ने को तैयार थी। भक्तिन का अंतिम परिच्छेद चालू है लेकिन लेखिका इसे पूरा नहीं करना चाहती।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न-1 भक्तिन का वास्तविक नाम क्या था?

(क) लक्ष्मी

(ख) भक्तिन

(ग) लछमिन

(घ) कोकिला

प्रश्न-2 भक्तिन किससे डरती थी?

(क) लेखिका से

(ख) रसोईघर से

(ग) बड़े साहब से

(घ) कारागार से

प्रश्न-3 खोटे सिक्के की टकसाल किसे कहा गया है?

(क) लेखिका को

(ख) लछमिन को

(ग) सेविका को

(घ) भक्तिन के पति को

प्रश्न-4 लेखिका ने लछमिन का नाम भक्तिन क्या देख कर रखा?

(क) गले में पड़ी कंठी माला देखकर

(ख) उसकी वृद्धावस्था देखकर

(ग) उसका सेवा-भाव देखकर

(घ) धर्म के प्रति उसकी आस्था देखकर

प्रश्न-5 लेखिका भक्तिन की कहानी को अधूरी क्यों छोड़ती है?

(क) भक्तिन के महत्त्व को बनाए रखने के लिए

(ख) भक्तिन के झूठ बोलने को देखकर

(ग) पढ़े-लिखों की गुरु बन जाने के कारण

(घ) लेखिका को हमेशा मदद मिले

प्रश्न-6 पति की मृत्यु के समय भक्तिन की उम्र कितनी थी?

(क) 29 वर्ष

(ख) 25 वर्ष

(ग) 30 वर्ष

(घ) 27 वर्ष

प्रश्न-7 भक्तिन अपने पति को क्या संबोधन कर याद करती थी?

(क) सेवक

(ख) बुढ़ऊ

(ख) जिठैत

(घ) मालिक

प्रश्न-8 इस पाठ में सेवक धर्म में भक्तिन की तुलना किससे की गई है?

(क) लेखिका से

(ख) माता अंजना से

(ग) हनुमान जी से

(घ) नौकर से

प्रश्न-9 लगान न चुका पाने के कारण भक्तिन को क्या सजा मिली?

(क) उसे लेखिका के यहाँ काम करना पड़ा

(ख) उसे बगीचे की रखवाली करनी पड़ी

(ग) उसे खेत में पानी लगाना पड़ा

(घ) उसे दिन भर धूप में खड़ा रहना पड़ा

प्रश्न-10 'सिर घुटाना' मुहावरे का क्या अर्थ है?

(क) सिर में तेल लगवाना

(ख) सिर के बाल उतरवाना

(ग) सिर के बल खड़ा होना

(घ) शीर्षासन करना

उत्तर-

1-(ग) लछमिन 2-(घ) कारागार से 3-(ख) लछमिन को 4-(क) गले में पड़ी कंठी माला देखकर 5-(क) भक्तिन के महत्त्व को बनाए रखने के लिए 6-(क) 29 वर्ष 7-(ख) बुढ़ऊ 8-(ग) हनुमान जी से 9-(घ) उसे दिन भर धूप में खड़ा रहना पड़ा 10-(ख) सिर के बाल उतरवाना

बाजार दर्शन - जैनेन्द्र कुमार

प्रतिपादय– 'बाजार दर्शन' निबंध में गहरी वैचारिकता व साहित्य के सुलभ लालित्य का संयोग है। कई दशक पहले लिखा गया यह लेख आज भी उपभोक्तावाद व बाजारवाद को समझाने में बेजोड़ है। जैनेंद्र जी अपने परिचितों, मित्रों से जुड़े अनुभव बताते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि बाजार की जादुई ताकत मनुष्य को अपना गुलाम बना लेती है। यदि हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझकर बाजार का उपयोग करें तो उसका लाभ उठा सकते हैं। इसके विपरीत, बाजार की चमक-दमक में फँसने के बाद हम असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल होकर सदा के लिए बेकार हो सकते हैं। लेखक ने कहीं दार्शनिक अंदाज में तो कहीं किस्सागोई की तरह अपनी बात समझाने की कोशिश की है। इस क्रम में इन्होंने केवल बाजार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र बताया है।

सारांश- लेखक अपने मित्र की कहानी बताता है कि एक बार वे बाजार में मामूली चीज लेने गए, परंतु वापस बंडलों के साथ लौटे। लेखक के पूछने पर उन्होंने पत्नी को दोषी बताया। लेखक के अनुसार, पुराने समय से पति इस विषय पर पत्नी की ओट लेते हैं। इसमें मनीबैग अर्थात पैसे की गरमी भी विशेष भूमिका अदा करता है। पैसा पावर है, परंतु उसे प्रदर्शित करने के लिए बैंक-बैलेंस, मकान-कोठी आदि इकट्ठा किया जाता है। पैसे की पर्चेजिंग पावर के प्रयोग से पावर का रस मिलता है। लोग संयमी भी होते हैं। वे पैसे को जोड़ते रहते हैं तथा पैसे के जुड़ा होने पर स्वयं को गर्वीला महसूस करते हैं। मित्र ने बताया कि सारा पैसा खर्च हो गया। मित्र की अधिकतर खरीद पर्चेजिंग पावर के अनुपात से आई थी, न कि जरूरत के हिसाब से। लेखक कहता है कि फालतू चीज की खरीद का प्रमुख कारण बाजार का आकर्षण है। मित्र ने इसे शैतान का जाल बताया है। यह आकर्षण ऐसा होता है कि बेहया ही हो जो इसमें नहीं फँसता। बाजार अपने रूपजाल में सबको उलझाता है। इसके आमंत्रण

में आग्रह नहीं है। ऊँचे बाजार का आमंत्रण मूक होता है। यह इच्छा जगाता है। हर आदमी को चीज की कमी महसूस होती है। चाह और अभाव मनुष्य को पागल कर देता है। असंतोष, तृष्णा व ईर्ष्या से मनुष्य सदा के लिए बेकार हो जाता है।

लेखक का दूसरा मित्र दोपहर से पहले बाजार गया तथा शाम को खाली हाथ वापस आ गया। पूछने पर बताया कि बाजार में सब कुछ लेने योग्य था, परंतु कुछ भी न ले पाया। एक वस्तु लेने का मतलब था, दूसरी छोड़ देना। अगर अपनी चाह का पता नहीं तो सब ओर की चाह हमें घेर लेती है। ऐसे में कोई परिणाम नहीं होता। बाजार में रूप का जादू है। यह तभी असर करता है जब जेब भरी हो तथा मन खाली हो। यह मन व जेब के खाली होने पर भी असर करता है। खाली मन को बाजार की चीजें निमंत्रण देती हैं। सब चीजें खरीदने का मन करता है।

जादू उतरते ही फैंसी चीजें आराम नहीं, खलल ही डालती प्रतीत होती हैं। इससे स्वाभिमान व अभिमान बढ़ता है। जादू से बचने का एकमात्र उपाय यह है कि बाजार जाते समय मन खाली न रखो। मन में लक्ष्य हो तो बाजार आनंद देगा। वह आपसे कृतार्थ होगा। बाजार की असली कृतार्थता है-आवश्यकता के समय काम आना। मन खाली रखने का मतलब मन बंद नहीं करना है। शून्य होने का अधिकार बस परमात्मा का है जो सनातन भाव से संपूर्ण है। मनुष्य अपूर्ण है। मनुष्य इच्छाओं का निरोध नहीं कर सकता। यह लोभ को जीतना नहीं है, बल्कि लोभ की जीत है। मन को बलात् बंद करना हठयोग है। वास्तव में मनुष्य को अपनी अपूर्णता स्वीकार कर लेनी चाहिए। सच्चा कर्म सदा इस अपूर्णता की स्वीकृति के साथ होता है। अत: मन की भी सुननी चाहिए क्योंकि वह भी उद्देश्यपूर्ण है। मनमानेपन को छूट नहीं देनी चाहिए।

लेखक के पड़ोस में भगत जी रहते थे। वे लंबे समय से चूरन बेच रहे थे। चूरन उनका सरनाम था। वे प्रतिदिन छह आने पैसे से अधिक नहीं कमाते थे। वे अपना चूरन थोक व्यापारी को नहीं देते थे और न ही पेशगी ऑर्डर लेते थे। छह आने पूरे होने पर वे बचा चूरन बच्चों को मुफ़्त बाँट देते थे। वे सदा स्वस्थ रहते थे।उन पर बाजार का जादू नहीं चल सकता था। वे निरक्षर थे। बड़ी-बड़ी बातें जानते नहीं थे। उनका मन अडिग रहता था। पैसा भीख माँगता है कि मुझे लो। वह निर्मम व्यक्ति पैसे को अपने आहत गर्व में बिलखता ही छोड़ देता है। पैसे में व्यंग्य शक्ति होती है। पैदल व्यक्ति के पास से धूल उड़ाती मोटर चली जाए तो व्यक्ति परेशान हो उठता है। वह अपने जन्म तक को कोसता है, परंतु यह व्यंग्य चूरन वाले व्यक्ति पर कोई असर नहीं करता। लेखक ऐसे बल के विषय में कहता है कि यह कुछ अपर जाति का तत्व है। कुछ लोग इसे आत्मिक, धार्मिक व नैतिक कहते हैं।

लेखक कहता है कि जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है। एक दिन बाजार के चौक में भगत जी व लेखक की राम-राम हुई। उनकी आँखें खुली थीं। वे सबसे मिलकर बात करते हुए जा रहे थे। लेकिन वे भौचक्के नहीं थे और ना ही वे किसी प्रकार से लाचार थे। भाँति-भाँति के बढ़िया माल से चौक भरा था किंतु उनको मात्र अपनी जरूरत की चीज से मतलब था। वे रास्ते के फैंसी स्टोरों को छोड़कर पंसारी की दुकान से अपने काम की चीजें लेकर चल पड़ते हैं। अब उन्हें बाजार शून्य लगता है। फिर चाँदनी बिछी रहती हो या बाजार के आकर्षण बुलाते रहें, वे उसका कल्याण ही चाहते हैं।

लेखक का मानना है कि बाजार को सार्थकता वह मनुष्य देता है जो अपनी जरूरत को पहचानता है। जो केवल पर्चेजिंग पॉवर के बल पर बाजार को व्यंग्य दे जाते हैं, वे न तो बाजार से लाभ उठा सकते हैं और न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। ये कपट को बढ़ाते हैं जिससे सद्भाव घटता है। सद्भाव नष्ट होने से ग्राहक और बेचक रह जाते हैं। वे एक-दूसरे को ठगने की घात में रहते हैं। ऐसे बाजारों में व्यापार नहीं, शोषण होता है। कपट सफल हो जाता है तथा बाजार मानवता के लिए विडंबना है और जो ऐसे बाजार का पोषण करता है जो उसका शास्त्र बना हुआ है, वह अर्थशास्त्र सरासर औधा है, वह मायावी शास्त्र है, वह अर्थशास्त्र अनीतिशास्त्र है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न-1 बाजार के जादू का प्रभाव कब अधिक पड़ता है?

(क) जब ग्राहक का मन भरा होता है
(ख) जब ग्राहक का मन खाली होता है
(ग) जब ग्राहक खुश होता है
(घ) जब ग्राहक दुखी होता है

प्रश्न-2 बाजार के जादू के प्रभाव से बचने का सबसे सरल उपाय क्या है?

(क) जब मन खाली हो तब बाजार जाओ
(ख) जब मन भरा हो तब बाजार न जाओ
(ग) जब मन खाली हो तब बाजार न जाओ
(घ) जब मन दुखी हो तब बाजार मत जाओ

प्रश्न-3 बाजार का आमंत्रण कैसा होता है?

(क) मूक (मौन) और चाह जगाने वाला
(ख) मन को शांत कर देने वाला
(ग) मन में विराग पैदा करने वाला
(घ) दुकानदार को लाभ पहुँचाने वाला

प्रश्न-4 बाजार को सार्थकता कौन देता है?

(क) जो लोग बाजार से कुछ नहीं खरीदते हैं
(ख) जो यह जानते हैं कि उन्हें बाजार से क्या खरीदना है
(ग) जो यह नहीं जानते हैं कि उन्हें क्या खरीदना चाहिए
(घ) जो बाजार जाकर सब कुछ खरीदना चाहते हैं

प्रश्न-5 लेखक ने बाजार के जादू की तुलना किससे की है?

(क) चुंबक के जादू से
(ख) लोहे के जादू से
(ग) हाथ के जादू से
(घ) दूकान के जादू से

प्रश्न-6 लेखक के दूसरे मित्र ने बाजार से क्या खरीदा?

(क) ढेर सारा सामान
(ख) केवल एक सामान
(ग) केवल दो सामान
(घ) कुछ भी नहीं

प्रश्न-7 लोग बाजार से सामान किस हिसाब से खरीदते हैं?

(क) अपनी कमजोरी छिपाने के हिसाब से
(ख) पर्चेजिंग पावर के हिसाब से
(ग) दूसरों को दिखाने के हिसाब से
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-8 मन को किस बात की छूट नहीं मिलनी चाहिए?

(क) मनन करने की
(ख) हिसाब लगाने की
(ग) चक्कर खाने की
(घ) मनमानी करने की

प्रश्न-9 छह आने की कमाई होने के बाद भगत जी चूरन का क्या करते थे?

(क) अगले दिन के लिए रख लेते थे
(ख) बच्चों में मुफ़्त बाँट देते थे
(ग) दुकान पर दे देते थे
(घ) कूड़ेदान में फेंक देते थे

प्रश्न-10 बाजार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को लेखक ने क्या नाम दिया है?

(क) दर्शनशास्त्र
(ख) राजनीति शास्त्र
(ग) अनीतिशास्त्र
(घ) ज्योतिष शास्त्र

उत्तर-

1-(ख) जब ग्राहक का मन खाली होता है 2-**(ग) जब** मन खाली हो तब बाजार न जाओ 3-(क) मूक (मौन) और चाह जगाने वाला 4-(ख) जो यह जानते हैं कि उन्हें बाजार से क्या खरीदना है 5-(क) चुंबक के जादू से 6-(घ) कुछ भी नहीं 7-(ख) पर्चेजिंग पावर के हिसाब से 8-(घ) मनमानी करने की 9-(ख) बच्चों में मुफ़्त बाँट देते थे 10-(ग) अनीतिशास्त्र

काले मेघा पानी दे - धर्मवीर भारती

प्रतिपादय- 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण में लोक-प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व का चित्रण किया गया है। विज्ञान का अपना तर्क है और विश्वास का अपना सामर्थ्य। इनकी सार्थकता के विषय में शिक्षित वर्ग असमंजस में है। लेखक ने इसी दुविधा को लेकर पानी के संदर्भ में प्रसंग रचा है। आषाढ़ का पहला पखवाड़ा बीत चुका है। ऐसे में खेती व अन्य कार्यों के लिए पानी न हो तो जीवन चुनौतियों का घर बन जाता है। यदि विज्ञान इन चुनौतियों का निराकरण नहीं कर पाता तो उत्सवधर्मी भारतीय समाज किसी-न-किसी जुगाड़ में लग जाता है, प्रपंच रचता है और हर कीमत पर जीवित रहने के लिए अशिक्षा तथा बेबसी के भीतर से उपाय और काट की खोज करता है।

सारांश- लेखक बताता है कि जब वर्षा की प्रतीक्षा करते-करते लोगों की हालत खराब हो जाती है तब गाँवों में नंग-धडंग किशोर शोर करते हुए कीचड़ में लोटते हुए गलियों में घूमते हैं। ये दस-बारह वर्ष की आयु के होते हैं तथा सिर्फ़ जाँघिया या लंगोटी पहनकर 'गंगा मैया की जय' बोलकर गलियों में चल पड़ते हैं। जयकारा सुनते ही स्त्रियाँ व लड़कियाँ छज्जे व बारजों से झाँकने लगती हैं। इस मंडली को इंदर सेना या मेढक-मंडली कहते हैं। ये पुकार लगाते हैं-

काले मेघा पानी दे, पानी दे गुड़धानी दे, गगरी फूटी बैल पियासा, काले मेधा पानी दे।

जब यह मंडली किसी घर के सामने रुककर 'पानी' की पुकार लगाती थी तो घरों में सहेजकर रखे पानी से इन बच्चों को सिर से पैर तक तर कर दिया जाता था। ये भीगे बदन मिट्टी में लोट लगाते तथा कीचड़ में लथपथ हो जाते। यह वह समय होता था जब हर जगह लोग गरमी में भुनकर त्राहि-त्राहि करने लगते थे; कुएँ सूखने लगते थे; नलों में बहुत कम पानी आता था, खेतों की मिट्टी में पपड़ी पड़कर जमीन फटने लगती थी। लू के कारण व्यक्ति बेहोश होने लगते थे। पशु पानी की कमी से मरने लगते थे, लेकिन बारिश का कहीं नामोनिशान नहीं होता था। जब पूजा-पाठ आदि विफल हो जाता था तो इंदर सेना अंतिम उपाय के तौर पर निकलती थी और इंद्र देवता से पानी की माँग करती थी। लेखक को यह समझ में नहीं आता था कि पानी की कमी के बावजूद लोग घरों में कठिनाई से इकट्ठा किए पानी को इन पर क्यों फेंकते थे। इस प्रकार के अंधविश्वासों से देश को बहुत नुकसान होता है। अगर यह सेना इंद्र की है तो वह खुद अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेती? ऐसे पाखंडों के कारण हम अंग्रेजों से पिछड़ गए तथा उनके गुलाम बन गए।

लेखक स्वयं मेढक-मंडली वालों की उम्र का था। वह आर्यसमाजी था तथा कुमार-सुधार सभा का उपमंत्री था। उसमें समाज सुधार का जोश ज्यादा था। उसे सबसे ज्यादा मुश्किल अपनी जीजी से थी जो उम्र में उसकी माँ से बड़ी थीं। वे सभी रीति-रिवाजों, तीज-त्योहारों, पूजा-अनुष्ठानों को लेखक के हाथों पूरा करवाती थीं। जिन अंधविश्वासों को लेखक समाप्त करना चाहता था। वे ये सब कार्य लेखक को पुण्य मिलने के लिए करवाती थीं। जीजी लेखक से इंदर सेना पर पानी फेंकवाने का काम करवाना चाहती थीं। उसने साफ़ मना कर दिया। जीजी ने काँपते हाथों व डगमगाते पाँवों से इंदर सेना पर पानी फेंका। लेखक जीजी से मुँह फुलाए रहा। शाम को उसने जीजी की दी हुई लड्डू-मठरी भी नहीं खाई। पहले उन्होंने गुस्सा दिखाया, फिर उसे गोद में लेकर समझाया। उन्होंने कहा कि यह अंधविश्वास नहीं है।

यदि हम पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे। यह पानी की बरबादी नहीं है। यह पानी का अर्घ्य है। दान में देने पर ही इच्छित वस्तु मिलती है। ऋषियों ने दान को महान बताया है। बिना त्याग के दान नहीं होता। करोड़पति दो-चार रुपये दान में दे दे तो वह त्याग नहीं होता। त्याग वह है जो अपनी जरूरत की चीज को जनकल्याण के लिए दे। ऐसे ही दान का फल मिलता है। लेखक जीजी के तर्कों के आगे पस्त हो गया। फिर भी वह अपनी जिद पर अड़ा रहा। जीजी ने फिर समझाया कि तू बहुत पढ़ गया है। वह अभी भी अनपढ़ है। किसान भी तीस-चालीस मन गेहूँ उगाने के लिए पाँच-छह सेर

अच्छा गेहूँ बोता है। इसी तरह हम अपने घर का पानी इन पर फेंककर बुवाई करते हैं। इसी से शहर, कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं।

ऋषि-मुनियों ने भी यह कहा है कि पहले खुद दो, तभी देवता चौगुना करके लौटाएँगे। यह आदमी का आचरण है जिससे सबका आचरण बनता है। 'यथा राजा तथा प्रजा' सच नहीं है। गांधी जी महाराज भी यही कहते हैं। लेखक कहता है कि यह बात पचास साल पुरानी होने के बावजूद आज भी उसके मन पर दर्ज है। अनेक संदर्भों में ये बातें मन को कचोटती हैं कि हम देश के लिए क्या करते हैं? हर क्षेत्र में माँगें बड़ी-बड़ी हैं, पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। आज स्वार्थ एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम भ्रष्टाचार की बातें करते हैं, परंतु खुद अपनी जाँच नहीं करते। काले मेघ उमड़ते हैं, पानी बरसता है, परंतु गगरी फूटी की फूटी रह जाती है। बैल प्यासे ही रह जाते हैं। यह स्थिति कब बदलेगी, यह कोई नहीं जानता?

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न-1 लोग बच्चों की टोली को इन्दर सेना या फिर -----------कहते थे?
(क) गायक मंडली
(ख) सेवक मंडली
(ग) मेढ़क मंडली
(घ) वादक मंडली

प्रश्न-2 लेखक बच्चों की टोली में क्यों नहीं शामिल था?
(क) लेखक पानी फेंकने को अन्धविश्वास मानता था
(ख) लेखक को कीचड़ पसंद नहीं था
(ग) इस टोली को लोग गालियाँ देते थे
(घ) जीजी उसे मना करती थीं

प्रश्न-3 लेखक जीजी की हर बात मानता था क्योंकि-
(क) जीजी उसे बहुत मानती थीं और उनके प्राण लेखक में बसते थे
(ख) जीजी अन्धविश्वासी थीं
(ग) जीजी उसे खाने के लिए लड्डू-मठरी देती थीं
(घ) जीजी उसे तरह-तरह की कहानियाँ सुनाया करती थीं

प्रश्न-4 जीजी ने अपनी बात कौन-सा उदाहरण देकर सही साबित की ?
(क) किसान और उसकी खेती का
(ख) इंद्र और उसकी सेना का
(ग) बच्चों की टोली का
(घ) पूजा-पाठ और धर्म-कर्म का

प्रश्न-5 अंत में लेखक को जीजी की बात कैसी लगी?
(क) फालतू और अतार्किक
(ख) अन्धविश्वास से पूर्ण
(ग) सही और तार्किक
(घ) किसान के पक्ष में

प्रश्न-6 लेखक समाज की किस कुरीति को खत्म करना चाहता था?

(क) अपराध

(ख) भ्रष्टाचार

(ग) अंधविश्वास

(घ) चोरी-डकैती

प्रश्न-7 लेखक बचपन में कुमार-सुधार सभा में किस पद पर था?

(क) सेनापति

(ख) रक्षा मंत्री

(ग) सिपाही

(घ) उपमंत्री

प्रश्न-8 किसान तीस-चालीस मन गेहूँ की फ़सल पाने के लिए क्या करता है?

(क) खेत की रखवाली

(ख) खेतों में पानी देता है

(ग) पशुओं को चारा खिलाता है

(घ) पाँच-छह सेर गेहूँ बोता है

प्रश्न-9 ऋषि-मुनियों ने जीवन में किस आचरण को अधिक महत्व दिया है?

(क) पहले खुद दो तभी देवता चौगुना करके लौटाएँगे

(ख) पहले अपना भला देखना चाहिए

(ग) दूसरों का ध्यान नहीं रखना चाहिए

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-10 लेखक के अनुसार गांधी जी किस बात को सच नहीं मानते थे?

(क) त्याग और आदर्श

(ख) यथा प्रजा तथा राजा

(ग) यथा राजा तथा प्रजा

(घ) चरित्र और संयम

उत्तर-

1-(ग) मेढ़क मंडली 2-(क) लेखक पानी फेंकने को अन्धविश्वास मानता था 3-(क) जीजी उसे बहुत मानती थीं और उनके प्राण लेखक में बसते थे 4-(क) किसान और उसकी खेती का 5-(ग) सही और तार्किक 6-(ग) अंधविश्वास 7-(घ) उपमंत्री 8-(घ) पाँच-छह सेर गेहूँ बोता है 9-(क) पहले खुद दो तभी देवता चौगुना करके लौटाएँगे 10-(ग) यथा राजा तथा प्रजा

पहलवान की ढोलक - फणीश्वर नाथ रेणु

प्रतिपाद्य- 'पहलवान की ढोलक' फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा लिखित एक श्रेष्ठ कहानी है। फणीश्वर एक आंचलिक कथाकार माने जाते हैं। प्रस्तुत कहानी उनकी एक आंचलिक कहानी है, जिसमें उन्होंने भारत पर इंडिया के छा जाने की समस्या को प्रतीकात्मक रूप से अभिव्यक्त किया है। यह व्यवस्था बदलने के साथ लोक कला और इसके कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने की कहानी है। यह कहानी हमारे समक्ष व्यवस्था की पोल खोलती है। साथ ही व्यवस्था के कारण लोक कलाओं के लुप्त होने की ओर संकेत भी करती है तथा हमारे सामने ऐसे । अनेक प्रश्न पैदा करती है कि यह सब क्यों हो रहा है? प्रस्तुत कहानी की भाषा सरल, सरस व स्वाभाविक बोलचाल की है। इसमें तत्सम, तद्भव, उर्दू, फ़ारसी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है। मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग से इनकी भाषा में रोचकता उत्पन्न हो गई है।

सारांश- श्यामनगर के समीप का एक गाँव सर्दी के मौसम में मलेरिया और हैजे से ग्रस्त था। चारों ओर सन्नाटे से युक्त बाँस-फूस की झोंपड़ियाँ खड़ी थीं। रात्रि में घना अंधेरा छाया हुआ था। चारों ओर करुण सिसकियों और कराहने की आवाजें गूंज रही थीं। सियारों और पेचक की भयानक आवाजें इस सन्नाटे को बीच-बीच में अवश्य थोड़ा-सा तोड़ रही थीं। इस भयंकर सन्नाटे में कुत्ते समूह बाँधकर रो रहे थे। रात्रि भीषणता और सन्नाटे से युक्त थी, लेकिन लुट्टन पहलवान की ढोलक इस

भीषणता को तोड़ने का प्रयास कर रही थी। इसी पहलवान की ढोलक की आवाज इस भीषण सन्नाटे से युक्त मृत गाँव में संजीवनी शक्ति भरा करती थी।

लुट्टन सिंह के माता-पिता नौ वर्ष की अवस्था में ही उसे छोड़कर चले गए थे। उसकी बचपन में शादी हो चुकी थी, इसलिए विधवा सास ने ही उसका पालन-पोषण किया। ससुराल में पलते-बढ़ते वह पहलवान बन गया था। एक बार श्यामनगर में एक मेला लगा। मेले के दंगल में लुट्टन सिंह ने एक प्रसिद्ध पहलवान चाँद सिंह को चुनौती दे डाली, जो शेर के बच्चे के नाम से जाना जाता था। श्यामनगर के राजा ने बहुत कहने के बाद ही लुट्टन सिंह को उस पहलवान के साथ लड़ने की आज्ञा दी, क्योंकि वह एक बहुत प्रसिद्ध पहलवान था।

लुट्टन सिंह ने ढोलक की 'धिना-धिना, धिकधिना', आवाज से प्रेरित होकर चाँद सिंह पहलवान को बड़ी मेहनत के बाद चित कर दिया। चाँद सिंह के हारने के बाद लुट्टन सिंह की जय-जयकार होने लगी और वह लुट्टन सिंह पहलवान के नाम से प्रसिद्ध हो गया। राजा ने उसकी वीरता से प्रभावित होकर उसे अपने दरबार में रख लिया। अब लुट्टन सिंह की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। लुट्टन सिंह पहलवान की पत्नी भी दो पुत्रों को जन्म देकर स्वर्ग सिधार गई थी।

लुट्टन सिंह अपने दोनों बेटों को भी पहलवान बनाना चाहता था, इसलिए वह बचपन से ही उन्हें कसरत आदि करवाने लग गया। उसने बेटों को दंगल की संस्कृति का पूरा ज्ञान दिया। लेकिन दुर्भाग्य से एक दिन उसके वयोवृद्ध राजा का स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात विलायत से नए महाराज आए। राज्य की गद्दी संभालते ही नए राजा साहब ने अनेक परिवर्तन कर दिए।

दंगल का स्थान घोड़ों की रेस ने ले लिया। बेचारे लुट्टन सिंह पहलवान पर कुठाराघात हुआ। वह हतप्रभ रह गया। राजा के इस रवैये को देखकर लुट्टन सिंह अपनी ढोलक कंधे में लटकाकर बच्चों सहित अपने गाँव वापस लौट आया। वह गाँव के एक किनारे पर झोपड़ी में रहता हुआ नौजवानों और चरवाहों को कुश्ती सिखाने लगा। गाँव के किसान व खेतिहर मजदूर भला क्या कुश्ती सीखते।

अचानक गाँव में अनावृष्टि अनाज की कमी, मलेरिया, हैजे आदि भयंकर समस्याओं का वज्रपात हुआ। चारों ओर लोग भूख, हैजे और मलेरिया से मरने लगे। सारे गाँव में तबाही मच गई। लोग इस त्रासदी से इतना डर गए कि सूर्यास्त होते ही अपनी-अपनी झोपड़ियों में घुस जाते थे। रात्रि की विभीषिका और सन्नाटे को केवल लट्टन सिंह पहलवान की ढोलक की तान ही ललकारकर चुनौती देती थी। यही तान इस भीषण समय में धैर्य प्रदान करती थी। यही तान शक्तिहीन गाँववालों में संजीवनी शक्ति भरने का कार्य करती थी। पहलवान के दोनों बेटे भी इसी भीषण विभीषिका के शिकार हुए। प्रातः होते ही पहलवान ने अपने दोनों बेटों को निस्तेज पाया। बाद में वह अशांत मन से दोनों को उठाकर नदी में बहा आया। लोग इस बात को सुनकर दंग रह गए। इस असह्य वेदना और त्रासदी से भी पहलवान नहीं टूटा। एक दिन गाँव वालों को लुट्टन पहलवान की ढोलक रात में नहीं सुनाई दी। सुबह उसके कुछ शिष्यों ने जाकर देखा तो पहलवान की लाश चित्त पड़ी हुई थी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न-1 पुरानी और उजड़ी बाँस-फूस की झोपड़ियों में किसका साम्राज्य था?

(क) भूतों का

(ख) अंधकार और सन्नाटे का

(ग) रात का

(घ) हवा का

प्रश्न-2 किस जानवर में परिस्थितियों को ताड़ने की विशेष बुद्धि होती है?

(क) बिल्ली

(ख) उल्लू

(ग) कुत्ता

(घ) सियार

प्रश्न-3 मृत गाँव में किसकी आवाज संजीवनी शक्ति भरती रहती थी?

(क) कुत्तों की

(ख) पेचक की

(ग) पहलवान की ढोलक की

(घ) सियारों की

प्रश्न-4 लुट्टन का पालन-पोषण किसने किया?

(क) राजा श्यामानंद ने

(ख) उसकी विधवा सास ने

(ग) गाँव वालों ने

(घ) उसके शिष्यों ने

प्रश्न-5 श्याम नगर के दंगल में लुट्टन ने किसको चुनौती दी?

(क) चाँद सिंह को

(ख) बादल सिंह को

(ग) श्याम सिंह को

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-6 चाँद सिंह के गुरु का क्या नाम था?

(क) काला खां

(ख) पहलवान काका

(ग) श्याम सिंह

(घ) बादल सिंह

प्रश्न-7 लुट्टन पहलवान कितने वर्ष तक राज दरबार का अजेय पहलवान बना रहा?

(क) दस वर्ष तक

(ख) बीस वर्ष तक

(ग) पंद्रह वर्ष तक

(घ) पचीस वर्ष तक

प्रश्न-8 "जीते रहो बहादुर! तुमने मिट्टी की लाज रख ली"- यह कथन किसका है?

(क) चाँद सिंह का

(ख) बादल सिंह का

(ग) लुट्टन सिंह का

(घ) राजा श्यामानंद का

प्रश्न-9 'पहलवान की ढोलक' कहानी किस प्रकार की कहानी है?

(क) राजनीतिक

(ख) आँचलिक

(ग) सामाजिक

(घ) उपदेशात्मक

प्रश्न-10 राजा की मृत्यु के बाद कुश्ती के स्थान पर किस खेल ने जगह ले ली?

(क) घोड़ों की रेस

(ख) कबड्डी

(ग) फुटबाल

(घ) शतरंज

उत्तर-

1-(ख) अंधकार और सन्नाटे का 2-(ग) कुत्ता 3-(ग) पहलवान की ढोलक की 4-(ख) उसकी विधवा सास ने 5-(क) चाँद सिंह को 6-(घ) बादल सिंह 7-(ग) पंद्रह वर्ष तक 8-(घ) राजा श्यामानंद का 9-(ख) आंचलिक 10-(क) घोड़ों की रेस

शिरीष के फूल – हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रतिपादय- 'शिरीष के फूल' शीर्षक निबंध 'कल्पलता' से उद्धृत है। इसमें लेखक ने आँधी, लू और गरमी की प्रचंडता में भी अवधूत की तरह अविचल होकर कोमल पुष्पों का सौंदर्य बिखेर रहे शिरीष के माध्यम से मनुष्य की अजेय ज़िजीविषा और तुमुल कोलाहल कलह के बीच धैर्यपूर्वक, लोक के साथ चिंतारत, कर्तव्यशील बने रहने को महान मानवीय मूल्य के रूप में स्थापित किया है। ऐसी भावधारा में बहते हुए उसे देह-बल के ऊपर आत्मबल का महत्व सिद्ध करने वाली इतिहास-विभूति गांधी जी की याद हो आती है तो वह गांधीवादी मूल्यों के अभाव की पीड़ा से भी कसमसा उठता है।

निबंध की शुरुआत में लेखक शिरीष पुष्प की कोमल सुंदरता के जाल बुनता है, फिर उसे भेदकर उसके इतिहास में और फिर उसके जरिये मध्यकाल के सांस्कृतिक इतिहास में पैठता है, फिर तत्कालीन जीवन व सामंती वैभव-विलास को सावधानी से उकेरते हुए उसका खोखलापन भी उजागर करता है। वह अशोक के फूल के भूल जाने की तरह ही शिरीष को नजरअंदाज किए जाने की साहित्यिक घटना से आहत है। इसी में उसे सच्चे कवि का तत्त्व-दर्शन भी होता है। उसका मानना है कि योगी की अनासक्त शून्यता और प्रेमी की सरस पूर्णता एक साथ उपलब्ध होना सत्कवि होने की एकमात्र शर्त है। ऐसा कवि ही समस्त प्राकृतिक और मानवीय वैभव में रमकर भी चुकता नहीं और निरंतर आगे बढ़ते जाने की प्रेरणा देता है।

सारांश- लेखक शिरीष के पेड़ों के समूह के बीच बैठकर लेख लिख रहा है। जेठ की गरमी से धरती जल रही है। ऐसे समय में शिरीष ऊपर से नीचे तक फूलों से लदा है। कम ही फूल गरमी में खिलते हैं। अमलतास केवल पंद्रह-बीस दिन के लिए फूलता है। कबीरदास को इस तरह दस दिन फूल खिलना पसंद नहीं है। शिरीष में फूल लंबे समय तक रहते हैं। वे वसंत में खिलते हैं तथा भादों माह तक फूलते रहते हैं। भीषण गरमी और लू में यही शिरीष अवधूत की तरह जीवन की अजेयता का मंत्र सिखाता रहता है। शिरीष के वृक्ष बड़े व छायादार होते हैं। पुराने रईस मंगल-जनक वृक्षों में शिरीष को भी लगाया करते थे। वात्स्यायन कहते हैं कि बगीचे के घने छायादार वृक्षों में ही झूला लगाना चाहिए। पुराने कवि बकुल के पेड़ में झूला डालने के लिए कहते हैं, परंतु लेखक शिरीष को भी उपयुक्त मानता है।

शिरीष की डालें कुछ कमजोर होती हैं, परंतु उस पर झूलनेवालियों का वजन भी कम ही होता है। शिरीष के फूल को संस्कृत साहित्य में कोमल माना जाता है। कालिदास ने लिखा है कि शिरीष के फूल केवल भौंरों के पैरों का दबाव सहन कर सकते हैं, पक्षियों के पैरों का नहीं। इसके आधार पर भी इसके फूलों को कोमल माना जाने लगा, पर इसके फलों की मजबूती नहीं देखते। वे तभी स्थान छोड़ते हैं, जब उन्हें धकिया दिया जाता है। लेखक को उन नेताओं की याद आती है जो समय को नहीं पहचानते तथा धक्का देने पर ही पद को छोड़ते हैं। लेखक सोचता है कि पुराने की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती। वृद्धावस्था व मृत्यु-ये जगत के सत्य हैं। शिरीष के फूलों को भी समझना चाहिए कि झड़ना निश्चित है, परंतु सुनता कोई नहीं। मृत्यु का देवता निरंतर कोड़े चला रहा है। उसमें कमजोर समाप्त हो जाते हैं। प्राणधारा व काल के बीच संघर्ष चल रहा है। हिलने-डुलने वाले कुछ समय के लिए बच सकते हैं। झड़ते ही मृत्यु निश्चित है।

लेखक को शिरीष अवधूत की तरह लगता है। यह हर स्थिति में ठीक रहता है। भयंकर गरमी में भी यह अपने लिए जीवन-रस ढूँढ लेता है। एक वनस्पतिशास्त्री ने बताया कि यह वायुमंडल से अपना रस खींचता है तभी तो भयंकर लू में ऐसे सुकुमार केसर उगा सका। अवधूतों के मुँह से भी संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर व कालिदास उसी श्रेणी के हैं। जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जिससे लेखा-जोखा मिलता है, वह कवि नहीं है। कर्णाट-राज की प्रिया विज्जिका देवी ने ब्रहमा, वाल्मीकि व व्यास को ही कवि माना। लेखक का मानना है कि जिसे कवि बनना है, उसका

फक्कड़ होना बहुत जरूरी है। कालिदास अनासक्त योगी की तरह स्थिर-प्रज्ञ, विदग्ध प्रेमी थे। उनका एक-एक श्लोक मुग्ध करने वाला है। शकुंतला का वर्णन कालिदास ने किया।

राजा दुष्यंत ने भी शंकुतला का चित्र बनाया, परंतु उन्हें हर बार उसमें कमी महसूस होती थी। काफी देर बाद उन्हें समझ आया कि शकुंतला के कानों में शिरीष का फूल लगाना भूल गए हैं। कालिदास सौंदर्य के बाहरी आवरण को भेदकर उसके भीतर पहुँचने में समर्थ थे। वे सुख-दुख दोनों में भाव-रस खींच लिया करते थे। ऐसी प्रकृति सुमित्रानंदन पंत व रवींद्रनाथ में भी थी। शिरीष पक्के अवधूत की तरह लेखक के मन में भावों की तरंगें उठा देता है। वह आग उगलती धूप में भी सरस बना रहता है। आज देश में मारकाट, आगजनी, लूटपाट आदि का बवंडर है। ऐसे में क्या स्थिर रहा जा सकता है? शिरीष रह सका है। गांधी जी भी रह सके थे। ऐसा तभी संभव हुआ है जब वे वायुमंडल से रस खींचकर कोमल व कठोर बने। लेखक जब शिरीष की ओर देखता है तो हूक उठती है-हाय, वह अवधूत आज कहाँ है!

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न-1 भीषण गर्मी और लू के बीच किस वृक्ष के फूल खिले रहते हैं?

(क) अशोक

(ख) अमलतास

(ग) शिरीष

(घ) वट

प्रश्न-2 लेखक ने शिरीष की तुलना किससे की है?

(क) अवधूत से

(ख) गृहस्थ से

(ग) अग्नि से

(घ) सेवक से

प्रश्न-3 संस्कृत साहित्य में शिरीष के फूल को क्या माना गया है?

(क) कठोर

(ख) ठंडा

(ग) स्वच्छ

(घ) कोमल

प्रश्न-4 कालिदास ने शिरीष के फूलों के बारे में क्या लिखा है?

(क) शिरीष के फूल कठोर होते हैं

(ख) केवल भौरों के पैरों का दबाव ही सह सकता है

(ग) हलके और मजबूत होते हैं

(घ) केवल चिड़ियों के पैरों का दबाव ही सह सकता है

प्रश्न-5 लेखक ने जगत के अति प्रामाणिक सत्य किसे माना है?

(क) जरा और मृत्यु को

(ख) धन और दौलत को

(ग) माया और मोह को

(घ) गृहस्थ और संन्यासी को

प्रश्न-6 संसार की सबसे सरस रचनाएँ किनके मुँह से निकली हैं?

(क) गृहस्थों के मुँह से

(ख) राजाओं के मुँह से

(ग) अवधूतों के मुँह से

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-7 कर्णाट-राज की रानी विज्जिका ने किन्हें सर्वश्रेष्ठ कवि माना है?

(क) ब्रह्मा जी को

(ख) वेद व्यास जी को

(ग) वाल्मीकि जी को

(घ) इनमें से सभी को

प्रश्न-8 राजा दुष्यंत द्वारा शकुंतला के बनाए गए चित्र में क्या कमी रह गई थी?

(क) शकुंतला की भौहें तिरछी थी

(ख) कानों में शिरीष का फूल पहनाना भूल गए

(ग) केश-सज्जा ठीक से नहीं कर पाए

(घ) गले का हार पहनाना भूल गए

प्रश्न-9 लेखक ने सुमित्रानंदन पंत को क्यों महत्व दिया है?

(क) उन्होंने प्रकृति के सूक्ष्म रूप का चित्रण किया है

(ख) लेखक से उनकी मित्रता थी

(ग) दूसरे कवियों की तरह ही उन्होंने रचनाएँ की हैं

(घ) कालिदास और सुमित्रानंदन पंत एक ही भाषा के कवि हैं

प्रश्न-10 कालिदास शकुंतला का वर्णन करने में क्यों सफल रहे?

(क) क्योंकि उन्हें संस्कृत का ज्ञान था

(ख) क्योंकि वे जंगल में अकेले रहते थे

(ग) क्योंकि उन्हें भगवती काली का वरदान प्राप्त था

(घ) क्योंकि वे विदग्ध, अनासक्त और स्थिर-प्रज्ञ प्रेमी थे

उत्तर-

1-(ग) शिरीष 2-(क) अवधूत से 3-(घ) कोमल 4-(ख) केवल भौरों के पैरों का दबाव ही सह सकता है 5-(क) जरा और मृत्यु को 6- (ग) अवधूतों के मुँह से 7-(घ) इनमें से सभी को 8-(ख) कानों में शिरीष का फूल पहनाना भूल गए 9-(क) उन्होंने प्रकृति के सूक्ष्म रूप का चित्रण किया है 10-(घ) क्योंकि वे विदग्ध, अनासक्त और स्थिर-प्रज्ञ प्रेमी थे

श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज – डॉ भीमराव आम्बेडकर

श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा

प्रतिपाद्य - यह पाठ आंबेडकर के विख्यात भाषण 'एनीहिलेशन ऑफ़ कास्ट'(1936) पर आधारित है। इसका अनुवाद ललई सिंह यादव ने 'जाति-भेद का उच्छेद' शीर्षक के अंतर्गत किया। यह भाषण 'जाति-पाँति तोड़क मंडल' (लाहौर) के वार्षिक सम्मेलन (1936) के अध्यक्षीय भाषण के रूप में तैयार किया गया था, परंतु इसकी क्रांतिकारी दृष्टि से आयोजकों की पूर्ण सहमति न बन सकने के कारण सम्मेलन स्थगित हो गया।

सारांश- लेखक कहता है कि आज के युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। समर्थक कहते हैं कि आधुनिक सभ्य समाज कार्य-कुशलता के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है। इसमें आपत्ति यह है कि जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है। श्रम-विभाजन सभ्य समाज की आवश्यकता हो सकती है, परंतु यह श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों के अस्वाभाविक विभाजन के साथ-साथ विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है। जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाए तो यह भी मानव की रुचि पर आधारित नहीं है। सक्षम समाज को चाहिए कि वह लोगों को अपनी रुचि का

पेशा करने के लिए सक्षम बनाए। जाति-प्रथा में यह दोष है कि इसमें मनुष्य का पेशा उसके प्रशिक्षण या उसकी निजी क्षमता के आधार पर न करके उसके माता-पिता के सामाजिक स्तर से किया जाता है। यह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है। ऐसी दशा में उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में परिवर्तन से भूखों मरने की नौबत आ जाती है। हिंदू धर्म में पेशा बदलने की अनुमति न होने के कारण कई बार बेरोजगारी की समस्या उभर आती है।

जाति-प्रथा का श्रम-विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता। इसमें व्यक्तिगत रुचि व भावना का कोई स्थान नहीं होता। पूर्व लेख ही इसका आधार है। ऐसी स्थिति में लोग काम में अरुचि दिखाते हैं। अत: आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक है क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें स्वाभाविक नियमों में जकड़कर निष्क्रिय बना देती है।

मेरी कल्पना का आदर्श समाज

प्रतिपादय- इस पाठ में लेखक ने बताया है कि आदर्श समाज में तीन तत्व अनिवार्यत: होने चाहिए-समानता, स्वतंत्रता व बंधुता। इनसे लोकतंत्र सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया के अर्थ तक पहुँच सकता है।

सारांश- लेखक का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृता पर आधारित होगा। समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी परिवर्तन समाज में तुरंत प्रसारित हो जाए। ऐसे समाज में सबका सब कार्यों में भाग होना चाहिए तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सबको संपर्क के साधन व अवसर मिलने चाहिए। यही लोकतंत्र है। लोकतंत्र मूलत: सामाजिक जीवनचर्या की एक रीति व समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। आवागमन, जीवन व शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता, संपत्ति, जीविकोपार्जन के लिए जरूरी औजार व सामग्री रखने के अधिकार की स्वतंत्रता पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती, परंतु मनुष्य के सक्षम व प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए लोग तैयार नहीं हैं। इसके लिए व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देनी होती है। इस स्वतंत्रता के अभाव में व्यक्ति 'दासता' में जकड़ा रहेगा।

'दासता' केवल कानूनी नहीं होती। यह वहाँ भी है जहाँ कुछ लोगों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। फ्रांसीसी क्रांति के नारे में 'समता' शब्द सदैव विवादित रहा है। समता के आलोचक कहते हैं कि सभी मनुष्य बराबर नहीं होते। यह सत्य होते हुए भी महत्व नहीं रखता क्योंकि समता असंभव होते हुए भी नियामक सिद्धांत है। मनुष्य की क्षमता तीन बातों पर निर्भर है: 1- शारीरिक वंश परंपरा 2- सामाजिक उत्तराधिकार, 3-मनुष्य के अपने प्रयत्न।

इन तीनों दृष्टियों से मनुष्य समान नहीं होते, परंतु क्या इन तीनों कारणों से व्यक्ति से असमान व्यवहार करना चाहिए। असमान प्रयत्न के कारण असमान व्यवहार अनुचित नहीं है, परंतु हर व्यक्ति को विकास करने के अवसर मिलने चाहिए। लेखक का मानना है कि उच्च वर्ग के लोग उत्तम व्यवहार के मुकाबले में निश्चय ही जीतेंगे क्योंकि उत्तम व्यवहार का निर्णय भी संपन्नों को ही करना होगा। प्रयास मनुष्य के वश में है, परंतु वंश व सामाजिक प्रतिष्ठा उसके वश में नहीं है। अत: वंश और सामाजिकता के नाम पर असमानता अनुचित है। एक राजनेता को अनेक लोगों से मिलना होता है। उसके पास हर व्यक्ति के लिए अलग व्यवहार करने का समय नहीं होता। ऐसे में वह व्यवहार्य सिद्धांत का पालन करता है कि सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए। वह सबसे व्यवहार इसलिए करता है क्योंकि वर्गीकरण व श्रेणीकरण संभव नहीं है। समता एक काल्पनिक वस्तु है, फिर भी राजनीतिज्ञों के लिए यही एकमात्र उपाय व मार्ग है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न-1 जाति-प्रथा के समर्थक किस कारण से जाति-प्रथा का पोषण करते हैं?

(क) यह कार्य-कुशलता के लिए आवश्यक है

(ख) इससे समाज में अव्यवस्था फैलती है

(ग) समाज में लोगों की पहचान बनी रहती है

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-2 जाति-प्रथा स्वस्थ समाज के लिए एक बुराई क्यों है?

(क) यह श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है

(ख) यह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती

(ग) यह लोगों को अपनी रुचि का पेशा करने से रोकती है

(घ) इनमें से सभी

प्रश्न-3 लेखक ने भारतीय समाज में बेरोजगारी और भुखमरी का कारण किसे बताया है?

(क) श्रम-विभाजन को

(ख) जाति-प्रथा को

(ग) स्वतंत्रता को

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-4 लेखक के अनुसार जाति-प्रथा कौन-सा पेशा करने की अनुमति देती है?

(क) निजी पेशा

(ख) स्वतंत्र पेशा

(ग) पैतृक पेशा

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-5 स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता पर आधारित समाज को लेखक ने कैसा समाज कहा है?

(क) मिश्रित समाज

(ख) स्वतंत्र समाज

(ग) आदर्श समाज

(घ) बहुल समाज

प्रश्न-6 लेखक ने कितने तरह की दासता का उल्लेख किया है?

(क) दो तरह की

(ख) तीन तरह की

(ग) चार तरह की

(घ) पाँच तरह की

प्रश्न-7 'समता' शब्द का नारा किस क्रांति में लगाया लगाया गया था?

(क) रूसी क्रांति में

(ख) जर्मन क्रांति में

(ग) अमेरिकन क्रांति में

(घ) फ्रांसीसी क्रांति में

प्रश्न-8 'श्रम-विभाजन' किस आधार पर उचित है?

(क) रूचि और क्षमता के आधार पर

(ख) जाति के आधार पर

(ग) व्यवसाय के आधार पर

(घ) जन्म के आधार पर

प्रश्न-9 आधुनिक युग में कब अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ती है?

(क) धन अर्जित करने के कारण

(ख) जाति-प्रथा के कारण

(ग) अधिक शिक्षित हो जाने कारण

(घ) तकनीकी विकास एवं बदलाव के कारण

प्रश्न-10 समाज के सभी लोगों को आरंभ से ही क्या उपलब्ध कराना चाहिए?

(क) अच्छा घर

(ख) असमान अवसर

(ग) समान अवसर

(घ) तकनीकी प्रशिक्षण

उत्तर-

1-(क) यह कार्य-कुशलता के लिए आवश्यक है 2-(घ) इनमें से सभी (3)- (ख) जाति-प्रथा को 4-(ग) पैतृक पेशा 5-(ग) आदर्श समाज 6-(ख) तीन तरह की 7-(घ) फ्रांसीसी क्रांति में 8-(क) रूचि और क्षमता के आधार पर 9-(घ) तकनीकी विकास एवं बदलाव के कारण 10-(ग) समान अवसर

वितान भाग -2

सिल्वर वैडिंग - मनोहर श्याम जोशी

पाठ का सारांश

यह लंबी कहानी लेखक की अन्य रचनाओं से कुछ अलग दिखाई देती है। आधुनिकता की ओर बढ़ता हमारा समाज एक ओर कई नई उपलब्धियों को समेटे हुए है तो दूसरी ओर मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने वाले मूल्य कहीं घिसते चले गए हैं। **जो हुआ होगा** और **समहाउ इंप्रापर** के दो जुमले इस कहानी के बीज वाक्य हैं। **जो हुआ होगा** में यथास्थितिवाद यानी ज्यों-का-त्यों स्वीकार लेने का भाव है तो **समहाउ इंप्रापर** में एक अनिर्णय की स्थिति भी है। ये दोनों ही भाव इस कहानी के मुख्य चरित्र यशोधर बाबू के भीतर के द्वंद्व हैं। वे इन स्थितियों का जिम्मेदार भी किसी व्यक्ति को नहीं ठहराते। वे अनिर्णय की स्थिति में हैं।

दफ़्तर में सेक्शन अफ़सर यशोधर पंत ने जब आखिरी फ़ाइल का काम पूरा किया तो दफ़्तर की घड़ी में पाँच बजकर पच्चीस मिनट हुए थे। वे अपनी घड़ी सुबह-शाम रेडियो समाचारों से मिलाते हैं, इसलिए वे दफ़्तर की घड़ी को सुस्त बताते हैं। इनके कारण अधीनस्थ को भी पाँच बजे के बाद भी रुकना पड़ता है। वापसी के समय वे किशन दा की उस परंपरा का निर्वाह करते हैं जिसमें जूनियरों से हल्का मजाक किया जाता है। दफ़्तर में नए असिस्टेंट चड्ढा की चौड़ी मोहरी वाली पतलून और ऊँची एड़ी वाले जूते पंत जी को 'समहाउ इंप्रापर' मालूम होते हैं। उसने थोड़ी बदतमीजीपूर्ण व्यवहार करते हुए पंत जी की चूनेदानी (कलाई घड़ी) का हाल पूछा। पंत जी ने उसे जवाब दिया। फिर चड्ढा ने पंत जी की कलाई थाम ली और कहा कि यह पुरानी है। अब तो डिजिटल जापानी घड़ी ले लो। सस्ती मिल जाती है। पंत जी उसे बताते हैं कि यह घड़ी उन्हें शादी में मिली है। यह घड़ी भी उनकी तरह ही पुरानी हो गई है। अभी तक यह सही समय बता रही है।

इस तरह जवाब देने के बाद एक हाथ बढ़ाने की परंपरा पंत जी ने अल्मोड़ा के रेम्जे स्कूल में सीखी थी। ऐसी परंपरा किशन दा के क्वार्टर में भी थी जहाँ यशोधर को शरण मिली थी। किशन दा कुंआरे थे और पहाड़ी लड़कों को आश्रय देते थे। पंत जी जब दिल्ली आए थे तो उनकी उम्र सरकारी नौकरी के लिए कम थी। तब किशन दा ने उन्हें मैस का रसोइया बनाकर रख लिया। उन्होंने यशोधर को कपड़े बनवाने व घर पैसा भेजने के लिए पचास रुपये दिए। इस तरह वे स्मृतियों में खो गए। तभी चड्ढा की आवाज से वे जाग्रत हुए और मेनन द्वारा शादी के संबंध में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए कहने लगे- 'नाव लेट मी सी, आई वॉज़ मैरिड ऑन सिक्स्थ फरवरी नाइंटीन फ़ोर्टी सेवन।'

मेनन ने उन्हें 'सिल्वर वैडिंग की बधाई दी। यशोधर खुश होते हुए झेंपे और झेंपते हुए खुश हुए। फिर भी वे इन सब बातों को अंग्रेजों के चोंचले बताते हैं, किंतु चड्ढा उनसे चाय-मट्ठी व लड्डू की माँग करता है। यशोधर जी दस रुपये का नोट चाय के लिए देते हैं, परंतु उन्हें यह 'समहाउ इंप्रॉपर' लगता है। अत: सारे सेक्शन के आग्रह पर भी वे चाय पार्टी में शरीक

नहीं होते है। चड्ढा के जोर देने पर वे बीस रुपये और दे देते हैं, किंतु आयोजन में सम्मिलित नहीं होते। उनके साथ बैठकर चाय-पानी और गप्प-गप्पाष्टक में वक्त बरबाद करना उनकी परंपरा के विरुद्ध है।

यशोधर बाबू ने इधर रोज बिड़ला मंदिर जाने और उसके उद्यान में बैठकर प्रवचन सुनने या स्वयं ही प्रभु का ध्यान लगाने की नयी रीति अपनाई है। यह बात उनकी पत्नी व बच्चों को अखरती थी। क्योंकि वे बुजुर्ग नहीं थे। बिड़ला मंदिर से उठकर वे पहाड़गंज जाते और घर के लिए साग-सब्जी लाते। इसी समय वे मिलने वालों से मिलते थे। घर पर वे आठ बजे से पहले नहीं पहुँचते थे।

आज यशोधर जब बिड़ला मंदिर जा रहे थे तो उनकी नजर किशन दा के तीन बेडरूम वाले क्वार्टर पर पड़ी। अब वहाँ छह-मंजिला मकान बन रहा है। उन्हें बहुमंजिली इमारतें अच्छी नहीं लग रही थीं। यही कारण है कि उन्हें उनके पद के अनुकूल एंड्रयूजगंज, लक्ष्मीबाई नगर पर डी-2 टाइप अच्छे क्वार्टर मिलने का ऑफ़र भी स्वीकार्य नहीं है और वे यहीं बसे रहना चाहते हैं। जब उनका क्वार्टर टूटने लगा तब उन्होंने शेष क्वार्टर में से एक अपने नाम अलाट करवा लिया। वे किशन दा की स्मृति के लिए यहीं रहना चाहते थे।

पिछले कई वर्षों से यशोधर बाबू का अपनी पत्नी व बच्चों से हर छोटी-बड़ी बात पर मतभेद होने लगा है। इसी वजह से उन्हें घर जल्दी लौटना अच्छा नहीं लगता था। उनका बड़ा लड़का एक प्रमुख विज्ञापन संस्था में नौकरी पर लग गया था। यशोधर बाबू को यह भी 'समहाउ इम्प्रोपर' लगता था क्योंकि यह कंपनी शुरू में ही डेढ़ हजार रुपये प्रतिमाह वेतन देती थी। उन्हें कुछ गड़बड़ लगती थी। उनका दूसरा बेटा आई०ए०एस० की तैयारी कर रहा था। उसका एलाइड सर्विसेज में न जाना भी उनको अच्छा नहीं लगता। उनका तीसरा बेटा स्कॉलरशिप लेकर अमेरिका चला गया। उनकी एकमात्र बेटी शादी से इनकार करती है। साथ ही वह डॉक्टरी की उच्चतम शिक्षा के लिए अमेरिका जाने की धमकी भी देती है। वे अपने बच्चों की तरक्की से खुश हैं, परंतु उनके साथ सामंजस्य नहीं बैठा पाते।

यशोधर की पत्नी संस्कारों से आधुनिक नहीं है, परंतु बच्चों के दबाव से वह मॉडर्न बन गई है। शादी के समय भी उसे संयुक्त परिवार का दबाव झेलना पड़ा था। यशोधर ने उसे आचार-व्यवहार के बंधनों में रखा। अब वह बच्चों का पक्ष लेती है तथा खुद भी अपनी सहूलियत के हिसाब से यशोधर की बातें मानने की बात कहती है। यशोधर उसे 'शानयल बुढ़िया', 'चटाई का लहँगा' या 'बूढ़ी मुँह मुँहासे, लोग करें तमासे' कहकर उसके विद्रोह का मजाक उड़ाते हैं, परंतु वे खुद ही तमाशा बनकर रह गए। किशन दा के क्वार्टर के सामने खड़े होकर वे सोचते हैं कि वे शादी न करके पूरा जीवन समाज को समर्पित कर देते तो अच्छा होता।

यशोधर ने सोचा कि किशन दा का बुढ़ापा कभी सुखी नहीं रहा। उनके तमाम साथियों ने मकान ले लिए। रिटायरमेंट के बाद किसी ने भी उन्हें अपने पास रहने की पेशकश नहीं की। स्वयं यशोधर भी यह पेशकश नहीं कर पाए क्योंकि वे शादीशुदा थे। किशन दा कुछ समय किराये के मकान में रहे और फिर अपने गाँव लौट गए। सालभर बाद उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें कोई बीमारी भी नहीं हुई थी। यशोधर को इसका कारण भी पता नहीं। वे किशन दा की यह बात याद रखते थे कि जिम्मेदारी पड़ने पर हर व्यक्ति समझदार हो जाता है।

वे मन-ही-मन यह स्वीकार करते थे कि दुनियादारी में उनके बीवी-बच्चे अधिक सुलझे हुए हैं, परंतु वे अपने सिद्धांत नहीं छोड़ सकते। वे मकान भी नहीं लेंगे। किशन दा कहते थे कि मूरख लोग मकान बनाते हैं, सयाने उनमें रहते हैं। रिटायरमेंट होने पर गाँव के पुश्तैनी घर चले जाओ। वे इस बात को आज भी सही मानते हैं। उन्हें पता है कि गाँव का पुश्तैनी घर टूट-फूट चुका है तथा उस पर अनेक लोगों का हक है। उन्हें लगता है कि रिटायरमेंट से पहले कोई लड़का सरकारी नौकरी में आ जाएगा और क्वार्टर उनके पास रहेगा। ऐसा न होने पर क्या होगा, इसका जवाब उनके पास नहीं होता।

बिड़ला मंदिर के प्रवचनों में उनका मन नहीं लगा। उम्र ढलने के साथ किशन दा की तरह रोज मंदिर जाने, संध्या-पूजा करने और गीता-प्रेस गोरखपुर की किताबें पढ़ने का यत्न करने लगे। मन के विरोध को भी वे अपने तर्कों से खत्म कर देते हैं। गीता के पाठ में 'जनार्दन' शब्द सुनने से उन्हें अपने जीजा जनार्दन जोशी की याद आई। उनकी चिट्ठी से पता चला कि वे बीमार है। यशोधर बाबू अहमदाबाद जाना चाहते हैं, परंतु पत्नी व बच्चे उनका विरोध करते हैं। यशोधर खुशी-गम के हर मौके पर रिश्तेदारों के यहाँ जाना जरूरी समझते हैं तथा बच्चों को भी वैसा बनाने की इच्छा रखते हैं। किंतु उस दिन हद हो गई जिस दिन कमाऊ बेटे ने यह कह दिया कि "आपको बुआ को भेजने के लिए पैसे मैं तो नहीं दूँगा।"

यशोधर की पत्नी का कहना है कि उन्होंने बचपन में कुछ नहीं देखा। माँ के मरने के बाद विधवा बुआ ने यशोधर का पालन-पोषण किया। मैट्रिक पास करके दिल्ली में किशन दा के पास रहे। वे भी कुंवारे थे तथा उन्हें भी कुछ नहीं पता था।

अत: वे नए परिवर्तनों से वाकिफ़ नहीं थे। उन्हें धार्मिक प्रवचन सुनते हुए भी पारिवारिक चिंतन में डूबे रहना अच्छा नहीं लगा। ध्यान लगाने का कार्य रिटायरमेंट के बाद ठीक रहता है। जब तक किशन दा दिल्ली में रहे, तब तक यशोधर बाबू ने उनके पट्टशिष्य और उत्साही कार्यकर्ता की भूमिका पूरी निष्ठा से निभाई। उनके जाने के बाद घर में होली गवाना, रामलीला के लिए क्वार्टर का एक कमरा देना, 'जन्यो पुन्यू' के दिन सब कुमाऊँनियों को जनेऊ बदलने के लिए घर बुलाना आदि कार्य वे पत्नी व बच्चों के विरोध के बावजूद करते हैं। वे यह भी चाहते हैं कि बच्चे उनसे सलाह लें, परंतु बच्चे उन्हें सदैव उपेक्षित करते हैं। प्रवचन सुनने के बाद यशोधर बाबू सब्जी मंडी गए। वे चाहते थे कि उनके लड़के घर का सामान खुद लाएँ, परंतु उनकी आपस की लड़ाई से उन्होंने इस विषय को उठाना ही बंद कर दिया। बच्चे चाहते थे कि वे इन कामों के लिए नौकर रख लें। यशोधर को यही 'समहाउ इंप्रॉपर' मालूम होता है कि उनका बेटा अपना वेतन उन्हें दे। क्या वह ज्वाइंट एकाउंट नहीं खोल सकता था? उनके ऊपर, वह हर काम अपने पैसे से करने की धौंस देता है। घर में वह तमाम परिवर्तन अपने पैसों से कर रहा है। वह हर चीज पर अपना हक समझता है। सब्जी लेकर वे अपने क्वार्टर पहुँचे। वहाँ एक तख्ती पर लिखा था-वाई०डी० पंत। उन्हें पहले गलत जगह आने का धोखा हुआ। घर के बाहर एक कार थी। कुछ स्कूटर, मोटर-साइकिलें थीं तथा लोग विदा ले-दे रहे थे। बाहर बरामदे में रंगीन कागजों की झालरें व गुब्बारे लटक रहे थे। उन्होंने अपने बेटे को कार में बैठे किसी साहब से हाथ मिलाते देखा। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उन्होंने अपनी पत्नी व बेटी को बरामदे में खड़ा देखा जो कुछ मेमसाबों को विदा कर रही थीं। लड़की जींस व बगैर बाँह का टॉप पहने हुए थी। पत्नी ने होंठों पर लाली व बालों में खिजाब लगाया हुआ था। यशोधर को यह सब 'समहाउ इंप्रापर' लगता था।

यशोधर चुपचाप घर पहुँचे तो बड़े बेटे ने देर से आने का उलाहना दिया। यशोधर ने शर्मीली-सी हँसी हँसते हुए पूछा कि हम लोगों के यहाँ सिल्वर वैडिंग कब से होने लगी है? यशोधर के दूर के भांजे ने कहा, "जबसे तुम्हारा बेटा डेढ़ हजार महीने कमाने लगा है, तब से।" यशोधर को अपनी सिल्वर बैडिंग की यह पार्टी भी अच्छी नहीं लगी। उन्हें यह मलाल था कि सुबह ऑफ़िस जाते समय तक किसी ने उनसे इस आयोजन की चर्चा नहीं की थी। उनके पुत्र भूषण ने जब अपने मित्रों-सहयोगियों से यशोधर बाबू का परिचय करवाया तो उस समय उन्होंने प्रश्नयास किया कि भले ही वे संस्कारी कुमाऊँनी हैं तथापि विलायती रीति-रिवाज भी अच्छी तरह परिचित होने का एहसास कराएँ। बच्चों के आग्रह पर यशोधर बाबू अपनी शादी की सालगिरह पर केक काटने के स्थान पर जाकर खड़े हो गए। फिर बेटी के कहने पर उन्होंने केक भी काटा, जबकि उन्होंने कहा-'समहाउ आई डोंट लाइक आल दिस।" परंतु उन्होंने केक नहीं खाया क्योंकि इसमें अंडा होता है। अधिक आग्रह पर उन्होंने संध्या न करने का बहाना किया तथा पूजा में चले गए। आज उन्होंने पूजा में देर लगाई ताकि अधिकतर मेहमान चले जाएँ। यहाँ भी उन्हें किशन दा दिखाई दिए। उन्होंने पूछा कि 'जो हुआ होगा' से आप कैसे मर गए? किशन दा कह रहे थे कि भाऊ सभी जन इसी 'जो हुआ होगा' से मरते हैं चाहे वह गृहस्थ हो या ब्रहमचारी, अमीर हो या गरीब। शुरू और आखिर में सब अकेले ही होते हैं।

यशोधर बाबू को लगता है कि किशन दा आज भी उनका मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं और यह बताने में भी कि मेरे बीवी-बच्चे जो कुछ भी कर रहे हैं, उनके विषय में मेरा रवैया क्या होना चाहिए? किशन दा अकेलेपन का राग अलाप रहे थे। उनका मानना था कि यह सब माया है। जो भूषण आज इतना उछल रहा है, वह भी किसी दिन इतना ही अकेला और असहाय अनुभव करेगा, जितना कि आज तू कर रहा है। इस बीच यशोधर की पत्नी ने वहाँ आकर झिड़कते हुए पूछा कि आज पूजा में ही बैठे रहोगे। मेहमानों के जाने की बात सुनकर वे लाल गमछे में ही बैठक में चले गए। बच्चे इस परंपरा के सख्त खिलाफ़ थे। उनकी बेटी इस बात पर बहुत झल्लाई। टेबल पर रखे प्रेजेंट खोलने की बात कही। भूषण उनको खोलता है कि यह ऊनी ड्रेसिंग गाउन है। सुबह दूध लाने के समय आप फटा हुआ पुलोवर पहनकर चले जाते हैं, वह बुरा लगता है। बेटी पिता का पाजामा-कुर्ता उठा लाई कि इसे पहनकर गाउन पहनें। बच्चों के आग्रह पर वे गाउन पहन लेते हैं। उनकी आँखों की कोर में जरा-सी नमी चमक गई। यह कहना कठिन है कि उनको भूषण की यह बात चुभ गई कि आप इसे पहनकर दूध लेने जाया करें। वह स्वयं दूध लाने की बात नहीं कर रहा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न-1 सिल्वर वैडिंग पाठ के लेखक हैं-

(क) कुँवर नारायण

(ख) जैनेन्द्र कुमार
(ग) मनोहर श्याम जोशी
(घ) आनंद यादव

प्रश्न-2 सिल्वर वैडिंग पाठ में यशोधर पंत के आदर्श पुरुष हैं-
(क) किशन दा
(ख) चन्द्रदत्त तिवारी
(ग) भूषण
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-3 यशोधर बाबू घर से ऑफिस किस साधन से आया-जाया करते थे?
(क) साइकिल से
(ख) कार से
(ग) स्कूटर से
(घ) पैदल ही

प्रश्न-4 यशोधर बाबू की शादी किस वर्ष हुई थी?
(क) 1947 ई. में
(ख) 1974 ई. में
(ग) 1946 ई. में
(घ) 1973 ई. में

प्रश्न-5 'सिल्वर वैडिंग' पाठ में आये 'गधा पच्चीसी' का क्या मतलब है?
(क) बचपन
(ख) बुढ़ापा
(ग) जवानी
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-6 यशोधर बाबू की पत्नी किसका पक्ष लेती है?
(क) वाई डी पंत का
(ख) किशन दा का
(ग) अपने बच्चों का
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-7 किशन दा की मौत किस कारण से हुई?
(क) बुढ़ापे के कारण
(ख) जो हुआ होगा से
(ग) अजनबीपन से
(घ) बेगानेपन से

प्रश्न-8 सिल्वर वैडिंग पाठ में चूनेदानी किसे कहा गया है?
(क) ऑफिस की घड़ी को
(ख) गैस चूल्हे को
(ग) कलाई घड़ी को
(घ) किनारीदार साड़ी को

प्रश्न-9 संध्या की पूजा में बैठे यशोधर बाबू को कौन दिखाई दे रहा था?
(क) किशन दा
(ख) बड़ा बेटा भूषण
(ग) उनकी बुआ
(घ) उनकी पत्नी

प्रश्न-10 यशोधर बाबू को भूषण ने गिफ्ट में क्या दिया था?

(क) ऊनी स्वेटर

(ख) रेशमी टोपी

(ग) सूती तौलिया

(घ) ऊनी गाउन

उत्तर-

1-(ग) मनोहर श्याम जोशी 2-(क) किशन दा 3-(घ) पैदल ही 4-(क) 1947 ई. में 5-(ग) जवानी 6-(ग) अपने बच्चों का 7-(ख) जो हुआ होगा से 8-(ग) कलाई घड़ी को 9-(क) किशन दा 10-(घ) ऊनी गाउन

जूझ - आनंद यादव

पाठ का सारांश

यह पाठ लेखक के बहुचर्चित आत्मकथात्मक उपन्यास अंश का है। यह एक किशोर के देखे और भोगे हुए गँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ और उसके रंगारंग परिवेश की मजेदार और विश्वसनीय जीवंत गाथा है। इस आत्मकथात्मक उपन्यास में निम्न मध्यवर्गीय मराठी कृषक जीवन की अनूठी झाँकी प्रस्तुत हुई है। इस अंश में हर स्थिति में पढ़ने की लालसा लिए धीरे-धीरे साहित्य, संगीत और अन्य विषयों की ओर बढ़ते किशोर के कदमों की आकुल आहट सुनी जा सकती है। लेखक के पिता ने उसे पाठशाला जाने से रोक दिया तथा खेती के काम में लगा दिया। उसका मन पाठशाला जाने के लिए तड़पता था, परंतु वह पिता से कुछ कहने की हिम्मत नहीं रखता था। उसे पिटाई का डर था। उसे विश्वास था कि खेती से कुछ नहीं मिलने वाला क्योंकि क्रमश: इससे मिलनेवाला लाभ घट रहा है। पढ़ने के बाद नौकरी लगने पर उसके पास कुछ पैसे आ जाएँगे। दीवाली के बाद ईख पेरने के लिए कोल्हू चलाया जाता था क्योंकि उसके पिता को सबसे पहले गुड़ बेचना होता था ताकि अधिक कीमत मिल सके। हालाँकि पहले ईख काटने से उसमें रस कम निकलता था। इस वर्ष भी लेखक के पिता ने जल्दी कार्य शुरू किया। अत: ईख पेरने का काम सबसे पहले संपन्न हो गया। एक दिन लेखक की माँ धूप में कंडे थाप रही थी और वह बाल्टी में पानी भर-भरकर उसे दे रहा था। अच्छा मौका देखकर लेखक ने माँ से पढ़ाई की बात की माँ ने अपनी लाचारी प्रकट करते हुए कहा कि तेरी पढ़ाई-लिखाई की बात करने पर वह बरहेला सुअर की तरह गुर्राता है। लेखक ने सुझाव दिया कि वह दत्ता जी राव सरकार से उसकी पढ़ाई के बारे में बात करे। माँ तैयार हो गई। वह बच्चे की तड़पन समझती थी।

अत: लेखक की पढ़ाई के संबंध में बात करने के लिए दत्ता जी राव देसाई के पास गई और उनसे सारी बात बताई। उसने यह भी बताया कि दादा सारे दिन बाजार में रखमाबाई के पास गुजार देता है। वह खेती का काम नहीं करता। उसने बच्चे की पढ़ाई इसलिए बंद कर दी ताकि वह सारे गाँव भर में आजादी के साथ घूमता रहे। यह बात सुनकर देसाई चिढ़ गए। चलते-चलते लेखक ने यह भी कहा कि यदि वह अब भी कक्षा में पढ़ने लगे तो दो महीने में पाँचवीं पास कर लेगा और इस तरह उसका साल बच जाएगा। पहले ही उसका एक साल खराब हो चुका था। राव ने लेखक से कहा कि घर आने पर दादा को मेरे पास भेज देना और घड़ी भर बाद तुम भी आ जाना। माँ-बेटा ने राव को सचेत किया कि हमारे आने की बात उसे मत बताना। राव ने उन्हें निर्भय होकर जाने को कहा। रात को दादा घर पर मालिक दिखाई नहीं दिया। खेत से आ जाने पर इधर भेजना।

यह सुनकर दादा सम्मान की बात समझकर तुरंत चला गया। आधा घंटे बाद लेखक उन्हें खाने के लिए बुलाने चला गया। राव ने लेखक से पूछा कि कौन-सी कक्षा में पढ़ता है रे तू? लेखक ने बताया कि वह पाँचवीं में था, पर अब स्कूल नहीं जाता क्योंकि दादा ने मना कर दिया। उन्हें खेतों में पानी लगाने वाला चाहिए था। राव ने दादा से पूछा तो उसने लेखक के कथन को स्वीकार कर लिया। देसाई ने दादा को खूब फटकार लगाई और कहा कि तुम्हारा ध्यान खेती में नहीं है। बीवी-बच्चों को खेत में जोतकर खुले साँड़ की तरह घूमता है तथा अपनी मस्ती के लिए लड़के के जीवन की बलि चढ़ा रहा है। उसने लेखक को कहा कि तू सवेरे पाठशाला जा तथा मन लगाकर पढ़। यदि यह मना करे तो मेरे पास आना। मैं तुझे पढ़ाऊँगा। लेखक के पिता ने उस पर गलत आदतों का आरोप लगाया-कंडे बेचना, चारा बेचना, सिनेमा देखना या जुआ खेलना, खेती व घर के काम पर ध्यान न देना आदि। लेखक ने अपने उत्तर से उन्हें संतुष्ट कर दिया।

देसाई ने पूछा कि कभी नापास तो नहीं हुआ। लेखक के मना करने पर उसे पाठशाला जाने का आदेश देकर घर भेज दिया। बाद में उसने रतनाप्पा को समझाया। दादा ने भी पाठशाला भेजने की हामी भर दी। घर आकर दादा ने लेखक से यह वचन ले लिया कि दिन निकलते ही खेत पर जाना और वहीं से पाठशाला पहुँचना। । पाठशाला से छुट्टी होते ही घर में बस्ता रखकर सीधे खेत पर आकर घंटा भर ढोर चराना और खेतों में ज्यादा काम होने पर पाठशाला से गैर-हाजिर रहना होगा। लेखक ने सभी शर्तें स्वीकार कर लीं। लेखक पाँचवीं कक्षा में जाकर बैठने लगा। कक्षा के दो लड़कों को छोड़कर सभी नए बच्चे थे। वह बाहरी-अपरिचित जैसा एक बेंच के एक सिरे पर कोने में जा बैठा। वह पुरानी किताबों को ही थैले में भर लाया। कक्षा के शरारती लड़के ने उसका मजाक उड़ाया और उसका गमछा छीनकर मास्टर की मेज पर रख दिया। फिर उसे सिर पर लपेटकर मास्टर की नकल उतारनी शुरू की। तभी मास्टर जी आ गए। लेखक ने उसे सब कुछ बता दिया। बीच की छुट्टी में लड़कों ने उसकी धोती खोलने की कोशिश की, परंतु असफल रहे। वे उसे तरह-तरह से परेशान करते रहे। उसका मन उदास हो गया। उसने माँ से नयी टोपी व दो नाड़ी वाली चड्डी मैलखाऊ रंग की मैंगवा ली। धीरे-धीरे लड़कों से परिचय बढ़ गया। मंत्री नामक मास्टर आए। वे छड़ी का उपयोग नहीं करते थे। वे लड़के की पीठ पर घूसा लगाते थे। शरारती लड़के उनसे बहुत डरते थे। वे गणित पढ़ाते थे।

इस कक्षा में वसंत पाटील नाम का कमजोर शरीर वाला व होशियार लड़का था। वह शांत स्वभाव का था तथा हमेशा पढ़ने में लगा रहता था। मास्टर ने उसे कक्षा मॉनीटर बना दिया था। लेखक भी उसकी तरह पढ़ने में लगा रहा। वह अपनी कापी-किताबों को व्यवस्थित रखने लगा। शीघ्र ही वह गणित में होशियार हो गया। दोनों में दोस्ती हो गई। मास्टर लेखक को 'आनंदा' कहने लगे। अब उसका मन पाठशाला में लगने लगा। न०वा० सौंदलगेकर मास्टर मराठी पढ़ाते थे। पढ़ाते समय वे स्वयं रम जाते थे। सुरीले कंठ, छद व रसिकता के कारण वे कविता बहुत अच्छी पढ़ाते थे। उन्हें मराठी व अंग्रेजी की अनेक कविताएँ याद थीं। वे कविता के साथ ऐसे जुड़े थे कि अभिनय करके भावबोध कराते थे। वे स्वयं भी कविता रचते थे। लेखक उनसे बहुत प्रभावित था। खेत पर पानी लगाते समय या ढोर चराते समय वह मास्टर के अनुसार ही कविताएँ गाता था। वह उन्हीं की तरह अभिनय करता। उसी समय उसे अनुभव हुआ कि अन्य कविताएँ भी इसी तरह पढ़ी जा सकती हैं। लेखक को महसूस हुआ कि पहले जिस काम को करते हुए उसे अकेलापन खटकता था, अब वह समाप्त हो गया। उसे एकांत अच्छा लगने लगा। एकांत के कारण वह ऊँचे स्वर में कविता गा सकता था, नृत्य कर सकता था। उसने कविता गाने की अपनी पद्धति विकसित की। वह अभिनय के साथ गाने लगा तथा अब उसके चेहरे पर कविता के भाव आने लगे। मास्टर को लेखक का गायन अच्छा लगा और उससे छठी-सातवीं कक्षा के बालकों के सामने गवाया। पाठशाला के एक समारोह में भी उससे गवाया। मास्टर स्वयं कविता रचते थे। उनके पास मराठी कवियों के काव्य-संग्रह थे। वे उन कवियों के संस्मरण भी सुनाते थे। इस कारण अब वे कवि उसे 'आदमी' लगने लगे थे।

सौंदलगेकर स्वयं कवि थे। इस कारण लेखक को यह विश्वास हुआ कि कवि भी उसकी तरह ही हाड़-मांस का व क्रोध-लोभ का मनुष्य होता है। लेखक को लगा कि वह स्वयं भी कविता कर सकता है। मास्टर ने अपने दरवाजे पर छाई हुई मालती की बेल पर एक कविता लिखी। लेखक ने मालती लता व कविता दोनों ही देखी थी। इससे उसे लगा कि वह अपने आस-पास, अपने गाँव, खेतों आदि पर कविता बना सकता है।

भैंस चराते-चराते वह फसलों व जंगली फूलों पर तुकबंदी करने लगा। वह उन्हें जोर से गुनगुनाता तथा मास्टर को दिखाता। कविता लिखने के लिए वह कागज व पेंसिल रखने लगा। उनके न होने पर वह लकड़ी के छोटे टुकड़े से भैंस की पीठ पर रेखा खींचकर लिखता या पत्थर की शिला पर कंकड़ से लिख लेता। कंठस्थ हो जाने पर उसे पोंछ देता। वह अपनी कविता मास्टर को दिखाता था। कभी-कभी वह रात को ही मास्टर के घर जाकर कविता दिखाता। वे उसे कविता के शास्त्र के बारे में समझाते। वे उसे छद, अलंकार, शुद्ध लेखन, लय का ज्ञान कराते। वे उसे पुस्तकें व कविता-संग्रह भी देते थे। उन्होंने उसे कविता रचने के अनेक ढर्रे सिखाए। शब्दों का महत्व एवं उसका उचित प्रयोग जल्दी ही उसकी समझ में आने लगा। इस प्रकार लेखक को मास्टर की निकटता मिलती गई और उसकी मराठी भाषा में सुधार आने लगा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न-1 'जूझ' शब्द का अर्थ है-

(क) यातना

(ख) संघर्ष

(ग) विराम

(घ) मेहनत

प्रश्न-2 'जूझ' पाठ में लेखक अपनी पढ़ाई के विषय में किससे कहता है?

(क) अपने पिता से

(ख) दत्ताजी राव से

(ग) अपनी माँ से

(घ) सौन्दलगेकर से

प्रश्न-3 'जूझ' पाठ में लेखक को कक्षा में किसका साथ मिलता है?

(क) बसंत पाटिल का

(ख) रतनाप्पा का

(ग) मास्टर रणनवरे का

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-4 न. व. सौन्दलगेकर किस विषय के शिक्षक थे?

(क) अंग्रेजी

(ख) हिन्दी

(ग) संस्कृत

(घ) मराठी

प्रश्न-5 बच्चे को शिक्षा देने के विषय में दत्ताजी राव का नजरिया कैसा है?

(क) अनुचित है

(ख) उचित है

(ग) पक्षपातपूर्ण है

(घ) विरोध में है

प्रश्न-6 जूझ कहानी किस शैली में लिखी गई है?

(क) वर्णनात्मक शैली में

(ख) भावात्मक शैली

(ग) उपदेशात्मक शैली में

(घ) आत्मकथात्मक शैली

प्रश्न-7 लेखक की माँ उसे किस कक्षा तक पढ़ाना चाहती थी?

(क) सातवीं

(ख) आठवीं

(ग) पाँचवीं

(घ) आठवीं

प्रश्न-8 लेखक की कक्षा में गणित पढ़ने वाले मास्टर का क्या नाम था?

(क) आनंद

(ख) सौन्दलगेकर

(ग) मंत्री

(घ) दत्ताजी राव

प्रश्न-9 लेखक पहले दिन कक्षा में दीवार से पीठ सटाकर क्यों बैठ गया था?

(क) क्योंकि उसे पढ़ना अच्छा नहीं लगा

(ख) क्योंकि शरारती बच्चे उसकी धोती खोल देते थे

(ग) क्योंकि उसके कपड़े गंदे थे

(घ) क्योंकि उसकी पहचान का कोई बच्चा साथ नहीं था

प्रश्न-10 लेखक को कब लगा कि कवि भी हांड-मांस का बना होता है?

(क) मास्टर स्वयं एक कवि थे

(ख) वे कवियों के संस्मरण सुनाया करते थे

(ग) उनके पास मराठी कवियों के काव्य-संग्रह थे

(घ) इनमें से सभी

उत्तर- 1-(ख) संघर्ष 2-(ग) अपनी माँ से 3-(क) बसंत पाटिल का 4-(घ) मराठी 5-(ख) उचित है 6-(घ) आत्म- कथात्मक शैली 7-(क) सातवीं 8-(ग) मंत्री 9-(ख) क्योंकि शरारती बच्चे उसकी धोती खोल देते थे 10-(घ) इनमें से सभी

अतीत में दबे पाँव – ओम थानवी

पाठ का सारांश

'अतीत में दबे पाँव' साहित्यकार ओम थानवी' द्वारा विरचित एक यात्रा-वृतांत है। वे पाकिस्तान स्थित सिंधु घाटी सभ्यता के दो महानगरों। मोहनजोदड़ो (मुअनजोदड़ो) और हड़प्पा के अवशेषों को देखकर अतीत के सभ्यता और संस्कृति की कल्पना करते हैं। अभी तक जितने भी पुरातात्विक प्रमाण मिले उनको देखकर साहित्यकार अपनी कल्पना को साकार करने की चेष्टा करते हैं।

लेखक का मानना है कि मोहनजोदड़ो और हड़प्पा प्राचीन भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के दो सबसे पुराने और योजनाबद्ध तरीके से बसे शहर माने जाते हैं। वे मोहनजोदड़ो को ताम्रकाल का सबसे बड़ा शहर मानते हैं। लेखक के अनुसार मोहनजोदड़ो सिंधु घाटी सभ्यता का केंद्र है और शायद अपने जमाने की राजधानी जैसा। आज भी इस आदिम शहर की सड़कों और गलियों में सैर की जा सकती है। यह शहर अब भी वहीं है, जहाँ कभी था। आज भी वहाँ के टूटे घरों की रसोइयों में गंध महसूस की जा सकती है।

आज भी शहर के किसी सुनसान रास्ते पर खड़े होकर बैलगाड़ी की रुन-झुन की आवाजें सुनी जा सकती हैं। खंडहर बने घरों की टूटी सीढ़ियाँ अब चाहे कहीं न ले जाती हों, चाहे वे आकाश की ओर अधूरी रह गई हों, लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर यह अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर चढ़ गए हैं। वहाँ चढ़कर आप इतिहास को नहीं बल्कि उससे कहीं आगे देख रहे हैं।

मोहनजोदड़ो में सबसे ऊँचा चबूतरा बौद्ध स्तूप है। अब यह केवल मात्र एक टीला बनकर रह गया है। इस चबूतरे पर बौद्ध भिक्षुओं के कमर भी हैं। लेखक इसे नागर भारत का सबसे पुराना लैंडस्केप मानते हैं। इसे देखकर रोमांचित होना स्वाभाविक है। यह स्तूपवाला चबूतरा शहर के एक खास हिस्से में स्थित है। इस हिस्से को पुरातत्व के विद्वान 'गढ़' कहते हैं। ये 'गढ़' कभी-न-कभी राजसत्ता या धर्मसत्ता के केंद्र रहे होंगे ऐसा भी माना जा सकता है। इन शहरों की खुदाई से यह स्पष्ट हो जाता है कि बाकी बड़ी इमारतें, सभा-भवन, ज्ञानशाला सभी अतीत की चीजें कही जा सकती है परंतु यह 'गढ़ उस द्वितीय वास्तुकला कौशल के बाकी बचे नमूने हैं।

मोहनजोदड़ो शहर की संरचना नगर नियोजन का अनूठा प्रमाण है, उदाहरण है। यहाँ की सड़कें अधिकतर सीधी हैं या फिर आडी हैं। आज के वास्तुकार इसे 'ग्रिड प्लान' कहते हैं। आज के नगरों के सेक्टर कुछ इसी नियोजन से मेल खाते हैं। आधुनिक परिवेश के इन सेक्टरवादी नागरिकों में रहन-सहन को लेकर नीरसता आ गई है। प्रत्येक व्यक्ति अपने-आप में खोया हुआ है।

मोहनजोदड़ो शहर में जो स्तूप मिला है उसके चबूतरे के गढ़ के पीछे 'उच्च' वर्ग की बस्ती है। इस बस्ती के पीछे पाँच किलोमीटर दूर सिंध नदी बहती है। अगर इन उच्च वर्गीय बस्ती से दक्षिण की तरफ़ नजर दौड़ाएँ तो दूर तक खंडहर, टूटे-फूटे घर दिखाई पड़ते हैं। ये टूटे-फूटे घर शायद कारीगरों के रहे होंगे। चूकि निम्न वर्ग के घर इतनी मजबूत सामग्री के नहीं बने होंगे शायद इसीलिए उनके अवशेष भी उनकी गवाही नहीं देते अर्थात इस पूरे शहर में गरीब बस्ती कहाँ है उसके अवशेष भी नहीं मिलते। टीले की दाई तरफ़ एक लॉबी दिखती है। इसके आगे एक महाकुंड है। इस गली को इस धरोहर के प्रबंधकों ने 'देव मार्ग' कहा है।

यह महाकुंड चालीस फुट लंबा और पच्चीस फुट चौड़ा है। यह उस सभ्यता में सामूहिक स्नान के किसी अनुष्ठान का प्रश्नतीक माना जा सकता है। इसकी गहराई रगत फुट है तथा उत्तर और दक्षिण में सीढ़ियाँ उतरती हैं। इस महाकुंड के तीन तरफ़ साधुओं के कक्ष बने हुए हैं उत्तर में एक पंक्ति में आठ स्नानघर हैं। यह वास्तुकला का एक नमूना ही कहा जाएगा क्योंकि इन सभी स्नानघरों के मुँह एक-दूसरे के सामने नहीं खुलते। कुंड के तल में पक्की ईंटों का जमाव है ताकि कुंड का पानी रिस न सके और अशुद्ध पानी कुंड में न आ सके। कुंड में पानी भरने के लिए पास ही एक कुआँ है। कुंड से पानी बाहर निकालने के लिए नालियाँ बनी हुई हैं। ये नालियाँ पक्की ईंटों से बनी हैं तथा ईंटों से ढकी हुई भी हैं। पुरातात्विक वैज्ञानिकों का मानना है कि पानी निकासी का ऐसा सुव्यवस्थित बंदोबस्त इससे पहले इतिहास में दूसरा नहीं है।

महाकुंड के उत्तर-पूर्व में एक बहुत लंबी इमारत के खंडहर बिखरे पड़े हैं। इस इमारत के बीचोंबीच एक खुला आँगन है। इसके तीन तरफ बरामदे हैं। ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि इसके साथ कभी छोटे-छोटे कमरे भी होंगे। ये कमरे

और बरामदे धार्मिक अनुष्ठानों में ज्ञानशालाओं का काम देते थे। इस दृष्टि से देखें तो इस इमारत को एक 'धार्मिक महाविद्यालय' कहा जा सकता है। गढ़ से थोड़ा आगे । कुछ छोटे टीलों पर बस्तियाँ हैं। इन बस्तियों को 'नीचा नगर' कहकर पुकारा जाता है। पूर्व में बसी बस्ती 'अमीरों की बस्ती' है। आधुनिक युग में अमीरों की बस्ती पश्चिम में मानी जाती है। यानि कि बड़े-बड़े घर, चौड़ी सड़कें, ज्यादा कुएँ। मोहनजोदड़ो में यह उलटा था। शहर के बीचोंबीच एक तैंतीस फुट चौड़ी लंबी सड़क है। मोहनजोदड़ो में बैलगाड़ी होने के प्रमाण मिले हैं शायद इस सड़क पर दो बैलगाड़ियाँ एक साथ आसानी से आ-जा सकती हैं। यह सड़क बाजार तक जाती है। इस सड़क के दोनों ओर घर बसे हुए हैं। परंतु इन घरों की पीठ सड़कों से सटी हुई हैं। कोई भी घर सड़क पर नहीं खुलता। लेखक के अनुसार, दिलचस्प संयोग है कि चंडीगढ़ में ठीक यही शैली पचास साल पहले कार्बूजिए ने इस्तेमाल की।" चंडीगढ़ का कोई घर सड़क की तरफ़ नहीं खुलता। मुख्य सड़क पहले सेक्टर में जाती है फिर आप किसी के घर जा सकते हैं। शायद चंडीगढ़ के वास्तुकार का—जिए ने यह सीख मोहनजोदड़ो से ही ली हों? ऐसा भी अनुमान लगाया जा सकता है। शहर के बीचोंबीच लंबी सड़कें और दोनों तरफ़ समांतर ढकी हुई नालियाँ हैं। बस्ती में ये नालियाँ इसी रूप में हैं। प्रत्येक घर में एक स्नानघर भी है। घर के अंदर से मैले पानी की नालियाँ बाहर हौदी तक आती हैं और फिर बड़ी नालियों में आकर मिल जाती हैं।

कहीं-कहीं वे खुली हो सकती हैं परंतु अधिकतर वे ऊपर से ढकी हुई हैं। इस प्रकार सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मोहनजोदड़ो के नागरिक स्वास्थ्य के प्रति कितने सचेत थे। शहर के कुएँ भी दूर से ही अपनी ओर प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान खींचते हैं। ये कुएँ पक्की-पक्की ईंटों के बने हुए हैं। पुरातत्व विद्वानों के अनुसार केवल मोहनजोदड़ो में ही सात सौ के लगभग कुएँ हैं। इतिहासकार ऐसा मानते हैं कि सिंधु घाटी की सभ्यता संसार में पहली ज्ञात संस्कृति है जो कुएँ खोदकर भू-जल तक पहुँची। लेखक यह भी प्रश्न उठाते हैं कि नदी, कुएँ, : कुंड स्नानघर और बेजोड़ पानी निकासी को क्या हम सिंधु घाटी की सभ्यता को जल संस्कृति कह सकते हैं।

मोहनजोदड़ो की बड़ी बस्ती में घरों की दीवारें ऊँची और मोटी हैं। मोटी दीवार से यह अर्थ लगाया जा सकता है कि यह दो मंजिला घर होगा। इन घरों की एक खास बात यह है कि सामने की दीवार में केवल प्रवेश द्वार है कोई खिड़की नहीं है। ऊपर की मंजिल में खिड़कियाँ हैं। कुछ बहुत बड़े घर भी हैं शायद इनमें कुछ लघु उद्योगों के कारखाने होंगे। ये सभी छोटे-बड़े घर एक लाइन में हैं। अधिकतर घर लगभग तीस गुणा तीस फुट के हैं। सभी घरों की वास्तुकला लगभग एक जैसी है। एक बहुत बड़ा घर है जिसमें दो आँगन और बीस कमरे हैं। इस घर को 'मुखिया' का घर कहा जा सकता है। घरों की खुदाई से एक दाढ़ीवाले याजक-नरेश' और एक प्रसिद्ध 'नर्तकी' की मूर्तियाँ भी मिली हैं।

'नर्तकी' की मूर्ति अब दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी हुई है। यहीं पर एक बड़ा घर भी है जिसे 'उपासना केंद्र' भी समझा जा सकता है। इसमें आमने-सामने की दो चौड़ी सीढ़ियाँ ऊपर की मंजिल की ओर जाती हैं। ऊपर की मंजिल अब बिलकुल ध्वस्त हो चुकी है। नगर के पश्चिम में एक 'रंगरेज का कारखाना' भी मिला है जिसे अब सैलानी बड़े चाव से देखते हैं। घरों के बाहर कुछ कुएँ सामूहिक प्रयोग के लिए हैं। शायद ये कुएँ कर्मचारियों और कारीगरों के लिए घर रहे होंगे। बड़े घरों में कुछ छोटे कमरे हैं। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि शहर की आबादी काफ़ी रही होगी। एक विचार यह भी हो सकता है कि ऊपर की मंजिल में मालिक और नीचे के घरों में नौकर-चाकर रहते होंगे। कुछ घरों में सीढ़ियाँ नहीं हैं शायद इन घरों में लकड़ी की सीढ़ी रही है जो बाद में नष्ट हो गई होगी। छोटे घरों की बस्ती में संकरी सीढ़ियाँ हैं। इन सीढ़ियों के पायदान भी ऊँचे हैं। शायद ऐसा जगह की कमी के कारण होता होगा।

लेखक ने अपनी यात्रा के समय जब यह ध्यान दिया कि खिड़कियों और दरवाजों पर छज्जों के निशान नहीं हैं। गरम इलाकों में ऐसा होना आम बात होती है। शायद उस समय इस इलाके में इतनी कड़ी धूप न पड़ती हो। यह तथ्य भी पूरी तरह से स्थापित हो चुका है कि उस समय अच्छी खेती होती थी। यहाँ लोग खेतों की सिंचाई कुओं से करते थे। नहर के प्रमाण यहाँ नहीं मिलते शायद लोग वर्षा के पानी पर अधिक निर्भर रहते होंगे। बाद में वर्षा कम होने लगी हो और लोगों ने कुओं से अधिक पानी निकाला होगा। इस प्रश्नकार भू-जल का स्तर काफ़ी नीचे चला गया हो। यह भी हो सकता है कि पानी के अभाव में सिंधु घाटी के वासी यहाँ से उजड़कर कहीं चले गए हों और सिंधु घाटी की समृद्ध सभ्यता इस प्रकार नष्ट हो गई हो। लेखक के इस अनुमान से इनकार नहीं किया जा सकता।

मोहनजोदड़ो के घरों और गलियों को देखकर तो अपने राजस्थान का भी खयाल हो आया। राजस्थान और सिंध-गुजरात की दृश्यावली एक-सी है।

मोहनजोदड़ो के घरों में टहलते हुए जैसलमेर के मुहाने पर बसे पीले पत्थरों के खूबसूरत गाँव की याद लेखक के जहन में ताजा हो आई। इस खूबसूरत गाँव में हरदम गरमी का माहौल व्याप्त है। गाँव में घर तो है परंतु घरों में लोग नहीं हैं। कहा

जाता है कि कोई डेढ़ सौ साल पहले राजा के साथ तकरार को लेकर इस गाँव के स्वाभिमानी नागरिक रातोंरात अपना घर-बार छोड़कर चले गए थे। बाद में इन घरों के दरवाजे, खिड़कियाँ लोग उठाकर ले गए थे। अब ये घर खंडहर में परिवर्तित हो गए हैं।

परंतु ये घर ढहे नहीं। इन घरों की खिड़कियों, दरवाजों और दीवारों को देखकर ऐसा लगता है जैसे कल की ही बात हो। लोग चले गए लेकिन वक्त वहीं रह गया। खंडहरों ने उसे वहाँ रोक लिया हो। जैसे सुबह गए लोग शाम को शायद वापस लौट आएँ।। मोहनजोदड़ो में मिली ठोस पहियोंवाली बैलगाड़ी को देखकर लेखक को अपने गाँव की बैलगाड़ी की याद आ गई जिसमें पहले दुल्हन बैठकर ससुराल आया करती थी। बाद में इन गाड़ियों में आरेवाले पहिए और अब हवाई जहाज से उतरे हुए पहियों का प्रयोग होने लगा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न-1 मुअनजो-दड़ो का अर्थ क्या है?
(क) मिट्टी का टीला
(ख) पत्थर और ईंटों का टीला
(ग) मृतकों या मुर्दों का टीला
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-2 बौद्ध स्तूप कितने फुट ऊँचे चबूतरे पर निर्मित है?
(क) 40 फुट
(ख) 25 फुट
(ग) 30 फुट
(घ) 50 फुट

प्रश्न-3 मुअनजो-दड़ो की खुदाई किसके निर्देश पर शुरू हुई थी?
(क) जान मार्शल
(ख) काशी नाथ दीक्षित
(ग) माधो स्वरूप वत्स
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-4 मुअनजो-दड़ो नगर कितने हेक्टेयर में फैला हुआ था?
(क) 100 हेक्टेयर में
(ख) 200 हेक्टेयर में
(ग) 300 हेक्टेयर में
(घ) 400 हेक्टेयर में

प्रश्न-5 मुअनजो-दड़ो के सबसे ऊँचे चबूतरे में क्या विद्यमान है?
(क) याजक नरेश की मूर्ति
(ख) कोठार
(ग) बौद्ध स्तूप
(घ) महाकुंड

प्रश्न-6 महाकुंड कितने फुट गहरा है?
(क) 7 फुट
(ख) 10 फुट
(ग) 12 फुट
(घ) 8 फुट

प्रश्न-7 महाकुंड में पानी के प्रबंध के लिए क्या व्यवस्था थी?
(क) नहर

(ख) नदी

(ग) तालाब

(घ) कुआँ

प्रश्न-8 मुअनजो-दड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को किस गाँव की याद हो आई?

(क) चंडीगढ़

(ख) कुलधरा

(ग) सिंध

(घ) इस्लामाबाद

प्रश्न-9 मुअनजो-दड़ो में अनाज की ढुलाई के लिए किस वाहन का प्रयोग किया जाता रहा होगा?

(क) रेलगाड़ी

(ख) मोटरगाड़ी

(ग) बैलगाड़ी

(घ) ऊँटगाड़ी

प्रश्न-10 मुअनजो-दड़ो के वास्तुकला की तुलना भारत के किस नगर के साथ की गई है?

(क) अमृतसर

(ख) चंडीगढ़

(ग) मेरठ

(घ) जोधपुर

उत्तर-

1-(ग) मृतकों या मुर्दों का टीला 2-(ख) 25 फुट 3- (क) जान मार्शल 4-(ख) 200 हेक्टेयर में 5-(ग) बौद्ध स्तूप 6-(क) 7 फुट 7-(घ) कुआँ 8-(ख) कुलधरा 9-(ग) बैलगाड़ी 10-(ख) चंडीगढ़

अभिव्यक्ति और माध्यम (पाठ संख्या-11 और 12)
पाठ 11. कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण

प्रश्न 1: कहानी को नाटक में किस प्रकार रूपांतरित किया जा सकता है? स्पष्ट करें।

उत्तर: 1. सहजता से कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए दोनों विधाओं का ज्ञान अति आवश्यक है।

2. सर्वप्रथम कहानी के विस्तृत कथानक को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।

3. तत्पश्चात् हम कहानी की विभिन्न घटनाओं को आधार बनाकर दृश्य बनाते हैं। पुनः इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि बनाए गए दृश्य नाटक को गतिशील बनाने में समर्थ हों। एक दृश्य से दूसरे दृश्य की भूमिका भी अवश्य तैयार होनी चाहिए। लेकिन ऐसे दृश्य नहीं बनाने चाहिएँ जो अनावश्यक हों और नाटक की गति में बाधा उत्पन्न करें।

4. दृश्य लिखने के बाद कथावस्तु के अनुसार ही संवाद लिखे जाने चाहिएँ। परंतु ये संवाद संक्षिप्त, पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल और सामान्य बोलचाल की भाषा में ही लिखे जाने चाहिएँ।

5. कहानी का नाटकीय रूपांतरण करते समय उसके पात्रों की दृश्यात्मकता का प्रयोग नाटक में किया जाना चाहिए। यह परिवर्तन करने से कहानी के पात्र नाटक में सजीव तथा प्रभावशाली बन जाएँगे।

6. इसी प्रकार कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय ध्वनि और प्रकाश योजना भी नितांत आवश्यक है |

प्रश्न 2. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन कैसे करते हैं ?

उत्तर- कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन निम्न प्रकार से करते हैं-

1. कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करके दृश्य बनाए जाते हैं।

2. प्रत्येक दृश्य कथानक के अनुसार बनाया जाता है।
3. एक स्थान और समय पर घट रही घटना को एक दृश्य में लिया जाता है।
4. दूसरे स्थान और समय पर घट रही घटना को अलग दृश्यों में बाँटा जाता है।
5. दृश्य विभाजन करते समय कथाक्रम और विकास का भी ध्यान रखा जाता है।

प्रश्न 3:- कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किस मुख्य समस्या का सामना करना पड़ता है? इसे कैसे दूर किया जा सकता है ?

उत्तर: कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक प्रकार की समस्याएँ सामने आती हैं। प्रमुख समस्या तो पात्रों के मनोभावों को प्रस्तुत करने में आती है। कहानीकार तो कहानी के पात्रों के मनोभावों का विवरण प्रस्तुत करता है, परंतु नाटक के पात्रों में मानसिक द्वंद्व के दृश्यों की नाटकीय प्रस्तुति करने में समस्याएँ आ जाती हैं।

नाट्य रूपांतरण में पात्र मंच के एक कोने में जाकर संवाद द्वारा काम चला सकता है, परंतु आजकल 'वायस ओवर' एक आधुनिकतम तकनीक खोज ली गई है, जिससे इस समस्या का हल निकाल लिया गया है। 'वायरस ओवर' एक ऐसी आवाज़ है जिसे मंच पर पात्र नहीं बोलता, परंतु फिर भी वह दर्शकों को सुनाई देती है, वे पात्र की मन:स्थिति को जान लेते हैं। इस प्रकार कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक समस्याएँ सामने आती हैं, परंतु आजकल नवीन तकनीकों की खोज हो चुकी है, जिससे इन समस्याओं को दूर किया जा सकता है।

प्रश्न 4. कहानी और नाटक में क्या समानताएँ हैं?

उत्तर- कहानी और नाटक में निम्नलिखित समानताएँ हैं:

- कहानी तथा नाटक दोनों का केंद्र बिंदु **कथानक** होता है।
- कहानी तथा नाटक दोनों में ही **पात्र और परिवेश** होते हैं।
- कहानी तथा नाटक दोनों का ही एक **क्रमिक विकास** होता है।
- कहानी में पात्रों के मध्य द्वंद्व होता है तथा नाटक में भी पात्रों के मध्य **द्वंद्व** होता है।
- जिस प्रकार कहानी के लिए संवाद महत्वपूर्ण है उसी प्रकार नाटक के लिए भी **संवाद** महत्वपूर्ण है।
- कहानी तथा नाटक दोनों की ही कथा एक **उद्देश्य** को लेकर आगे बढ़ती है।

प्रश्न 5 :- कहानी और नाटक में क्या अंतर हैं?

उत्तर: कहानी और नाटक दो अलग-अलग विधाएँ हैं। इनमें यदि कुछ समानताएँ हैं तो कुछ भिन्नताएँ भी हैं।

कहानी गद्य-साहित्य का एक छोटा, अत्यंत सुसंगठित और अपने-आप में पूर्ण कथारूप है परंतु नाटक जीवन की अनुकृति है। नाटक को सजीव पात्रों द्वारा एक चलते-फिरते सप्राण रूप में अंकित किया जाता है।

कहानी का संबंध केवल लेखक तथा पाठक से होता है, परंतु नाटक का संबंध लेखक के अतिरिक्त निर्देशकों, पात्रों, दर्शकों तथा श्रोताओं से होता है।

नाटक को मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। उसमें मंच सज्जा, संगीत, प्रकाश व्यवस्था इत्यादि को भी स्थान दिया जाता है, परंतु कहानी केवल कही जाती है या पढ़ी जाती है।

कहानी को पढ़ते समय हम उसे बीच में भी छोड़ सकते हैं और बाद में समय मिलने पर कभी भी पढ़ सकते हैं, परंतु नाटक को एक ही समय तथा स्थान पर दर्शकों के सामने अभिनीत किया जाता है।

संक्षेप में, हम कहते हैं कि कहानी पढ़ने या सुनने की विधा है, नाटक रंगमंच पर अभिनीत करने की विधा है।

अभ्यास हेतु कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न

1. "कहानी का केंद्र बिंदु कथानक होता है।" इस कथन के आलोक में कहानी के कथानक पर प्रकाश डालिए।
2. नाटक, साहित्य की अन्य विधाओं से किस प्रकार भिन्न है? स्पष्ट कीजिए।
3. नाटक स्वयं में एक जीवंत माध्यम है। इस कथन के आलोक में नाटक की अवधारणा पर प्रकाश डालें।
4. कहानी में द्वंद कितना महत्वपूर्ण है? अपने विचार व्यक्त कीजिए|
5. संवाद पात्रों के चरित्र को स्थापित करने के साथ कहानी को गति देकर आगे बढ़ाते हैं| कथन के संदर्भ में संवाद के महत्व को प्रमाणित कीजिए।

पाठ 12. कैसे बनता है रेडियो नाटक

प्रश्न -1. रेडियो नाटक की क्या अवधारणा है ?

उत्तर :- रेडियो श्रव्य माध्यम है। कुछ दशक पूर्व तक टेलीविज़न और कंप्यूटर नहीं थे। सिनेमा हॉल और थियेटर थे, पर उनकी संख्या बहुत कम थी। ऐसी स्थिति में रेडियो ही मनोरंजन का सस्ता और सुलभ साधन था। नाटक का रंगमंच से सीधा संबध है परंतु रेडियो नाटक रंगमंच के लिए या मंचन के लिए नहीं लिखा जाता| श्रव्य माध्यम (रेडियो) पर इस नाटक का प्रसारण होता है| यह दृश्य से वंचित हो जाता है।

प्रश्न- 2. रेडियो पर नाटक का क्या महत्व है ?

उत्तर:- प्रसिद्ध साहित्यकार रचना के साथ साथ रेडियो के नाटक भी लिखते थे। हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के नाट्य आंदोलन के विकास में रेडियो नाटक बेहद अहम रहे हैं। हिंदी के कई नाटक जो रंगमंच पर अभिनीत किए गए, अत्यंत सफ़ल रहे। इनमे धर्मवीर भारती द्वारा रचित 'अंधा युग' व मोहन राकेश का 'आषाढ़ का एक दिन' इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

प्रश्न- 3. रेडियो नाटक के लिए कहानी लिखते समय किन किन तथ्यों का ध्यान रखा जाना अपेक्षित है ?

उत्तर:- रेडियो नाटक के लिए कहानी स्वरचित हो या किसी अन्य स्रोत से ली गई हो उसमे निम्नलिखित तथ्यों को अवश्य दृष्टिगत रखना चाहिए :

1) कहानी पूरी तरह से एक्शन पर आधारित नहीं होनी चाहिए, क्योकि रेडियो पर अधिक ध्वनि आधारित एक्शन उबाऊ हो सकता है। अतः मात्र घटना प्रधान कथा का चयन नहीं करना चाहिए।
2) रेडियो नाटक की अवधि 15-30 मिनट की होनी चाहिए।
3) यदि कहानी लम्बी है तो वह एक धारावाहिक के रूप में प्रस्तुत की जा सकती है। जिसकी हर कड़ी की अवधि 15 मिनट या 30 मिनट की हो सकती है।
4) रेडियो नाटक में पात्रो की संख्या सीमित होनी चाहिए।

प्रश्न -4 . रेडियो नाटक में कौन-कौन से तत्त्व होते है ?

उत्तर:-रेडियो नाटक में तीन तत्व महत्यपूर्ण है -

1. भाषा 2. ध्वनि एवं 3. संगीत

1. भाषा- भाषा द्वारा रेडियो नाटक के पात्रों और उनकी मानसिक स्थिति का परिचय प्राप्त होता है। भाषा ही श्रोता को आकर्षित करती है एवं कथानक को गति देती है। भाषा द्वारा ही विभिन्न घटनाओ को आबद्ध किया जाता है।

2. ध्वनि- ध्वनि द्वारा ही विभिन्न वातावरण की सृष्टि होती हैं। जैसे- बादल, हवा, वन, तूफ़ान, बिजली कड़कना आदि की सहायता से रेडियो नाटक में वातावरण बनकर तैयार होता है।

3 संगीत- संगीत ही रेडियो नाटक की जीवतंता एवं प्रभावशीलता में वृद्धि करता है।

प्रश्न -5 रेडियो नाटक लेखन के कुछ याद रखने योग्य बिंदु लिखिए।

उत्तर (i) शीर्षक - शीर्षक आकर्षक, सजीव व प्रभावोंत्पादक हो।

(ii) प्रारम्भ -रेडियो नाटक का प्रारम्भ संगीत से होना चाहिए। ताकि श्रोताओ के लिए वातावरण तैयार हो सके। उसके बाद संवाद आरम्भ होने चाहिए।

(iii) विषय- रेडियो नाटक का विषय श्रोताओ के अनुकूल होना चाहिए। जैसे- सामाजिक, ऐतिहासिक, पारिवारिक, हास्य-व्यंग्यप्रधान आदि।

(iv) चरित्र- रेडियो नाटक लेखन में चरित्रों की संख्या कम होनी चाहिए। पात्रो के व्यक्तित्त्व को शब्दो और ध्वनियो के द्वारा उकेरा जाना चाहिए।

(v) दृश्यान्तर - रेडियो नाटक में दृश्यान्तर के लिए चुप्पी, प्रभात संगीत एवं प्रतिध्वनियों की अनुगूँज का प्रयोग किया जाना वांछित है।

(vi) शब्द- शब्द रेडियो नाटक का अहम भाग है।अतः पात्रो की भाषा बोधगम्य होनी चाहिए।

प्रश्न- 6. दृश्य-श्रव्य माध्यमो की तुलना में श्रव्य माध्यम की क्या सीमाँए है ? इन सीमाओं को किस तरह पूरा किया जा सकता है ?

उत्तर-(i) फिल्म, नाटक, टेलीविज़न जैसे दृश्य-श्रव्य माध्यमो में दृश्य होते है, पर रेडियो नाटक मे दृश्य नहीं होते है।

(ii) रेडियो नाटक में सब कुछ संवादो और ध्वनि प्रभावो के माध्यम से संप्रेषित करना होता है।

(iii) मंच-सज्जा व वस्त्र-सज्जा के साथ-साथ अभिनेता के चेहरे की भाव-भंगिमाएँ आदि सम्पूर्ण परिवेश आवाज़ के माध्यम से प्रस्तुत करना होता है।

(iv) दृश्य-श्रव्य माध्यमो की प्रभावशीलता श्रव्य माध्यम की तुलना में अधिक होतीं है।

प्रश्न 7. सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में क्या-क्या समानताएँ होती हैं ?

उत्तर- सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में अनेक समानताएँ, हैं जो इस प्रकार है-

1. सिनेमा और रंगमंच में एक कहानी होती है।   1. रेडियो नाटक में भी एक ही कहानी होती है।
2. इनमें कहानी का आरंभ, मध्य और अंत होता है।2. इसमें भी कहानी का आरंभ, मध्य और अंत होता है।
3. इनमें चरित्र (पात्र) होते हैं।   3. इसमें भी चरित्र (पात्र) होते हैं।
4. इनमें पात्रों के आपसी संवाद होते हैं।
4. इसमें भी पात्रों के आपसी संवाद होते हैं।
5. इनमें पात्रों का परस्पर द्वंद्व होता है और अंत में समाधान। 5.इसमें भी पात्रों का परस्पर द्वंद्व होता है और समाधान प्रस्तुत किया जाता है।
6. इनमें पात्रों के संवादों के माध्यम से कहानी का विकास होता है। 6. इनमें भी पात्रों के संवादों के माध्यम से कहानी का विकास होता है।

प्रश्न 8. सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में क्या-क्या असमानताएँ हैं ?

उत्तर-सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में अनेक समानताएँ होते हुए भी कुछ असमानताएँ हैं जो इस प्रकार है-

1. सिनेमा और रंगमंच दृश्य माध्यम है।	1. रेडियो नाटक एक श्रव्य माध्यम है।
2. इनमें मंच सज्जा और वस्त्र सज्जा का बहुत महत्त्व होता है।	2. इसमें इनका कोई महत्त्व नहीं होता।
3. इनमें पात्रों की भावभंगिमाएँ विशेष महत्त्व रखती - हैं।	3. इसमें भावभंगिमाओं की कोई आवश्यक-ता नहीं होती।
4. इनमें कहानी को पात्रों की भावनाओं को अभिनय के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।	4. इसमें कहानी को ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है।

पाठ 13. नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

उन विषयों पर लेखन कार्य करना जिसकी आशा न की गई हो नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता हैं| ये विषय नए और चुनौतीपूर्ण होते हैं|

इस कारण लोग अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से कतराते हैं| लोग आत्मनिर्भर होकर मौलिक अभिव्यक्ति का अभ्यास न करके दूसरों के द्वारा लिखित सामग्री को ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर देते हैं और मौलिक अभिव्यक्ति का मौका गँवा देते हैं| इसलिए परंपरागत विषयों को छोड़कर नए तरह के विषयों पर लेखन का अभ्यास करना चाहिए| इससे लेखन कौशल का विकास होगा और भाषा पर आपकी पकड़ मजबूत होगी और आपका व्यक्तित्व भी दृढ़ होगा|

जब हम अप्रत्याशित विषयों पर मौलिक अभिव्यक्ति अपने तर्क और अनुभव के आधार पर शब्दांकित करते हैं तब यह रचनात्मक अभिव्यक्ति साहित्य की विविध विधाओ का रूप ले लेती है |जैसे ,संस्मरण, डायरी, रेखाचित्र, कहानी, यात्रा - वृतांत इत्यादि।

अप्रत्याशित विषय पर कैसे लिखे -: जिस विषय पर लिखना है लेखक को उसकी संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए। विषय पर लिखने से पहले लेखक को थोड़ी देर ठहर कर अपने मस्तिष्क में उसकी एक उचित रूपरेखा बना लेनी चाहिए। विषय से जुड़े तथ्यों में उचित तालमेल होना चाहिए और उनकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए| विचार ,विषय से सुसम्बद्ध तथा सुसंगत और आकर्षक होने चाहिए। अप्रत्याशित विषयों के लेखन में 'मैं' शैली का प्रयोग करना चाहिए। अप्रत्याशित विषयों पर लिखते समय लेखक को विषय से हटकर अपनी विद्वता को प्रकट नहीं करना चाहिए और अपनी बातों का खंडन भी नहीं करना चाहिए|

अच्छे लेखन में ध्यान देने योग्य बातें -:

•छोटे-छोटे वाक्य लिखें। जटिल वाक्य की तुलना में सरल वाक्य की संरचना को वरीयता दें।

•आम बोलचाल की भाषा और शब्दों का इस्तेमाल करें। गैर-जरूरी शब्दों के इस्तेमाल से बचें। शब्दों को उनके वास्तविक अर्थ समझकर ही प्रयोग करें।

•अच्छा लिखने के लिए अच्छा पढ़ना भी बहुत जरूरी है। जाने-माने लेखकों की रचनाएँ ध्यान से पढ़ें।

•लेखन में विविधता लाने के लिए छोटे वाक्यों के साथ-साथ कुछ मध्यम आकार के और कुछ बड़े आकार के वाक्यों का प्रयोग कर सकते हैं। इसके साथ-साथ मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से लेखन में रंग भरने की कोशिश करें।

•अपने लिखे को दुबारा जरूर पढ़ें और अशुद्धियों के साथ-साथ गैरजरूरी चीजों को हटाने में संकोच न करें। लेखन में कसावट बहुत जरूरी है।

•लिखते हुए यह ध्यान रखें कि आपका उद्देश्य अपनी भावनाओं, विचारों और तथ्यों को व्यक्त करना है, न कि दूसरे को प्रभावित करना।

•एक अच्छे लेखक को पूरी दुनिया से लेकर अपने आस-पास घटने वाली घटनाओं, समाज और पर्यावरण पर गहरी निगाह रखनी चाहिए और उन्हें इस तरह से देखना चाहिए कि वह अपने लेखन के लिए उससे विचार बिंदु निकाल सके। एक अच्छे लेखक में तथ्यों को जुटाने और किसी विषय पर बारीकी से विचार करने का धैर्य होना चाहिए।

अभ्यास हेतु प्रश्न:

प्रश्न: अप्रत्याशित शब्द का क्या अर्थ है? पारंपरिक और अप्रत्याशित विषयों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: जिसकी आशा न की गई हो। (अ+प्रति+आशा+इत=अप्रत्याशित) ऐसे विषय जिसकी आपने कभी आशा भी न की हो, उस पर लेखन कार्य करना ही अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है। विषय कोई भी हो सकता है जो पहले से पढ़ा नहीं यानी रटा रटाया नहीं हो, वही अप्रत्याशित लेखन का विषय हो सकता है।

पारंपरिक और अप्रत्याशित विषयों में अंतर-

पारंपरिक विषय वो विषय होते हैं जो किसी मुद्दे, विचार, घटना आदि से जुड़े होते हैं और अधिकतर सामाजिक और राजनीतिक विषय होते हैं। इसमें आप अपनी व्यक्तिगत राय पर उतना जोर न देकर सामूहिक विचार पर ज़ोर देते हैं, जबकि अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में आपके अपने निजी विचार होते हैं।

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन/ रचनात्मक लेखन में सदैव उपयोगी कुछ पंक्तियाँ --

1. सकल पदारथ हैं जग माहीं, करमहीन नर पावत नाहीं ।
2. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।
3. करत-करत अभ्यास के जड़मतत होत सुजान ।
4. स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है
5. वसुधैव कुटुम्बकम् ।
6. मधुर वचन है औषधि, कटुक वचन है तीर ।
7. अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप ।
8. अहंकार हमारे सभी गुणों का सर्वनाश कर देता है ।
9. रहिमन निज मन की व्यथा मन ही राखो गोय ।
10. पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं ।
11. नर हो न निराश करो मन को ।

प्रश्न: अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से क्या लाभ हैं?

उत्तर : अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से निम्नलिखित लाभ हैं:

1. ये आपकी मौलिक रचना होगी।
2. इसमें आप अपने विचारों को किसी तर्क, विचार के माध्यम से पुष्ट करने की कोशिश करेंगे।
3. इससे आपके लेखन कौशल में अत्यधिक विकास होगा।
4. इससे भाषा पर आपकी अच्छी पकड़ बनेगी।
5. अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर और सुघड़ ढंग से अभिव्यक्त करने की चुनौती है।

प्रश्न: अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के कुछ नियम बताइए|

उत्तर :अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के कुछ नियम इस प्रकार हैं :

1. आप इसमें‘ मैं ’शैली का प्रयोग कर सकते हैं।
2. विषयवस्तु की रूपरेखा निर्धारित करते हुए विविध कोणों से विषय पर विचार कर लें।
3. विवरण और विवेचन सुसंबद्ध और सुसंगत हो।

4. भाषायी शुद्धता पर विशेष ध्यान दें।
5. मौलिकता और रचनात्मकता दिखाएं।
6. प्रभावी भाषा और प्रवाह को बनाएंगे।
7. कथन या विचारों की पुनरावृत्ति न हो ।
8. लेखन का प्रारंभ जितना रुचिकर और आकर्षक होगा, उसका स्वरुप भी उतना ही प्रभावी होगा ।

प्रश्न: नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में आने वाली कठिनाइयों और उनके निवारण का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है:
•विषय से जुड़ी जानकारियों और तथ्यों का अभाव ।
•शब्द-भण्डार के अल्पज्ञान के कारण मन के विचारों को शब्दबद्ध करने की कठिनाई ।
•लेखन की बनी बनाई लीक छोड़कर कुछ नया करने में आत्मविश्वास की कमी ।
•पठन-पाठन का अभ्यास न होना ।
•लेखन का अभ्यास न होने से शुद्ध और समय-सीमा में लिखने की असमर्थता ।
•भाषा के प्रति उपेक्षा या अरूचि से वाक्य-निर्माण या लेखन दोषपूर्ण होना ।

निवारण –

•पत्र-पत्रिकाओं,समाचारपत्र का अध्ययन, अपने आस-पास हो रही घटनाओं की जानकारी रखें।
•अपनी बात को बिना झिझक परन्तु समुचित ढंग से प्रकट करने का आत्मविश्वास हो तो लेखन में आने वाली कठिनाइयाँ आसान हो जाएंगी ।
•अध्ययन और श्रवण के साथ-साथ समुचित लेखन का भी अभ्यास आवश्यक है अन्यथा मन में विचारों की प्रचुरता होने के बाद भी समय-सीमा में लिखना संभव नहीं होता ।
•समय-सीमा, शुद्धता, स्वच्छता आदि मानकों के साथ लेखन का अभ्यास करें|

प्रश्न :रटंत अथवा कुटेव को बुरी लत क्यों कहा जाता है

उत्तर -रटंत को बुरी लत इसलिए कहा जाता है क्योंकि जिस विद्यार्थी अथवा व्यक्ति को यह लत लग जाती है, उसके भावों की मौलिकता खत्म हो जाती है। इसके साथ-साथ उसकी चिंतन शक्ति धीरे-धीरे क्षीण हो जाती है और वह किसी विषय को अपने तरीके से सोचने की क्षमता खो देता है। वह सदैव दूसरों के लिखे पर आश्रित हो जाता है। उसे अपनी बुद्धि तथा चिंतन शक्ति पर विश्वास नहीं रहता|

अप्रत्याशित विषयों पर आधारित रचनात्मक लेखन के उदाहरण-:

परीक्षा के दिन

हम सभी के विद्यार्थी-जीवन में परीक्षाओं का सामना करना बिल्कुल आम बात है| इसके बावजूद भी परीक्षा के कठिन दिन का सामना करना मेरे लिए बहुत डरावना रहता है | मैं बहुत घबराया रहता हूँ | मैंने जो कुछ भी पढ़ा या याद किया ,उस हर चीज को बार-बार दोहराना चाहता हूँ | मै प्रश्न-पत्र के बारे में सोचते रहता हूँ | मेरा विश्वास है कि यदि मैं पहले दिन अच्छा करूँगा तो परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकता हूँ| इसलिए परीक्षा का कठिन दिन भयानक लगता है| कुछ छात्र परीक्षाओं के कठिन दिन के पहले की रात सो नहीं पाते| बोर्ड-परीक्षा का मेरा परीक्षा का दिन ऐसा ही था| परीक्षा के दिन मैं अपनी समस्त शक्ति अध्ययन की ओर केन्द्रित कर एकाग्रचित होकर संभावित प्रश्नों को कंठस्थ करने के लिए लगा देता हूँ| ये दिन मेरे लिए परीक्षा-देवो को प्रसन्न करने के लिए अनुष्ठान करने के दिन जैसा है | खेल-तमाशों से छुट्टी और मित्रों-साथियों से दूर रहने के यह दिन हैं |

परीक्षा ,परीक्षार्थियों के लिए भूत है | यह भूत जिस पर सवार हो जाता है उसकी रातों की नींद हराम हो जाती है, दिन की भूख गायब हो जाती है और घर में सगे-सम्बन्धियों का आना बुरा लगता है | दूरदर्शन के मनोरंजक कार्यक्रम, मनपसंद एपीसोड, चित्रहार आदि समय नष्ट करने के माध्यम लगते हैं |

परीक्षा के इन कठिन दिनों में परीक्षा-ज्वर चढ़ा होता है, जिसका तापमान परीक्षा- भवन में प्रवेश करने तक निरंतर चढ़ता रहता है और प्रश्न-पत्र हल करके परीक्षा-भवन से बाहर आने पर ही सामान्य होता है | फिर अगले विषय की तैयारी का स्मरण होता है | ज्वर ग्रस्त परीक्षार्थी निरंतर विश्राम न कर पाने की पीड़ा से छटपटाता है | परीक्षा ज्वर से ग्रस्त परीक्षार्थी क्रोधी बन जाता है, चिंता उसके स्वास्थ्य को चौपट कर देती हैं |

जंक फूड की समस्या

भोजन का स्वाद और स्वास्थ्य से सीधा संबंध है। स्वादिष्ट भोजन देखते ही हमारी लार टपकने लगती है और हम अपने आपको रोक नहीं पाते। कई बार तो हम बिना भूख के भी खाने के लिए उतावले हो बैठते हैं। ऐसी स्थिति आने पर यह समझना चाहिए कि हम जाने-अनजाने भोजन के लालच का शिकार हो रहे हैं। आज इस उपभोक्तावादी युग में चारों ओर वातावरण ऐसा बना दिया गया है कि हम ललचाए बिना रह ही नहीं सकते। दुकानों पर टैंगे स्वादिष्ट चटपटे और कुरकुरे व्यंजन तथा खाद्य वस्तुएँ देखकर हमारे मुँह में पानी आना स्वाभाविक ही है।

हमारी भूख-प्यास को बढ़ाने में अभिनेत्रियों का योगदान भी कम नहीं है, जब वे यह कहती हुई‘ टेढ़ा है पर मेरा है-’कुरकुरे हमारी ओर बढ़ाती प्रतीत होती हैं; इसके अलावा सेवन अप, लिम्का, कोकाकोला आदि विज्ञापन हमें घर के भोजन से दूर करके अपनी ओर आकर्षित करते हैं; पिज्जा, बर्गर, नूडल, चाउमीन आदि के विज्ञापन हमारी भूख बढ़ा देते हैं और हम उन्हें खरीदने के लिए बाध्य हो जाते हैं। अब तो विज्ञापन में बच्चे भी कहते दिखते हैं-‘खाने से डरता है क्या?”

यह सुनकर जंक फूड के प्रति हमारी झिझक दूर होती है और हम उनके नफ़े-नुकसान पर विचार किए बिना उनको अपने नाश्ते और भोजन के अलावा समय-असमय खाना शुरू कर देते हैं। जंक फूड के प्रति बच्चों और युवाओं की दीवानगी देखने लायक होती है। आप कहीं भी चले जाइए, चप्पे-चप्पे पर बर्गर, हॉट डॉग, सैंडविच, पैटीज, नूडल्स, कोल्ड ड्रिंक, समोसे, चाउमीन आदि मिल जाएँगे।

इनमें छिपी उच्च कैलोरी की मात्रा बच्चों में मोटापा और आलस्य बढ़ाते हैं। डॉक्टर इन्हें स्वास्थ्य के लिए विष बताते हैं। योगगुरु रामदेव जैसे लोग इनका विरोध करते हैं, पर लोगों की समझ में यह बात आए तब न। मोटापा, मधुमेह, रक्तचाप , हृदयाघात जैसी बीमारियों से यदि बचना है तो जंक फूड से तौबा करना ही पड़ेगा।

फुटपाथ पर सोते लोग

महानगरों में सुबह सैर पर निकलिए, एक तरफ आप स्वास्थ्य-लाभ करेंगे तो दूसरी तरफ आपको फुटपाथ पर सोते हुए लोग नजर आएँगे। महानगर को विकास का आधार-स्तंभ माना जाता है, लेकिन वहीं पर मानव-मानव के बीच इतना अंतर है। यहाँ पर दो तरह के लोग हैं -एक उच्च वर्ग, जिसके पास उद्योग, सत्ता, धन है, जिससे वह हर सुख भोगता है। उसके पास बड़े-बड़े भवन हैं और यह वर्ग महानगर के जीवन-चक्र पर प्रभावी है।

दूसरा वर्ग वह है जो अमीर बनने की चाह में गाँव छोड़कर आता है तथा यहाँ आकर फुटपाथ पर सोने के लिए मजबूर हो जाता है। इसका कारण उसकी सीमित आर्थिक क्षमता है। महँगाई, गरीबी आदि के कारण इन लोगों को भोजन भी मुश्किल से नसीब होता है। घर इनके लिए एक सपना होता है। इस सपने को पूरा करने के चक्कर में यह वर्ग अकसर छला जाता है। सरकारी नीतियाँ भी इस विषमता के लिए दोषी हैं।

सरकार की तमाम योजनाएँ भ्रष्टाचार के मुँह में चली जाती हैं और गरीब सुविधाओं की बाट जोहता रहता है। वह गरीबी में पैदा होता है, गरीबी में पलता-बढ़ता है और गरीबी में ही मर जाता है। वह जीते-जी रूखी-सूखी खाकर पेट की आग जैसे-तैसे बुझा लेता है और फटे-पुराने कपड़ों से तन ढँक लेता है, पर उसके सिर पर छत नसीब नहीं हो पाती और वह फुटपाथ, पार्क या अन्य खुली जगहों पर सोने को विवश रहता है।

अभिव्यक्ति और माध्यम पर आधारित प्रश्न

प्रिंट (मुद्रित) माध्यम- प्रिंट यानी मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है। असल में आधुनिक युग की शुरुआत ही मुद्रण यानी छपाई के आविष्कार से हुई। हालाँकि मुद्रण की शुरुआत चीन से हुई, लेकिन आज हम जिस छापेखाने को देखते हैं, उसके आविष्कार का श्रेय जर्मनी के गुटेनबर्ग को जाता है। छापाखाना यानी प्रेस के आविष्कार ने दुनिया की तसवीर बदल दी। यूरोप में पुनर्जागरण 'रेनेसाँ' की शुरुआत में छापेखाने की अहम भूमिका थी। भारत में पहला छापाखाना सन 1556 में गोवा में खुला। इसे मिशनरियों ने धर्म-प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था। तब से अब तक मुद्रण तकनीक में काफ़ी बदलाव आया है और मुद्रित माध्यमों का व्यापक विस्तार हुआ है।

प्रिंट (मुद्रित) माध्यमों की विशेषताएँ- प्रिंट माध्यमों के वर्ग में अखबारों, पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि को शामिल किया जाता है। हमारे दैनिक जीवन में इनका विशेष महत्व है। प्रिंट माध्यमों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं- 1- प्रिंट माध्यमों के छपे शब्दों में स्थायित्व होता है। 2- हम उन्हें अपनी रुचि और इच्छा के अनुसार धीरे-धीरे पढ़ सकते हैं। 3- पढ़ते-पढ़ते कहीं भी रुककर सोच-विचार कर सकते हैं। 4- इन्हें बार-बार पढ़ा जा सकता है। 5- इसे पढ़ने की शुरुआत किसी भी पृष्ठ से की जा सकती है। 6- इन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रखकर संदर्भ की भाँति प्रयुक्त किया जा सकता है।

यह लिखित भाषा का विस्तार है, जिसमें लिखित भाषा की सभी विशेषताएँ निहित हैं। लिखित और मौखिक भाषा में सबसे बड़ा अंतर यह है कि लिखित भाषा अनुशासन की माँग करती है। बोलने में एक स्वत:स्फूर्तता होती है लेकिन लिखने में भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शब्दों के उपयुक्त इस्तेमाल का ध्यान रखना पड़ता है। इसके अलावा उसे एक प्रचलित भाषा में लिखना पड़ता है ताकि उसे अधिक-से-अधिक लोग समझ पाएँ। मुद्रित माध्यमों की अन्य विशेषता यह है कि यह चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम है। इस माध्यम से आप गंभीर और गूढ़ बातें लिख सकते हैं क्योंकि पाठक के पास न सिर्फ़ उसे पढ़ने, समझने और सोचने का समय होता है बल्कि उसकी योग्यता भी होती है। असल में, मुद्रित माध्यमों का पाठक वही हो सकता है जो साक्षर हो और जिसने औपचारिक या अनौपचारिक शिक्षा के जरिये एक विशेष स्तर की योग्यता भी हासिल की हो।

प्रिंट (मुद्रित) माध्यमों की सीमाएँ या कमियाँ- मुद्रित माध्यमों की कमियाँ निम्नलिखित हैं-

1- निरक्षरों के लिए मुद्रित माध्यम किसी काम के नहीं हैं। 2- मुद्रित माध्यमों के लिए लेखन करने वालों को अपने पाठकों के भाषा-ज्ञान के साथ-साथ उनके शैक्षिक ज्ञान और योग्यता का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। 3-पाठकों की रुचियों और जरूरतों का भी पूरा ध्यान रखना पड़ता है। 4- ये रेडियो, टी०वी० या इंटरनेट की तरह तुरंत घटी घटनाओं को संचालित नहीं कर सकते। ये एक निश्चित अवधि पर प्रकाशित होते हैं। 5- जैसे अखबार 24 घंटे में एक बार या साप्ताहिक पत्रिका सप्ताह में एक बार प्रकाशित होती है। 6- अखबार या पत्रिका में समाचारों या रिपोर्ट को प्रकाशन के लिए स्वीकार करने की एक निश्चित समय-सीमा होती है इसलिए मुद्रित माध्यमों के लेखकों और पत्रकारों को प्रकाशन की समय-सीमा का पूरा ध्यान रखना पड़ता है।

प्रिंट (मुद्रित) माध्यम में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें- मुद्रित माध्यमों में लेखक को जगह (स्पेस) का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए। जैसे किसी अखबार या पत्रिका के संपादक ने अगर 250 शब्दों में रिपोर्ट या फ़ीचर लिखने को कहा है तो उस शब्द-सीमा का ध्यान रखना पड़ेगा। इसकी वजह यह है कि अखबार या पत्रिका में असीमित जगह नहीं होती। मुद्रित माध्यम के लेखक या पत्रकार को इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि छपने से पहले आलेख में मौजूद सभी गलतियों और अशुद्धियों को दूर कर दिया जाए क्योंकि एक बार प्रकाशन के बाद वह गलती या अशुद्ध वहीं चिपक जाएगी। उसे सुधारने के लिए अखबार या पत्रिका के अगले अंक का इंतजार करना पड़ेगा। भाषा सरल, सहज तथा बोधगम्य होनी चाहिए। शैली रोचक होनी चाहिए। विचारों में प्रवाहमयता एवं तारतम्यता होनी चाहिए।

रेडियो- रेडियो श्रव्य माध्यम है। इसमें सब कुछ ध्वनि, स्वर और शब्दों का खेल है। इन सब वजहों से रेडियो को श्रोताओं से संचालित माध्यम माना जाता है। रेडियो पत्रकारों को अपने श्रोताओं का पूरा ध्यान रखना चाहिए। इसकी वजह यह है कि अखबार के पाठकों को यह सुविधा उपलब्ध रहती है कि वे अपनी पसंद और इच्छा से कभी भी और कहीं से भी पढ़ सकते हैं। अगर किसी समाचार/लेख या फ़ीचर को पढ़ते हुए कोई बात समझ में नहीं आई तो पाठक उसे फिर से पढ़ सकता है या शब्दकोश में उसका अर्थ देख सकता है या किसी से पूछ सकता है, लेकिन रेडियो के श्रोता को यह सुविधा उपलब्ध नहीं होती।

वह अखबार की तरह रेडियो समाचार बुलेटिन को कभी भी और कहीं से भी नहीं सुन सकता। उसे बुलेटिन के प्रसारण समय का इंतजार करना होगा और फिर शुरू से लेकर अंत तक बारी-बारी से एक के बाद दूसरा समाचार सुनना होगा। इस बीच, वह इधर-उधर नहीं आ-जा सकता और न ही उसके पास किसी गूढ़ शब्द या वाक्यांश के आने पर शब्दकोश का सहारा लेने का समय होता है। अगर वह शब्दकोश में अर्थ ढूँढ़ने लगेगा तो बुलेटिन आगे निकल जाएगा।

1-रेडियो में अखबार की तरह पीछे लौटकर सुनने की सुविधा नहीं है। 2-अगर रेडियो बुलेटिन में कुछ भी भ्रामक या अरुचिकर है, तो संभव है कि श्रोता तुरंत स्टेशन बंद कर दे। 3-रेडियो मूलत: एकरेखीय (लीनियर) माध्यम है और रेडियो समाचार बुलेटिन का स्वरूप, ढाँचा और शैली इस आधार पर ही तय होती है। 4-रेडियो की तरह टेलीविजन भी एकरेखीय माध्यम है, लेकिन वहाँ शब्दों और ध्वनियों की तुलना में दृश्यों का महत्व सर्वाधिक होता है। 5-टेलीविजन में शब्द दृश्यों के अनुसार और उनके सहयोगी के रूप में चलते हैं। लेकिन रेडियो में शब्द और आवाज ही सब कुछ हैं।

रेडियो समाचार की संरचना- रेडियो के लिए समाचार-लेखन अखबारों से कई मामलों में भिन्न है। चूँकि दोनों माध्यमों की प्रकृति अलग-अलग है, इसलिए समाचार-लेखन करते हुए उसका ध्यान जरूर रखा जाना चाहिए। रेडियो समाचार की संरचना अखबारों या टेलीविजन की तरह उलटा पिरामिड (इंवटेंड पिरामिड) शैली पर आधारित होती है। चाहे आप किसी भी माध्यम के लिए समाचार लिख रहे हों, समाचार-लेखन की सबसे प्रचलित, प्रभावी और लोकप्रिय शैली उलटा पिरामिड़ शैली ही है। सभी तरह के जनसंचार माध्यमों में सबसे अधिक यानी 90 प्रतिशत खबरें या स्टोरीज़ इसी शैली में लिखी जाती हैं।

उलटा पिरामिड शैली में समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए महत्त्वक्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा या बताया जाता है। इस शैली में किसी घटना/विचार/समस्या का ब्यौरा कालानुक्रम की बजाय सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना से शुरू होता है। तात्पर्य यह है कि इस शैली में कहानी की तरह क्लाइमेक्स अंत में नहीं, बल्कि खबर के बिलकुल शुरू में आ जाता है। उलटा पिरामिड शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता।

इस शैली में समाचार को तीन भागों में बाँट दिया जाता है- 1-इंट्रो-समाचार के इंट्रो या लीड को हिंदी में 'मुखड़ा' भी कहते हैं। इसमें खबर के मूल तत्व को शुरू की दो-तीन पंक्तियों में बताया जाता है। यह खबर का सबसे अह हिस्सा होता है। 2-बॉडी-इस भाग में समाचार के विस्तृत ब्यौरे को घटते हुए महत्त्वक्रम में लिखा जाता है। 3-समापन-इस शैली में अलग से समापन जैसी कोई चीज नहीं होती। इसमें प्रासंगिक तथ्य और सूचनाएँ दी जा सकती हैं। अकड़ने समाया औ जहक कमा क देतेहुएआखी कुठलों या पैमाफक हवाक समाचरसमाप्त कर दिया जाता है।

रेडियो के लिए समाचार-लेखन संबंधी बुनियादी बातें- रेडियो के लिए समाचार-कॉपी तैयार करते हुए कुछ बुनियादी बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

साफ़-सुथरी और टाइप्ड कॉपी- रेडियो समाचार कानों के लिए यानी सुनने के लिए होते हैं, इसलिए उनके लेखन में इसका ध्यान रखना जरूरी हो जाता है। लेकिन एक महत्वपूर्ण तथ्य नहीं भूलना चाहिए कि सुने जाने से पहले समाचार-वाचक या वाचिका उसे पढ़ते हैं और तब वह श्रोताओं तक पहुँचता है। इसलिए समाचार-कॉपी ऐसे तैयार की जानी चाहिए कि उसे पढ़ने में वाचक/वाचिका को कोई दिक्कत न हो। अगर समाचार-कॉपी टाइप्ड और साफ़-सुथरी नहीं है तो उसे पढ़ने के दौरान वाचक/वाचिका के अटकने या गलत पढ़ने का खतरा रहता है और इससे श्रोताओं का ध्यान बँटता है या वे भ्रमित हो जाते हैं। इससे बचने के लिए-

1. प्रसारण के लिए तैयार की जा रही समाचार-कॉपी को कंप्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए।
2. कॉपी के दोनों ओर पर्याप्त हाशिया छोड़ा जाना चाहिए।
3. एक लाइन में अधिकतम 12-13 शब्द होने चाहिए।
4. पंक्ति के आखिर में कोई शब्द विभाजित नहीं होना चाहिए।
5. पृष्ठ के आखिर में कोई लाइन अधूरी नहीं होनी चाहिए।
6. समाचार-कॉपी में ऐसे जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्ताक्षर (एब्रीवियेशन्स), अंक आदि नहीं लिखने चाहिए, जिन्हें पढ़ने में जबान लड़खड़ाने लगे।

रेडियो समाचार लेखन में अंकों को लिखने के मामले में खास सावधानी रखनी चाहिए-

जैसे- एक से दस तक के अंकों को शब्दों में और 11 से 999 तक अंकों में लिखा जाना चाहिए। 2837550 लिखने की बजाय 'अट्ठाइस लाख सैंतीस हजार पाँच सौ पचास' लिखा जाना चाहिए अन्यथा वाचक/वाचिका को पढ़ने में बहुत मुश्किल होगी। अखबारों में % और $ जैसे संकेत-चिह्नों से काम चल जाता है, लेकिन रेडियो में यह पूरी तरह वर्जित है। अत: इन्हें 'प्रतिशत' और 'डॉलर' लिखा जाना चाहिए। जहाँ भी संभव और उपयुक्त हो, दशमलव को उसके नजदीकी पूर्णांक में लिखना बेहतर होता है। इसी तरह 2837550 रुपये को रेडियो में, लगभग अट्ठाइस लाख रुपये, लिखना श्रोताओं को समझाने के लिहाज से बेहतर है। वित्तीय संख्याओं को उनके नजदीकी पूर्णांक में लिखना चाहिए। खेलों के स्कोर को उसी तरह लिखना चाहिए। सचिन तेंदुलकर ने अगर 98 रन बनाए हैं तो उसे 'लगभग सौ रन" नहीं लिख सकते। मुद्रा-स्फीति के आँकड़े नजदीकी पूर्णांक में नहीं, बल्कि दशमलव में ही लिखे जाने चाहिए। वैसे रेडियो समाचार में आँकड़ों और संख्याओं का अत्यधिक इस्तेमाल नहीं करना चाहिए क्योंकि श्रोताओं के लिए उन्हें समझ पाना काफ़ी कठिन होता है। रेडियो समाचार कभी भी संख्या से नहीं शुरू होना चाहिए। इसी तरह तिथियों को उसी तरह लिखना चाहिए जैसे हम बोलचाल में इस्तेमाल करते हैं-' 15 अगस्त उन्नीस सौ पचासी' न कि 'अगस्त 15, 1985'।

डेडलाइन, संदर्भ और संक्षिप्ताक्षर का प्रयोग- रेडियो में अखबारों की तरह डेडलाइन अलग से नहीं, बल्कि समाचार से ही गुंथी होती है। अखबार दिन में एक बार और वह भी सुबह (और कहीं शाम) छपकर आता है जबकि रेडियो पर चौबीसो घंटे समाचार चलते रहते हैं। श्रोता के लिए समय का फ्रेम हमेशा 'आज' होता है। इसलिए समाचार में आज, आज सुबह, आज दोपहर, आज शाम, आज तड़के आदि का इस्तेमाल किया जाता है।

इसी तरह '.बैठक कल होगी' या '.कल हुई बैठक में..' का प्रयोग किया जाता है। इसी सप्ताह, अगले सप्ताह, पिछले सप्ताह, इस महीने, अगले महीने, पिछले महीने, इस साल, अगले साल, अगले बुधवार या पिछले शुक्रवार का इस्तेमाल करना चाहिए। संक्षिप्ताक्षरों के इस्तेमाल में काफ़ी सावधानी बरतनी चाहिए। बेहतर तो यही होगा कि उनके प्रयोग से बचा जाए और अगर जरूरी हो तो समाचार के शुरू में पहले उसे पूरा दिया जाए, फिर संक्षिप्ताक्षर का प्रयोग किया जाए।

टेलीविजन में दृश्यों की महत्ता सबसे ज्यादा है। यह कहने की जरूरत नहीं कि टेलीविजन देखने और सुनने का माध्यम है और इसके लिए समाचार या आलेख (स्क्रिप्ट) लिखते समय इस बात पर खास ध्यान रखने की जरूरत पड़ती है- 1- शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल हों। 2- टेलीविजन लेखन प्रिंट और रेडियो दोनों ही माध्यमों से काफ़ी अलग है। इसमें कम-से-कम शब्दों में ज्यादा-से-ज्यादा खबर बताने की कला का इस्तेमाल होता है। 3- टी०वी० के लिए खबर लिखने की बुनियादी शर्त दृश्य के साथ लेखन है। दृश्य यानी कैमरे से लिए गए शॉट्स, जिनके आधार पर खबर बुनी जाती है। अगर शॉट्स आसमान के हैं तो हम आसमान की ही बात लिखेंगे, समंदर की नहीं। अगर कहीं आग लगी हुई है तो हम उसी का जिक्र करेंगे, पानी का नहीं।

लेकिन टी०वी० में इस खबर की शुरुआत कुछ अलग होगी। दरअसल टेलीविज़न पर खबर दो तरह से पेश की जाती है। इसका शुरुआती हिस्सा, जिसमें मुख्य खबर होती है, बगैर दृश्य के न्यूज़ रीडर या एंकर पढ़ता है। दूसरा हिस्सा वह होता है, जहाँ से परदे पर एंकर की जगह खबर से संबंधित दृश्य दिखाए जाते हैं। इसलिए टेलीविजन पर खबर दो हिस्सों में बँटी होती है। अगर खबरों के प्रस्तुतिकरण के तरीकों पर बात करें तो इसके भी कई तकनीकी पहलू हैं।

दिल्ली में आग की खबर को टी०वी० में पेश करने के लिए प्रारंभिक सूचना के बाद हम इसे इस तरह लिख सकते हैं-आग की ये लपटें सबसे पहले शाम चार बजे दिखीं, फिर तेजी से फैल गई.......।

टी०वी० खबरों के विभिन्न चरण- किसी भी टी०वी० चैनल पर खबर देने का मूल आधार वही होता है जो प्रिंट या रेडियो पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रचलित है, यानी सबसे पहले सूचना देना। टी०वी० में भी ये सूचनाएँ कई चरणों से होकर दर्शकों के पास पहुँचती हैं। ये चरण हैं-

1-फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज 2-ड्राई एंकर 3-फ़ोन-इन 4-एंकर-विजुअल 5-एंकर-बाइट 6-लाइव 7-एंकर-पैकेज

1. **फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज-** सबसे पहले कोई बड़ी खबर फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज के रूप में तत्काल दर्शकों तक पहुँचाई जाती है। इसमें कम-से-कम शब्दों में महज सूचना दी जाती है।
2. **ड्राई एंकर-** इसमें एंकर खबर के बारे में दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है कि कहाँ, क्या, कब और कैसे हुआ। जब तक खबर के दृश्य नहीं आते तब तक एंकर दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारियों के आधार पर सूचनाएँ पहुँचाता है।

3. **फोन-इन-** इसके बाद खबर का विस्तार होता है और एंकर रिपोर्टर से फ़ोन पर बात करके सूचनाएँ दर्शकों तक पहुँचाता है। इसमें रिपोर्टर घटना वाली जगह पर मौजूद होता है और वहाँ से उसे जितनी ज्यादा-से-ज्यादा जानकारियाँ मिलती हैं, वह दर्शकों को बताता है।
4. **एंकर-विजुअल-** जब घटना के दृश्य या विजुअल मिल जाते हैं, तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है, जो एंकर पढ़ता है। इस खबर की शुरुआत भी प्रारंभिक सूचना से होती है और बाद में कुछ वाक्यों पर प्राप्त दृश्य दिखाए जाते हैं।
5. **एंकर-बाइट-** बाइट यानी कथन। टेलीविजन पत्रकारिता में बाइट का काफ़ी महत्व है। टेलीविजन में किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे संबंधित बाइट दिखाई जाती है। किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही उस घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखा और सुनाकर खबर को प्रामाणिकता प्रदान की जाती है।
6. **लाइव-** लाइव यानी किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण। सभी टी०वी० चैनल कोशिश करते हैं कि किसी बड़ी घटना के दृश्य तत्काल दर्शकों तक सीधे पहुँचाए जा सकें। इसके लिए मौके पर मौजूद रिपोर्टर और कैमरामैन ओ०बी० वैन के जरिये घटना के बारे में सीधे दर्शकों को दिखाते और बताते हैं।
7. **एंकर-पैकेज-** एंकर-पैकेज किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ पेश करने का एक जरिया है। इसमें संबंधित घटना के दृश्य, उससे जुड़े लोगों की बाइट, ग्राफ़िक के जरिये जरूरी सूचनाएँ आदि होती हैं। टेलीविजन लेखन इन तमाम रूपों को ध्यान में रखकर किया जाता है। जहाँ जैसी जरूरत होती है, वहाँ वैसे वाक्यों का इस्तेमाल होता है। शब्द का काम दृश्य को आगे ले जाना है ताकि वह दूसरे दृश्यों से जुड़ सके, उसमें निहित अर्थ को सामने लाए, ताकि खबर के सारे आशय खुल सकें।

रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा तथा शैली-

रेडियो और टी०वी० आम आदमी के माध्यम हैं। भारत जैसे विकासशील देश में उसके श्रोताओं और दर्शकों में पढ़े-लिखे लोगों से निरक्षर तक और मध्यम वर्ग से लेकर किसान-मजदूर तक सभी होते हैं। इन सभी लोगों की सूचना की जरूरतें पूरी करना ही रेडियो और टी०वी० का उद्देश्य है। जाहिर है कि लोगों तक पहुँचने का माध्यम भाषा है और इसलिए भाषा ऐसी होनी चाहिए कि वह सभी की समझ में आसानी से आ सके, लेकिन साथ ही भाषा के स्तर और उसकी गरिमा के साथ कोई समझौता भी न करना पड़े।

रेडियो और टेलीविज़न के समाचारों में बोलचाल की सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए। इसके लिए-

1- वाक्य छोटे, सीधे और स्पष्ट लिखे जाएँ। 2- जब भी कोई खबर लिखनी हो तो पहले उसकी प्रमुख बातों को ठीक से समझ लेना चाहिए। 3- हम कितनी सरल, संप्रेषणीय और प्रभावी भाषा लिख रहे हैं, यह जाँचने का एक बेहतर तरीका यह है कि हम समाचार लिखने के बाद उसे बोल-बोलकर पढ़ लें। 4- भाषा प्रवाहमयी होनी चाहिए।

सावधानियाँ

रेडियो और टी०वी० समाचार में भाषा और शैली के स्तर पर काफ़ी सावधानी बरतनी पड़ती है-

1. ऐसे कई शब्द हैं, जिनका अखबारों में धडल्ले से इस्तेमाल होता है लेकिन रेडियो और टी०वी० में उनके प्रयोग से बचा जाता है। जैसे-निम्नलिखित, उपयुक्त, अधोहस्ताक्षरित और क्रमाक आदि शब्दों का प्रयोग इन माध्यमों में बिलकुल मना है। इसी तरह ‘ द्वारा ‘शब्द के इस्तेमाल से भी बचने की कोशिश की जाती है क्योंकि इसका प्रयोग कई बार बहुत भ्रामक अर्थ देने लगता है; जैसे-‘पुलिस दवारा चोरी करते हुए दो व्यक्तियों को पकड़ लिया गया।’ इसकी बजाय ‘पुलिस ने दो व्यक्तियों को चोरी करते हुए पकड़ लिया।’ ज्यादा स्पष्ट है।
2. तथा, एव, अथवा, व, किंतु, परतु, यथा आदि शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए और उनकी जगह और, या, लेकिन आदि शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए।
3. साफ़-सुथरी और सरल भाषा लिखने के लिए गैरजरूरी विशेषणों, सामासिक और तत्सम शब्दों, अतिरंजित उपमाओं आदि से बचना चाहिए। इनसे भाषा कई बार बोझिल होने लगती है।

4. मुहावरों के इस्तेमाल से भाषा आकर्षक और प्रभावी बनती है, इसलिए उनका प्रयोग होना चाहिए। लेकिन मुहावरों का इस्तेमाल स्वाभाविक रूप से और जहाँ जरूरी हो, वहीं होना चाहिए अन्यथा वे भाषा के स्वाभाविक प्रवाह को बाधित करते हैं।
5. वाक्य छोटे-छोटे हों। एक वाक्य में एक ही बात कहनी चाहिए।
6. वाक्यों में तारतम्य ऐसा हो कि कुछ टूटता या छूटता हुआ न लगे।
7. शब्द प्रचलित हों और उनका उच्चारण सहजता से किया जा सके। क्रय-विक्रय की जगह खरीदारी-बिक्री, स्थानांतरण की जगह तबादला और पंक्ति की जगह कतार टी०वी० में सहज माने जाते हैं।

इंटरनेट- इंटरनेट को इंटरनेट पत्रकारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता या वेब पत्रकारिता जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता है। नई पीढ़ी के लिए अब यह एक आदत-सी बनती जा रही है। जो लोग इंटरनेट के अभ्यस्त हैं या जिन्हें चौबीसो घंटे इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है, उन्हें अब कागज पर छपे हुए अखबार उतने ताजे और मनभावन नहीं लगते। उन्हें हर घंटे-दो घंटे में खुद को अपडेट करने की लत लगती जा रही है।

भारत में कंप्यूटर साक्षरता की दर बहुत तेजी से बढ़ रही है। पर्सनल कंप्यूटर इस्तेमाल करने वालों की संख्या में भी लगातार इजाफ़ा हो रहा है। हर साल करीब 50-55 फ़ीसदी की रफ़्तार से इंटरनेट कनेक्शनों की संख्या बढ़ रही है। इसकी वजह यह है कि इटरनेट पर आप एक ही झटके में झुमरीतलैया से लेकर होनोलूलू तक की खबरें पढ़ सकते हैं। दुनियाभर की चर्चाओं-परिचर्चाओं में शरीक हो सकते हैं और अखबारों की पुरानी फ़ाइलें खंगाल सकते हैं।

इंटरनेट एक टूल ही नहीं और भी बहुत कुछ है-

इंटरनेट सिर्फ़ एक टूल यानी औजार है, जिसे आप सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन इंटरनेट जहाँ सूचनाओं के आदान-प्रदान का बेहतरीन औजार है, वहीं वह अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का भी जरिया है। इंटरनेट पर पत्रकारिता के भी दो रूप हैं।

पहला तो इंटरनेट का एक माध्यम या औजार के तौर पर इस्तेमाल, यानी खबरों के संप्रेषण के लिए इंटरनेट का उपयोग। दूसरा, रिपोर्टर अपनी खबर को एक जगह से दूसरी जगह तक ईमेल के जरिये भेजने और समाचारों के संकलन, खबरों के सत्यापन तथा पुष्टिकरण में भी इसका इस्तेमाल करता है। रिसर्च या शोध का काम तो इंटरनेट ने बेहद आसान कर दिया है। टेलीविजन या अन्य समाचार माध्यमों में खबरों के बैकग्राउंडर तैयार करने या किसी खबर की पृष्ठभूमि तत्काल जानने के लिए जहाँ पहले ढेर सारी अखबारी कतरनों की फ़ाइलों को ढूँढना पड़ता था, वहीं आज चंद मिनटों में इंटरनेट विश्वव्यापी संजाल के भीतर से कोई भी बैकग्राउंडर या पृष्ठभूमि खोजी जा सकती है। एक जमाना था जब टेलीप्रिंटर पर एक मिनट में 80 शब्द एक जगह से दूसरी जगह भेजे जा सकते थे, आज स्थिति यह है कि एक सेकेंड में 56 किलोबाइट यानी लगभग 70 हजार शब्द भेजे जा सकते हैं।

इंटरनेट पत्रकारिता

इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है। इंटरनेट पर किसी भी रूप में खबरों, लेखों, चर्चा-परिचर्चाओं, बहसों, फ़ीचर, झलकियों, डायरियों के जरिये अपने समय की धड़कनों को महसूस करने और दर्ज करने का काम करते हैं तो वही इंटरनेट पत्रकारिता है। आज तमाम प्रमुख अखबार पूरे-के-पूरे इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। कई प्रकाशन-समूहों ने और कई निजी कंपनियों ने खुद को इंटरनेट पत्रकारिता से जोड़ लिया है। चूँकि यह एक अलग माध्यम है, इसलिए इस पर पत्रकारिता का तरीका भी थोड़ा-सा अलग है।

इंटरनेट पत्रकारिता का इतिहास

विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता के स्वरूप और विकास का पहला दौर था 1982 से 1992 तक, जबकि चला 1993 से 2001 तक। तीसरे दौर की इंटरनेट पत्रकारिता 2002 से अब तक की है। पहले चरण में इंटरनेट खुद प्रयोग के धरातल पर था, इसलिए बड़े प्रकाशन-समूह यह देख रहे थे कि कैसे अखबारों की सुपर इन्फॉर्मेशन-हाईवे पर दर्ज हो। तब एओएल यानी अमेरिका ऑनलाइन जैसी कुछ चर्चित कंपनियाँ सामने आई। लेकिन कुल मिलाकर प्रयोगों का दौर था।

सच्चे अर्थों में इंटरनेट पत्रकारिता की शुरुआत 1983 से 2002 के बीच हुई। इस दौर में तकनीक स्तर पर भी इंटरनेट का जबरदस्त विकास हुआ। नई वेब भाषा एचटीएमएल (हाइपर टेक्स्ट माक्रडअप लैंग्वेज) आई, इंटरनेट ईमेल आया, इंटरनेट

एक्सप्लोरर और नेटस्केप नाम के ब्राउजर (वह औजार जिसके जरिये विश्वव्यापी जाल में गोते लगाए जा सकते हैं) आए। इन्होंने इंटरनेट को और भी सुविधासंपन्न और तेज-रफ़्तार वाला बना दिया। इस दौर में लगभग सभी बड़े अखबार और टेलीविजन समूह विश्वजाल में आए।

'न्यूयॉर्क टाइम्स', 'वाशिंगटन पोस्ट', 'सीएनएन', 'बीबीसी' सहित तमाम बड़े घरानों ने अपने प्रकाशनों, प्रसारणों के इंटरनेट संस्करण निकाले। दुनियाभर में इस बीच इंटरनेट का काफ़ी विस्तार हुआ। न्यू मीडिया के नाम पर डॉटकॉम कंपनियों का उफ़ान आया, पर उतनी ही तेजी के साथ इसका बुलबुला फूटा भी। सन 1996 से 2002 के बीच अकेले अमेरिका में ही पाँच लाख लोगों को डॉटकॉम की नौकरियों से हाथ धोना पड़ा। विषय सामग्री और पर्याप्त आर्थिक आधार के अभाव में ज्यादातर डॉटकॉम कंपनियाँ बंद हो गई।

लेकिन यह भी सही है कि बड़े प्रकाशन-समूहों ने इस दौर में भी खुद को किसी तरह जमाए रखा। चूँकि जनसंचार के क्षेत्र में सक्रिय लोग यह जानते थे कि और चाहे जो हो, सूचनाओं के आदान-प्रदान के माध्यम के तौर पर इंटरनेट का कोई जवाब नहीं। इसलिए इसकी प्रासंगिकता हमेशा बनी रहेगी। इसलिए कहा जा रहा है कि इंटरनेट पत्रकारिता का 2002 से शुरू हुआ तीसरा दौर सच्चे अर्थों में टिकाऊ हो सकता है।

भारत में इंटरनेट पत्रकारिता

भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का अभी दूसरा दौर चल रहा है। भारत के लिए पहला दौर 1993 से शुरू माना जा सकता है, जबकि दूसरा दौर सन 2003 से शुरू हुआ है। पहले दौर में हमारे यहाँ भी प्रयोग हुए। डॉटकॉम का तूफान आया और बुलबुले की तरह फूट गया। अंतत: वही टिके रह पाए जो मीडिया उद्योग में पहले से ही टिके हुए थे। आज पत्रकारिता की दृष्टि से 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया', 'हिंदुस्तान टाइम्स', 'इंडियन एक्सप्रेस', 'हिंदू', 'ट्रिब्यून', 'स्टेट्समैन', 'पॉयनियर', 'एनडी टी०वी०', 'आईबीएन', 'जी न्यूज़', 'आजतक' और 'आउटलुक ' की साइटें ही बेहतर हैं। 'इंडिया टुडे" जैसी कुछ साइटें भुगतान के बाद ही देखी जा सकती हैं।

जो साइटें नियमित अपडेट होती हैं, उनमें 'हिंदू', 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया', 'आउटलुक', 'इंडियन एक्सप्रेस', 'एनडी टी०वी० ', 'आजतक' और 'जी न्यूज़' प्रमुख हैं। लेकिन भारत में सच्चे अर्थों में यदि कोई वेब पत्रकारिता कर रहा है तो वह 'रीडिफ़ डॉटकॉम', 'इंडियाइंफोलाइन' व 'सीफी' जैसी कुछ ही साइटें हैं। रीडिफ़ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है जो कुछ गंभीरता के साथ इंटरनेट पत्रकारिता कर रही है। वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय 'तहलका डॉटकॉम' को जाता है।

हिंदी नेट संसार

हिंदी में नेट पत्रकारिता 'वेब दुनिया' के साथ शुरू हुई। इंदौर के 'नई दुनिया समूह' से शुरू हुआ यह पोर्टल हिंदी का संपूर्ण पोर्टल है। इसके साथ ही हिंदी के अखबारों ने भी विश्वजाल में अपनी उपस्थिति दर्ज करानी शुरू की। 'जागरण', 'अमर उजाला', 'नई दुनिया', 'हिंदुस्तान', 'भास्कर', 'राजस्थान पत्रिका', 'नवभारत टाइम्स', 'प्रभात खबर' व 'राष्ट्रीय सहारा' के वेब संस्करण शुरू हुए। 'प्रभासाक्षी' नाम से शुरू हुआ अखबार, प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ़ इंटरनेट पर ही उपलब्ध है। आज पत्रकारिता के लिहाज से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट बीबीसी की है। यही एक साइट है, जो इंटरनेट के मानदंडों के हिसाब से चल रही है। वेब दुनिया ने शुरू में काफी आशाएँ जगाई थीं, लेकिन धीरे-धीरे स्टाफ़ और साइट की अपडेटिंग में कटौती की जाने लगी, जिससे पत्रकारिता की वह ताजगी जाती रही जो शुरू में नजर आती थी।

हिंदी वेबजगत का एक अच्छा पहलू यह भी है कि इसमें कई साहित्यिक पत्रिकाएँ चल रही हैं। अनुभूति, अभिव्यक्ति, हिंदी नेस्ट, सराय आदि अच्छा काम कर रहे हैं। कुल मिलाकर हिंदी की वेब पत्रकारिता अभी अपने शैशव काल में ही है। सबसे बड़ी समस्या हिंदी के फ़ौंट की है। अभी भी हमारे पास कोई एक 'की-बोर्ड' नहीं है। डायनमिक फ़ौंट की अनुपलब्धता के कारण हिंदी की ज्यादातर साइटें खुलती ही नहीं हैं। इसके लिए 'की-बोर्ड' का मानकीकरण करना चाहिए।

पत्रकारीय लेखन-

अखबार पाठकों को सूचना देने, उन्हें जागरूक और शिक्षित बनाने तथा उनका मनोरंजन करने का दायित्व निभाते हैं। लोकतांत्रिक समाजों में वे एक पहरेदार, शिक्षक और जनमत निर्माता के तौर पर बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

अपने पाठकों के लिए वे बाहरी दुनिया में खुलने वाली ऐसी खिड़की हैं, जिनके जरिये असंख्य पाठक हर रोज सुबह देश-दुनिया और अपने पास-पड़ोस की घटनाओं, समस्याओं, मुद्दों तथा विचारों से अवगत होते हैं।

अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं। इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं-

1. पूर्णकालिक

2. अंशकालिक

3. फ्रीलांसर यानी स्वतंत्र।

1. **पूर्णकालिक पत्रकार-** इस श्रेणी के पत्रकार किसी समाचार संगठन में काम करने वाले नियमित कर्मचारी होते हैं। इन्हें वेतन, भत्ते एवं अन्य सुविधाएँ प्राप्त होती हैं।
2. **अंशकालिक पत्रकार-** इस श्रेणी के पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर एक निश्चित समयावधि के लिए कार्य करते हैं।
3. **फ्रीलांसर पत्रकार-** इस श्रेणी के पत्रकारों का संबंध किसी विशेष समाचार-पत्र से नहीं होता, बल्कि वे भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचार-पत्रों के लिए लिखते हैं।

साहित्यिक और पत्रकारीय लेखन में अंतर

1. पत्रकारीय लेखन का संबंध तथा दायरा समसामयिक और वास्तविक घटनाओं, समस्याओं तथा मुद्दों से होता है। यह साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन-कविता, कहानी, उपन्यास आदि-इस मायने में अलग है कि इसका रिश्ता तथ्यों से होता है, न कि कल्पना से।
2. पत्रकारीय लेखन साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन से इस मायने में भी अलग है कि यह अनिवार्य रूप से तात्कालिकता और अपने पाठकों की रुचियों तथा जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाने वाला लेखन है, जबकि साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन में लेखक को काफी छूट होती है।

पत्रकारीय लेखन के स्मरणीय तथ्य- पत्रकारीय लेखन करने वाले विशाल जन-समुदाय के लिए लिखते हैं, जिसमें पाठकों का दायरा और ज्ञान का स्तर विस्तृत होता है। इसके पाठक मजदूर से विद्वान तक होते हैं, अत: उसकी लेखन-शैली और भाषा-

1. सरल, सहज और रोचक होनी चाहिए।
2. आलंकारिक और संस्कृतनिष्ठ होने की बजाय आम बोलचाल वाली होनी चाहिए।
3. शब्द सरल और आसानी से समझ में आने वाले होने चाहिए।
4. वाक्य छोटे और सहज होने चाहिए।

समाचार-लेखन की शैली- अखबारों में प्रकाशित अधिकांश समाचार एक खास शैली में लिखे जाते हैं। इन समाचारों में किसी भी घटना, समस्या या विचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य, सूचना या जानकारी को सबसे पहले पैराग्राफ़ में लिखा जाता है। उसके बाद के पैराग्राफ़ में उससे कम महत्वपूर्ण सूचना या तथ्य की जानकारी दी जाती है। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक समाचार खत्म नहीं हो जाता।

उलटा पिरामिड शैली

समाचार-लेखन की एक विशेष शैली है, जिसे उलटा पिरामिड शैली (इन्वर्टेड पिरामिड टी या स्टाइल) के नाम से जाना जाता है। यह समाचार-लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। यह शैली कहानी या कथा-लेखन की शैली के ठीक उलटी है, जिसमें क्लाइमेक्स बिलकुल आखिर में आता है। इसे 'उलटा पिरामिड शैली' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना यानी 'क्लाइमेक्स' पिरामिड के सबसे निचले हिस्से में नहीं होती, बल्कि इस शैली में पिरामिड को उलट दिया जाता है।

हालाँकि इस शैली का प्रयोग 19वीं सदी के मध्य से ही शुरू हो गया था लेकिन इसका विकास अमेरिका में दौरान हुआ।

उस समय संवाददाताओं को अपनी खबरें टेलीग्राफ़ संदेशों के ज् यूँ महँगी, अनियमित और दुर्लभ थीं। कई बार तकनीकी कारणों से सेवा ठप्प हो किसी घटना की खबर कहानी की तरह विस्तार से लिखने की बजाय संक्षेप में पिरामिड शैली का विकास हुआ और धीरे-धीरे लेखन और संपादन की सुविधा के की मानक (स्टैंडर्ड) शैली बन गई।

समाचार लेखन और छह ककार

किसी समाचार को लिखते हुए जिन छह सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है, वे हैं-1-क्या हुआ? 2-किसके (या कौन) साथ हुआ? 3-कब हुआ? 4-कहाँ हुआ? 5-कैसे हुआ? 6-क्यों हुआ?

ये क्या, किसके (या कौन), कब, कहाँ, कैसे और क्यों ही छह ककार हैं।

समाचार के मुखड़े (इंट्रो) यानी पहले पैराग्राफ़ या शुरुआती दो-तीन पंक्तियों में आमतौर पर तीन या चार ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जाती है। ये चार ककार हैं-क्या, कौन, कब और कहाँ? इसके बाद समाचार की बॉडी में और समापन के पहले बाकी दो ककारों-कैसे ‘ और क्यों-का जवाब दिया जाता है। इस तरह छह ककारों के आधार पर समा- चार तैयार होता है। इनमें से पहले चार ककार-क्या, कौन, कब और कहाँ-सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं जबकि बाकी दो ककारों-कैसे और क्यों-में विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर दिया जाता है।

फीचर- समकालीन घटना या किसी भी क्षेत्र विशेष की विशिष्ट जानकारी के सचित्र तथा मोहक विवरण को फ़ीचर कहा जाता है। इसमें तथ्यों को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसके संवादों में गहराई होती है। यह सुव्यवस्थित, सृजनात्मक व अद्धि न है जिक उद्देश्य पाठकों को स्चना ने तथा उह शतकने के साथ मुष्यरूप सेउक मोजना करना होता है। फ़ीचर में विस्तार की अपेक्षा होती है। इसकी अपनी एक अलग शैली होती है। एक विषय पर लिखा गया फ़ीचर प्रस्तुति विविधता के कारण अलग अंदाज प्रस्तुत करता है। इसमें भूत, वर्तमान तथा भविष्य का समावेश हो सकता है। इसमें तथ्य, कथन व कल्पना का उपयोग किया जा सकता है। फ़ीचर में आँकड़े, फोटो, कार्टून, चार्ट, नक्शे आदि का उपयोग उसे रोचक बना देता है।

फीचर व समाचार में अंतर-

1. फ़ीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ जाहिर करने का अवसर होता है। जबकि समाचार-लेखन में वस्तुनिष्ठता और तथ्यों की शुद्धता पर जोर दिया जाता है।
2. फ़ीचर-लेखन में उलटा पिरामिड शैली का प्रयोग नहीं होता। इसकी शैली कथात्मक होती है।
3. फ़ीचर-लेखन की भाषा सरल, रूपात्मक व आकर्षक होती है, परंतु समाचार की भाषा में सपाटबयानी होती है।
4. फ़ीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती। ये आमतौर पर 200 शब्दों से लेकर 2500 शब्दों तक के होते हैं, जबकि समाचारों पर शब्द-सीमा लागू होती है।
5. फ़ीचर का विषय कुछ भी हो सकता है, समाचार का नहीं।

फ़ीचर के प्रकार-

फ़ीचर के प्रकार निम्नलिखित हैं : 1- समाचार फीचर 2- घटनापरक फीचर 3- व्यक्तिपरक फीचर
4- लोकाभिरुचि फ़ीचर 5- सांस्कृतिक फ़ीचर 6-साहित्यिक फीचर 7-विश्लेषण फीचर 8- विज्ञान फ़ीचर।

फीचर-लेखन संबंधी मुख्य बातें-

1. फ़ीचर को सजीव बनाने के लिए उस विषय से जुड़े लोगों की मौजूदगी जरूरी होती है।
2. फ़ीचर के कथ्य को पात्रों के माध्यम से बताना चाहिए।
3. अंदाज ऐसा हो कि पाठक यह महसूस करें कि वे घटनाओं को खुद देख और सुन रहे हैं।
4. फ़ीचर मनोरंजक व सूचनात्मक होना चाहिए।
5. फ़ीचर शोध रिपोर्ट नहीं है।
6. इसे किसी बैठक या सभा के कार्यवाही विवरण की तरह नहीं लिखा जाना चाहिए।
7. फ़ीचर का कोई-न-कोई उद्देश्य होना चाहिए। उस उद्देश्य के इर्द-गिर्द सभी प्रासंगिक सूचनाएँ तथ्य और विचार गुंथे होने चाहिए।
8. फ़ीचर तथ्यों, सूचनाओं और विचारों पर आधारित कथात्मक विवरण और विश्लेषण होता है।

9. फ़ीचर-लेखन का कोई निश्चित ढाँचा या फ़ॉर्मूला नहीं होता। इसे कहीं से भी अर्थात् प्रारंभ, मध्य या अंत से शुरू किया जा सकता है।
10. फ़ीचर का हर पैराग्राफ अपने पहले के पैराग्राफ से सहज तरीके से जुड़ा होना चाहिए तथा उनमें प्रारंभ से अंत तक प्रवाह व गति रहनी चाहिए।
11. पैराग्राफ छोटे होने चाहिए तथा एक पैराग्राफ में एक पहलू पर ही फोकस करना चाहिए।

रिपोर्ट- रिपोर्ट समाचार-पत्र, रेडियो और टेलीविजन की एक विशेष विधा है। इसके माध्यम से किसी घटना, समारोह या आँखों-देखे किसी अन्य कार्यक्रम की रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है। चूँकि दूरदर्शन दृश्य एवं श्रव्य दोनों ही उद्देश्य पूरा करने वाला माध्यम है, अत: इसके लिए आँखों-देखी घटना की रिपोर्ट तैयार की जाती है जबकि रेडियो के लिए केवल सुनने योग्य रिपोर्ट तैयार करने से काम चल जाता है। कभी संचालक द्वारा दी जा रही कार्यवाही का विवरण देखकर ही उसे रिपोर्ट का आधार बनाकर रिपोर्ट तैयार कर ली जाती है।

रिपोर्ट की विशेषताएँ- रिपोर्ट की पहली मुख्य विशेषता उसकी संक्षिप्तता है। संक्षिप्त रिपोर्ट को ही लोग पढ़ पाते हैं। ज्यादा विस्तृत रिपोर्ट पढ़ी नहीं जाती, अत: उसे तैयार करना उद्देश्यहीन हो जाता है।रिपोर्ट की दूसरी मुख्य विशेषता उसकी निष्पक्षता है। रिपोर्ट को प्रभावशाली बनाने के लिए निष्पक्ष रिपोर्ट तैयार करनी चाहिए। रिपोर्ट की तीसरी प्रमुख विशेषता उसकी सत्यता है। इस तथ्य से रहित रिपोर्ट अप्रासंगिक और निरुद्देश्य हो जाती है। असत्य रिपोर्ट पर न कोई विश्वास करता है और न कोई पढ़ना पसंद करता है। रिपोर्ट की अगली विशेषता उसकी पूर्णता है। आधी-अधूरी रिपोर्ट से रिपोर्टर का न उद्देश्य पूरा होता है और न वह पाठकों की समझ में आती है। रिपोर्ट की अगली विशेषता है-उसका संतुलित होना। अर्थात् इसे सभी पक्षों को समान महत्व देते हुए तैयार करना चाहिए।

विशेष रिपोर्ट के प्रकार- विशेष रिपोर्ट कई प्रकार की होती है- 1- खोजी रिपोर्ट (इन्वेस्टिगेटिव रिपोर्ट) 2- इन-डेप्थ रिपोर्ट 3- विश्लेषणात्मक रिपोर्ट 4- विवरणात्मक रिपोर्ट।

खोजी रिपोर्ट (इन्वेस्टिगेटिव रिपोर्ट)- इस प्रकार की रिपोर्ट में रिपोर्टर मौलिक शोध और छानबीन के जरिये ऐसी सूचनाएँ या तथ्य सामने लाता है जो सार्वजानिक तौर पर पहले से उपलब्ध नहीं थीं। खोजी रिपोर्ट का इस्तेमाल आमतौर पर भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है।

इन-डेप्थ रिपोर्ट- इस प्रकार की रिपोर्ट में सार्वजानिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है और उसके आधार पर किसी घटना, समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है।

विश्लेषणात्मक रिपोर्ट- इस तरह की रिपोर्ट में पत्रकार किसी विशेष विषय पर विशेषज्ञता हासिल करता है और आंकड़ों को एकत्रित करके लोगों को उन घटनाओं की पहचान कराता है जो स्पष्ट नहीं होती हैं।

विवरणात्मक रिपोर्ट- इस तरह की रिपोर्ट में किसी घटना या समस्या के विस्तृत और बारीक विवरण को प्रस्तुत करने की कोशिश की जाती है। विभिन्न प्रकार की विशेष रिपोर्टों को समाचार-लेखन की उलटा पिरामिड-शैली में ही लिखा जाता है लेकिन कई बार ऐसी रिपोर्टों को फ़ीचर शैली में भी लिखा जाता है। चूँकि ऐसी रिपोर्ट सामान्य समाचारों की तुलना में बड़ी और विस्तृत होती हैं, इसलिए पाठकों की रुचि बनाए रखने के लिए कई बार उलटा पिरामिड और फ़ीचर दोनों ही शैलियों को मिलाकर इस्तेमाल किया जाता है। रिपोर्ट बहुत विस्तृत और बड़ी हो तो उसे श्रृंखलाबद्ध करके कई दिनों तक किस्तों में छापा जाता है। विशेष रिपोर्ट की भाषा सरल, सहज और आम बोलचाल की होनी चाहिए।

रिपोर्ट-लेखन की विशेषताएँ- रिपोर्ट-लेखन की भाषा सरल व सहज होनी चाहिए। उसमें संक्षिप्तता का गुण भी होना चाहिए।

आलेख- किसी एक विषय पर विचार प्रधान एवं गद्य प्रधान अभिव्यक्ति को 'आलेख' कहा जाता है। आलेख वस्तुत: एक प्रकार के लेख होते हैं जो अधिकतर संपादकीय पृष्ठ पर ही प्रकाशित होते हैं। इनका संपादकीय से कोई संबंध नहीं होता। ये लेख किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो सकते हैं, जैसे-खेल, समाज, राजनीति, अर्थ, फिल्म आदि। इनमें सूचनाओं का होना अनिवार्य है।

आलेख के मुख्य अंग- आलेख के मुख्य अंग हैं-भूमिका, विषय का प्रतिपादन, तुलनात्मक चर्चा व निष्कर्ष। सर्वप्रथम, शीर्षक के अनुकूल भूमिका लिखी जाती है। यह बहुत लंबी न होकर संक्षेप में होनी चाहिए। विषय के प्रतिपादन में विषय का वर्गीकरण, आकार, रूप व क्षेत्र आते हैं। इसमें विषय का क्रमिक विकास किया जाता है। विषय में तारतम्यता व क्रमबद्धता अवश्य होनी

चाहिए। तुलनात्मक चर्चा में विषयवस्तु का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है और अंत में, विषय का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है।

आलेख रचना के संबंध में प्रमुख बातें-

1. लेख लिखने से पूर्व विषय का चिंतन-मनन करके विषयवस्तु का विश्लेषण करना चाहिए।
2. विषयवस्तु से संबंधित आँकड़ों व उदाहरणों का उपयुक्त संग्रह करना चाहिए।
3. लेख में श्रृंखलाबद्धता होना जरूरी है।
4. लेख की भाषा सरल, बोधगम्य व रोचक होनी चाहिए। वाक्य बहुत बड़े नहीं होने चाहिए। एक परिच्छेद में एक ही भाव व्यक्त करना चाहिए।
5. लेख की प्रस्तावना व समापन में रोचकता होनी जरूरी है।
6. विरोधाभास, दोहरापन, असंतुलन, तथ्यों की असंदिग्धता आदि से बचना चाहिए।

विचारपरक लेखन- अखबारों में समाचार और फ़ीचर के अलावा विचारपरक सामग्री का भी प्रकाशन होता है। कई अखबारों की पहचान उनके वैचारिक रुझान से होती है। एक तरह से अखबारों में प्रकाशित होने वाले विचारपूर्ण लेखन से उस अखबार की छवि बनती है। अखबारों में संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय अग्रलेख, लेख और टिप्पणियाँ इसी विचारपरक पत्रकारीय लेखन की श्रेणी में आते हैं। इसके अलावा, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों या वरिष्ठ पत्रकारों के स्तंभ (कॉलम) भी विचारपरक लेखन के तहत आते हैं। कुछ अखबारों में संपादकीय पृष्ठ के सामने ऑप-एड पृष्ठ पर भी विचारपरक लेख, टिप्पणियाँ और स्तंभ प्रकाशित होते हैं।

संपादकीय लेखन- संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय को उस अखबार की आवाज माना जाता है। संपादकीय के जरिये अखबार किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करते हैं। संपादकीय किसी व्यक्ति-विशेष का विचार नहीं होता, इसलिए उसे किसी के नाम के साथ नहीं छापा जाता। संपादकीय लिखने का दायित्व उस अखबार में काम करने वाले संपादक और उनके सहयोगियों पर होता है। आमतौर पर अखबारों में सहायक संपादक ही संपादकीय लिखते हैं। कोई बाहर का लेखक या संपादक नहीं।

स्तंभ लेखन- स्तंभ-लेखन भी विचारपरक लेखन का एक प्रमुख रूप है। कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी अपनी एक लेखन-शैली भी विकसित हो जाती है। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा दे देते हैं। स्तंभ का विषय चुनने और उसमें अपने विचार व्यक्त करने की स्तंभ लेखक को पूरी छूट होती है। स्तंभ में लेखक के विचार अभिव्यक्त होते हैं। यही कारण है कि स्तंभ अपने लेखकों के नाम पर जाने और पसंद किए जाते हैं। कुछ स्तंभ इतने लोकप्रिय होते हैं कि अखबार उनके कारण भी पहचाने जाते हैं।

साक्षात्कार (इंटरव्यू)- समाचार माध्यमों में साक्षात्कार का बहुत महत्व है। पत्रकार एक तरह से साक्षात्कार के जरिये ही समाचार, फ़ीचर, विशेष रिपोर्ट और अन्य कई तरह के पत्रकारीय लेखन के लिए कच्चा माल इकट्ठा करते हैं। पत्रकारीय साक्षात्कार और सामान्य बातचीत में यह फ़र्क होता है कि साक्षात्कार में एक पत्रकार किसी अन्य व्यक्ति से तथ्य, उसकी राय और भावनाएँ जानने के लिए सवाल पूछता है। साक्षात्कार का एक स्पष्ट मकसद और ढाँचा होता है। एक सफल साक्षात्कार के लिए आपके पास न सिर्फ़ ज्ञान होना चाहिए बल्कि आपमें संवदेनशीलता, कूटनीति, धैर्य और साहस जैसे गुण भी होने चाहिए।

सफल और अच्छा साक्षात्कार कैसे लिखें- एक अच्छे और सफल साक्षात्कार के लिए निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं-

1. जिस विषय पर और जिस व्यक्ति के साथ साक्षात्कार करने आप जा रहे हैं, उसके बारे में आपके पास पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए।
2. आप साक्षात्कार से क्या निष्कर्ष निकालना चाहते हैं, इसके बारे में स्पष्ट रहना बहुत जरूरी है।
3. आपको वे सवाल पूछने चाहिए जो किसी अखबार के एक आम पाठक के मन में हो सकते हैं।
4. साक्षात्कार को अगर रिकॉर्ड करना संभव हो तो बेहतर है, लेकिन अगर ऐसा संभव न हो तो साक्षात्कार के दौरान आप नोट्स लेते रहें।
5. साक्षात्कार को लिखते समय आप दो में से कोई भी एक तरीका अपना सकते हैं। एक आप साक्षात्कार को सवाल और फिर जवाब के रूप में लिख सकते हैं या फिर उसे एक आलेख की तरह से भी लिख सकते हैं।

संपादकीय का समाचार-पत्र के लिए महत्व- संपादकीय को किसी समाचार-पत्र की आवाज माना जाता है। यह एक निश्चित पृष्ठ पर छपता है। यह अंश समाचारपत्र को पठनीय तथा अविस्मरणीय बनाता है। संपादकीय से ही समाचार-पत्र की अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ (गुणवत्ता) का निर्धारण किया जाता है। समाचार-पत्र के लिए इसकी महत्ता सर्वोपरि है।

विशेष लेखन से एक ओर समाचार-पत्र में विविधता आती है तो दूसरी ओर उनका कलेवर व्यापक होता है। वास्तव में पाठक अपनी व्यापक रुचियों के कारण साहित्य, विज्ञान, खेल, सिनेमा आदि विविध क्षेत्रों से जुड़ी खबरें पढ़ना चाहता है, इसलिए समाचार-पत्रों में विशेष लेखन के माध्यम से निरंतर और विशेष जानकारी देना आवश्यक हो जाता है।

विशेष लेखन- विशेष लेखन का अर्थ है-किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। अधिकांश समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के अलावा टी०वी० और रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है। जैसे समाचार-पत्रों और अन्य माध्यमों में बिजनेस यानी कारोबार और व्यापार का अलग डेस्क होता है, इसी तरह खेल की खबरों और फ़ीचर के लिए खेल डेस्क अलग होता है। इन डेस्कों पर काम करने वाले उपसंपादकों और संवाददाताओं से अपेक्षा की जाती है कि संबंधित विषय या क्षेत्र में उनकी विशेषज्ञता होगी।

खबरें भी कई तरह की होती हैं-राजनीतिक, आर्थिक, अपराध, खेल, फ़िल्म, कृषि, कानून, विज्ञान या किसी भी और विषय से जुड़ी हुई। संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ यह है कि उसका कार्यक्षेत्र अपने शहर या क्षेत्र में घटने वाली आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करना है। अखबार की ओर से वह इनकी रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार और जवाबदेह भी होता है।

विशेष लेखन के लिए किसी व्यक्ति (संवाददाता) को उसी क्षेत्र-विशेष से संबंधित लेखन-कार्य सौंपा जाता है, जिसमें उसकी रुचि होती है। इसके अलावा उसे विषय-संबंधी गहरी जानकारी होती है। जैसे-खेल जगत की जानकारी एवं रुचि रखने वाले को खेल बीट मिल जाती है। विशेष लेखन केवल बीट रिपोर्टिंग न होकर उससे भी आगे एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है, जिसमें न सिर्फ़ उस विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसकी रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा-शैली पर भी पूर्ण अधिकार होना चाहिए।

बीट रिपोर्टिंग के लिए तैयारी- बीट रिपोर्टिंग के लिए भी एक पत्रकार को काफ़ी तैयारी करनी पड़ती है। उदाहरण के तौर पर जो पत्रकार राजनीति में दिलचस्पी रखते हैं या किसी खास राजनीतिक पार्टी को कवर करते हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि उस पार्टी का इतिहास क्या है, उसमें समय-समय पर क्या हुआ है, आज क्या चल रहा है, पार्टी के सिद्धांत या नीतियाँ क्या हैं, उसके पदाधिकारी कौन-कौन हैं और उनकी पृष्ठभूमि क्या है, बाकी पार्टियों से उस पार्टी के रिश्ते कैसे हैं और उनमें आपस में क्या फ़र्क है, उसके अधिवेशनों में क्या-क्या होता रहा है, उस पार्टी की कमियाँ और खूबियाँ क्या हैं, आदि-आदि।

पत्रकार को उस पार्टी के भीतर गहराई तक अपने संपर्क बनाने चाहिए और खबर हासिल करने के नए-नए स्रोत विकसित करने चाहिए। किसी भी स्रोत या सूत्र पर आँख मूँदकर भरोसा नहीं करना चाहिए और जानकारी की पुष्टि कई अन्य स्रोतों के जरिये भी करनी चाहिए। तभी वह उस बारे में विशेषज्ञता हासिल कर सकता है और उसकी रिपोर्ट या खबर विश्वसनीय मानी जा सकती है।

बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर

बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग के बीच सबसे महत्वपूर्ण अंतर यह है कि अपनी बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी और दिलचस्पी का होना पर्याप्त है। इसके अलावा एक बीट रिपोर्टर को आमतौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं। लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग का तात्पर्य यह है कि आप सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करें और पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करने की कोशिश करें।

विशेष लेखन के अंतर्गत रिपोर्टिंग के अलावा उस विषय या क्षेत्र विशेष पर फीचर, टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख, समीक्षा और स्तंभ-लेखन भी आता है। इस तरह का विशेष लेखन समाचार-पत्र या पत्रिका में काम करने वाले पत्रकार से लेकर फ्री-लांस (स्वतंत्र) पत्रकार या लेखक तक सभी कर सकते हैं। शर्त यह है कि विशेष लेखन के इच्छुक पत्रकार या स्वतंत्र लेखक को उस विषय में निपुण होना चाहिए।

मतलब यह कि किसी भी क्षेत्र पर विशेष लेखन करने के लिए जरूरी है कि उस क्षेत्र के बारे में आपको ज्यादा-से-ज्यादा पता हो, उसकी ताजी-से-ताजी सूचना आपके पास हो, आप उसके बारे में लगातार पढ़ते हों, जानकारियाँ और तथ्य इकट्ठे करते हों और उस क्षेत्र से जुड़े लोगों से लगातार मिलते रहते हों।

इस तरह अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में किसी खास विषय पर लेख या स्तंभ लिखने वाले कई बार पेशेवर पत्रकार न होकर उस विषय के जानकार या विशेषज्ञ होते हैं। जैसे रक्षा, विज्ञान, विदेश-नीति, कृषि या ऐसे ही किसी क्षेत्र में कई वर्षों से काम कर रहा कोई प्रोफ़ेशनल इसके बारे में बेहतर तरीके से लिख सकता है क्योंकि उसके पास इस क्षेत्र का वर्षों का अनुभव होता है, वह इसकी बारीकियाँ समझता है और उसके पास विश्लेषण करने की क्षमता होती है।

हो सकता है उसके लिखने की शैली सामान्य पत्रकारों की तरह न हो लेकिन जानकारी और अंतर्दृष्टि के मामले में उसका लेखन पाठकों के लिए लाभदायक होता है। उदाहरण के तौर पर हम खेलों में हर्ष भोगले, जसदेव सिंह या नरोत्तम पुरी का नाम ले सकते हैं। वे पिछले चालीस सालों से हॉकी से लेकर क्रिकेट तक और ओलंपिक से लेकर एशियाई खेलों तक की कमेंट्री करते रहे हैं।

विशेष लेखन की भाषा और शैली- विशेष लेखन का संबंध जिन विषयों और क्षेत्रों से है, उनमें से अधिकांश क्षेत्र तकनीकी रूप से जटिल हैं और उनसे जुड़ी घटनाओं तथा मुद्दों को समझना आम पाठकों के लिए कठिन होता है। इसलिए इन क्षेत्रों में विशेष लेखन की जरूरत पड़ती है, जिससे पाठकों को समझने में मुश्किल न हो। विशेष लेखन की भाषा और शैली कई मामलों में सामान्य लेखन से अलग होती है। उनके बीच सबसे बुनियादी फ़र्क यह होता है कि हर क्षेत्र-विशेष की अपनी विशेष तकनीकी शब्दावली होती है जो उस विषय पर लिखते हुए आपके लेखन में आती है।

जैसे कारोबार पर विशेष लेखन करते हुए आपको उसमें इस्तेमाल होने वाली शब्दावली से परिचित होना चाहिए। दूसरे, अगर आप उस शब्दावली से परिचित हैं तो आपके सामने चुनौती यह होती है कि आप अपने पाठक को भी उस शब्दावली से इस तरह परिचित कराना चाहिए ताकि उसे आपकी रिपोर्ट को समझने में कोई दिक्कत न हो।

उदाहरणार्थ-'सोने में भारी उछाल', 'चाँदी लुढ़की' या 'आवक बढ़ने से लाल मिर्च की कड़वाहट घटी' या 'शेयर बाजार ने पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़े, सेंसेक्स आसमान पर' आदि के अलावा खेलों में भी 'भारत ने पाकिस्तान को चार विकेट से पीटा', 'चैंपियंस कप में मलेशिया ने जर्मनी के आगे घुटने टेके' आदि शीर्षक सहज ही ध्यान खींचते हैं।

विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। लेकिन अगर हम अपने बीट से जुड़ा कोई समाचार लिख रहे हैं तो उसकी शैली उलटा पिरामिड शैली ही होगी। लेकिन अगर आप समाचार फीचर लिख रहे हैं तो उसकी शैली कथात्मक हो सकती है। इसी तरह अगर आप लेख या टिप्पणी लिख रहे हों तो इसकी शुरुआत भी फ़ीचर की तरह हो सकती है। जैसे हम किसी केस स्टडी से उसकी शुरुआत कर सकते हैं, उसे किसी खबर से जोड़कर यानी न्यूजपेग के जरिये भी शुरू किया जा सकता है। इसमें पुराने संदर्भों को आज के संदर्भ से जोड़कर पेश करने की भी संभावना होती है।

मीडिया की भाषा में बीट का अर्थ- समाचार कई प्रकार के होते हैं; जैसे-राजनीति, अपराध, खेल, आर्थिक, फ़िल्म तथा कृषि संबंधी समाचार आदि। संवाददाताओं के बीच काम का बँटवारा उनके ज्ञान एवं रुचि के आधार पर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे ही बीट कहते हैं। बीट रिपोर्टर को अपने बीट (क्षेत्र) की प्रत्येक छोटी-बड़ी जानकारी एकत्र करके कई स्रोतों द्वारा उसकी पुष्टि करके विशेषज्ञता हासिल करना चाहिए। तब उसकी खबर विश्वसनीय मानी जाती है।

विशेष लेखन- अखबारों के लिए समाचारों के अलावा खेल, अर्थ-व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन आदि विभिन्न क्षेत्रों और विषयों संबंधित घटनाएँ, समस्याएँ आदि से संबंधित लेखन विशेष लेखन कहलाता है। इस प्रकार के लेखन की भाषा और शैली समाचारों की भाषा-शैली से अलग होती है।

विशेष लेखन की भाषा-शैली- विशेष लेखन किसी विशेष विषय पर या जटिल एवं तकनीकी क्षेत्र से जुड़े विषयों पर किया जाता है, जिसकी अपनी विशेष शब्दावली होती है। इस शब्दावली से संवाददाता को अवश्य परिचित होना चाहिए। उसे इस तरह लेखन करना चाहिए कि रिपोर्ट को समझने में परेशानी न हो।

उलटा पिरामिड शैली- यह समाचार-लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। यह कहानी या कथा लेखन शैली की ठीक उलटी होती है। इसमें आधार ऊपर और शीर्ष नीचे होता है। इसमें शुरू में समापन, मध्य में बॉडी और अंत में मुखड़ा होता है।

संपादक के कार्य- संपादक संवाददाताओं तथा रिपोर्टरों से प्राप्त समाचार-सामग्री की अशुद्धियाँ दूर करते हैं तथा उसे त्रुटिहीन बनाकर प्रस्तुति के योग्य बनाते हैं। वे रिपोर्ट की महत्वपूर्ण बातों को पहले तथा कम महत्व की बातों को अंत में छापते हैं तथा समाचार-पत्र की नीति, आचार-संहिता और जन-कल्याण का विशेष ध्यान रखते हैं।

पत्रकारीय लेखन- पत्रकार अखबार या अन्य समाचार माध्यमों के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, इसे पत्रकारीय लेखन कहते हैं। पत्रकारीय भाषा सीधी, सरल, साफ़-सुथरी परंतु प्रभावपूर्ण होनी चाहिए। वाक्य छोटे, सरल और सहज होने चाहिए। भाषा में कठिन और दुरूह शब्दावली से बचना चाहिए, ताकि भाषा बोझिल न हो।

खोजपरक पत्रकारिता- सार्वजानिक महत्व के भ्रष्टाचार और अनियमितता को लोगों के सामने लाने के लिए खोजपरक पत्रकारिता की मदद ली जाती है। इसके अंतर्गत छिपाई गई सूचनाओं की गहराई से जाँच की जाती है। इसके प्रमाण एकत्र करके इसे प्रकाशित भी किया जाता है।

वॉचडॉग पत्रकारिता- जो पत्रकारिता सरकार के कामकाज पर निगाह रखती है और कोई गड़बड़ी होते ही उसका पर्दाफाश करती है, उसे वॉचडॉग पत्रकारिता कहते हैं।

एडवोकेसी पत्रकारिता- जो पत्रकारिता किसी विचारधारा या विशेष उद्देश्य या मुद्दे को उठाकर उसके पक्ष में जनमत बनाने के लिए लगातार और जोर-शोर से अभियान चलाती है, उसे एडवोकेसी पत्रकारिता कहते हैं।

वैकल्पिक पत्रकारिता- जो मीडिया स्थापित व्यवस्था के विकल्प को सामने लाने और उसके अनुकूल सोच को अभिव्यक्त करते हैं, उसे वैकल्पिक पत्रकारिता कहते हैं।

पेज थ्री पत्रकारिता- पेज थ्री पत्रकारिता का आशय उस पत्रकारिता से है, जिसमें फ़ैशन, अमीरों की बड़ी-बड़ी पार्टियों, महफ़िलों तथा लोकप्रिय लोगों के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है। ऐसे समाचार सामान्यत: समाचार-पत्र के पृष्ठ तीन पर प्रकाशित होते हैं।

पीत पत्रकारिता- इस तरह की पत्रकारिता में झूठी अफवाहों, सनसनीखेज मुद्दों तथा खबरों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कर प्रस्तुत किया जाता है। इसमें सही समाचारों की उपेक्षा करके ध्यान-खींचने वाले शीर्षकों का बहुतायत में प्रयोग किया जाता है।

आत्मपरिचय, एक गीत – हरिवंशराय बच्चन

प्रश्न- 1 कविता एक ओर जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ'- विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय है?

उत्तर- जग-जीवन का भार लेने से कवि का अभिप्राय यह है कि वह सांसारिक दायित्वों का निर्वाह कर रहा है। आम व्यक्ति से वह अलग नहीं है तथा सुख-दुख, हानि-लाभ आदि को झेलते हुए अपनी यात्रा पूरी कर रहा है। दूसरी तरफ कवि कहता है कि वह कभी संसार की तरफ ध्यान नहीं देता। यहाँ कवि सांसारिक दायित्वों की अनदेखी की बात नहीं करता। वह संसार की निरर्थक बातों पर ध्यान न देकर केवल प्रेम पर केंद्रित रहता है। आम व्यक्ति सामाजिक बाधाओं से डरकर कुछ नहीं कर पाता। कवि सांसारिक बाधाओं की परवाह नहीं करता। अत: इन दोनों पंक्तियों के अपने निहितार्थ हैं। ये एक-दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं।

प्रश्न- 2 जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं- कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर- नादान यानी मूर्ख व्यक्ति सांसारिक मायाजाल में उलझ जाता है। मनुष्य इस मायाजाल को निरर्थक मानते हुए भी इसी के चक्कर में फँसा रहता है। संसार असत्य है। मनुष्य इसे सत्य मानने की नादानी कर बैठता है और मोक्ष के लक्ष्य को भूलकर संग्रहवृत्ति में पड़ जाता है। इसके विपरीत, कुछ ज्ञानी लोग भी समाज में रहते हैं जो मोक्ष के लक्ष्य को नहीं भूलते। अर्थात् संसार में हर तरह के लोग रहते हैं।

प्रश्न- 3 मैं और, और जग और कहाँ का नाता- पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए।

उत्तर- यहाँ 'और' शब्द का तीन बार प्रयोग हुआ है। अत: यहाँ यमक अलंकार है। पहले 'और' में कवि स्वयं को आम व्यक्ति से अलग बताता है। वह आम आदमी की तरह भौतिक चीजों के संग्रह के चक्कर में नहीं पड़ता। दूसरे 'और' के प्रयोग में संसार की विशिष्टता को बताया गया है। संसार में आम व्यक्ति सांसारिक सुख-सुविधाओं को अंतिम लक्ष्य मानता है। यह प्रवृत्ति कवि की विचारधारा से अलग है। तीसरे 'और' का प्रयोग 'संसार और कवि में किसी तरह का संबंध नहीं' दर्शाने के लिए किया गया है।

प्रश्न- 4 शीतल वाणी में आग' के होने का क्या अभिप्राय हैं?

उत्तर– कवि ने यहाँ विरोधाभास अलंकार का प्रयोग किया है। कवि की वाणी यद्यपि शीतल है, परंतु उसके मन में विद्रोह, असंतोष का भाव प्रबल है। वह समाज की व्यवस्था से संतुष्ट नहीं है। वह प्रेम-रहित संसार को अस्वीकार करता है। अत: अपनी वाणी के माध्यम से अपनी असंतुष्टि को व्यक्त करता है। वह अपने कवित्व धर्म को ईमानदारी से निभाते हुए लोगों को जाग्रत कर रहा है।

प्रश्न- 5 बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?

उत्तर– पक्षी दिन भर भोजन की तलाश में भटकते फिरते हैं। उनके बच्चे घोंसलों में माता-पिता की राह देखते रहते हैं कि मातापिता उनके लिए दाना लाएँगे और उनका पेट भरेंगे। साथ-साथ वे माँ-बाप के स्नेहिल स्पर्श पाने के लिए प्रतीक्षा करते हैं। छोटे बच्चों को माता-पिता का स्पर्श व उनकी गोद में बैठना, उनका प्रेम-प्रदर्शन भी असीम आनंद देता है। इन सबकी पूर्ति के लिए वे नीड़ों से झाँकते हैं।

प्रश्न- 6 दिन जल्दी-जल्दी ढलता है- की आवृति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर– 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'-की आवृत्ति से यह प्रकट होता है कि लक्ष्य की तरफ बढ़ते मनुष्य को समय बीतने का पता नहीं चलता। पथिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आतुर होता है। इस पंक्ति की आवृत्ति समय के निरंतर चलायमान प्रवृत्ति को भी बताती है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। अत: समय के साथ स्वयं को समायोजित करना प्राणियों के लिए आवश्यक है।

प्रश्न- 7 कौन-सा विचार दिन ढलने के बाद लौट रहे पंथी के कदमों को धीमा कर देता हैं? 'बच्चन' के गीत के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- कवि एकाकी जीवन व्यतीत कर रहा है। शाम के समय उसके मन में विचार उठता है कि उसके आने के इंतजार में व्याकुल होने वाला कोई नहीं है। अत: वह किसके लिए तेजी से घर जाने की कोशिश करे। शाम होते ही रात हो जाएगी और कवि की विरह-व्यथा बढ़ने से उसका हृदय बेचैन हो जाएगा। इस प्रकार के विचार आते ही दिन ढलने के बाद लौट रहे पंथी के कदम धीमे हो जाते हैं।

प्रश्न- 8 कवि को संसार अपूर्ण क्यों लगता है?

उत्तर- कवि भावनाओं को प्रमुखता देता है। वह सांसारिक बंधनों को नहीं मानता। वह वर्तमान संसार को उसकी शुष्कता एवं नीरसता के कारण नापसंद करता है। सांसारिक लोग माया-मोह और अपने स्वार्थ की पूर्ति के पीछे दौड़ते हैं जिसे कवि व्यर्थ मानता है। सांसारिक लोग प्रेम को महत्व नहीं देते हैं। इसलिए कवि को संसार अपूर्ण लगता है।

पतंग - आलोक धन्वा

प्रश्न- 1 'सबसे तेज बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया हैं, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर- इस कविता में कवि ने प्राकृतिक वातावरण का सुंदर वर्णन किया है। भादों माह में तेज वर्षा होती है। इसमें बौछारें पड़ती हैं। बौछारों के समाप्त होने पर शरद का समय आता है। मौसम खुल जाता है। प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन दिखाई देते हैं-

1- सवेरे का सूरज खरगोश की आँखों जैसा लाल-लाल दिखाई देता है।
2- शरद ऋतु के आगमन से उमस समाप्त हो जाती है। ऐसा लगता है कि शरद अपनी साइकिल को तेज गति से चलाता हुआ आ रहा है।
3- वातावरण साफ़ व धुला हुआ-सा लगता है।
4- धूप चमकीली होती है।
5- फूलों पर तितलियाँ मंडराती हुई दिखाई देती हैं।

प्रश्न- 2 पतंग के लिए सबसे हलकी और रंगीन चीज, सबसे पतला कागज, सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग क्यों किया गया है?

उत्तर- कवि ने पतंग के लिए सबसे हलकी और रंगीन चीज, सबसे पतला कागज, सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग किया है। वह इसके माध्यम से पतंग की विशेषता तथा बाल-सुलभ चेष्टाओं को बताना चाहता है। बच्चे भी हलके होते

हैं, उनकी कल्पनाएँ रंगीन होती हैं। वे अत्यंत कोमल व निश्छल मन के होते हैं। इसी तरह पतंगें भी रंगबिरंगी, हल्की होती हैं। वे आकाश में दूर तक जाती हैं। इन विशेषणों के प्रयोग से कवि पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता है।

प्रश्न- 3 जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास- कपास के बारे में सोचें कि उससे बच्चों का क्या संबंध बन सकता हैं?

उत्तर- कपास व बच्चों के मध्य गहरा संबंध है। कपास हलकी, मुलायम, गद्देदार व चोट सहने में सक्षम होती है। कपास की प्रकृति भी निर्मल व निश्छल होती है। इसी तरह बच्चे भी कोमल व निश्छल स्वभाव के होते हैं। उनमें चोट सहने की क्षमता भी होती है। उनका शरीर भी हलका व मुलायम होता है। कपास बच्चों की कोमल भावनाओं व उनकी मासूमियत का प्रतीक है।

प्रश्न- 5 पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं- बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता हैं?

उत्तर- पतंग बच्चों की कोमल भावनाओं की परिचायक है। जब पतंग उड़ती है तो बच्चों का मन भी उड़ता है। पतंग उड़ाते समय बच्चे अत्यधिक उत्साहित होते हैं। पतंग की तरह बालमन भी हिलोरें लेता है। वह भी आसमान की ऊँचाइयों को छूना चाहता है। इस कार्य में बच्चे रास्ते की कठिनाइयों को भी ध्यान में नहीं रखते।

प्रश्न- 6 दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- इसका तात्पर्य है कि पतंग उड़ाते समय बच्चे ऊँची दीवारों से छतों पर कूदते हैं तो उनकी पदचापों से एक मनोरम संगीत उत्पन्न होता है। यह संगीत मृदंग की ध्वनि की तरह लगता है। साथ ही बच्चों का शोर भी चारों दिशाओं में गूँजता है।

प्रश्न- 7 जब पतंग सामने हो तो छतों पर दौड़ते हुए क्या आपको छत कठोर लगती है?

उत्तर- जब पतंग सामने हो तो छतों पर दौड़ते हुए छत कठोर नहीं लगती। इसका कारण यह है कि इस समय हमारा सारा ध्यान पतंग पर ही होता है। हमें कूदते हुए छत की कठोरता का अहसास नहीं होता। हम पतंग के साथ ही खुद को उड़ते हुए महसूस करते हैं।

प्रश्न- 8 आसमान में रंग-बिरंगी पतंगों को देखकर आपके मन में कैसे खयाल आते हैं? लिखिए

उत्तर- आसमान में रंग-बिरंगी पतंगों को देखकर मेरा मन खुशी से भर जाता है। मैं सोचता हूँ कि मेरे जीवन में भी पतंगों की तरह अनगिनत रंग होने चाहिएँ ताकि मैं भरपूर जीवन जी सकूँ। मैं भी पतंग की तरह खुले आसमान में उड़ना चाहता हूँ। मैं भी नयी ऊँचाइयों को छूना चाहता हूँ।

प्रश्न- 9 'रोमांचित शरीर का संगीत और जीवन की लय में क्या संबंध है?

उत्तर- 'रोमांचित शरीर का संगीत' जीवन की लय से उत्पन्न होता है। जब मनुष्य किसी कार्य में पूरी तरह लीन हो जाता है तो उसके शरीर में अद्भुत रोमांच व संगीत पैदा होता है। वह एक निश्चित दिशा में गति करने लगता है। मन के अनुकूल कार्य करने से हमारा शरीर भी उसी लय से कार्य करता है।

प्रश्न- 10 'महज एक धागे के सहारे, पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ" उन्हें (बच्चों को) कैसे थाम लेती हैं?

उत्तर- पतंग बच्चों की कोमल भावनाओं से जुड़ी होती है। पतंग आकाश में उड़ती है, परंतु उसकी ऊँचाई का नियंत्रण बच्चों के हाथ की डोर में होता है। बच्चे पतंग की ऊँचाई पर ही ध्यान रखते हैं। वे स्वयं को भूल जाते हैं। पतंग की बढ़ती ऊँचाई से बालमन और अधिक ऊँचा उड़ने लगता है। पतंग का धागा पतंग की ऊँचाई के साथ-साथ बालमन को भी नियंत्रित करता है।

कविता के बहाने, बात सीधी थी पर – कुँवर नारायण

प्रश्न- 1 'कविता के बहाने' कविता के माध्यम से बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने' क्या है?

उत्तर- 'कविता के बहाने' कविता में 'सब घर एक कर देने के माने' का अर्थ है- सीमा का बंधन समाप्त हो जाना। जिस प्रकार बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का ध्यान नहीं रखा जाता, उसी प्रकार कविता में स्थान की कोई सीमा नहीं है। यह शब्दों का खेल है। कवि बच्चों की तरह पूरे समाज को एक मानता है। वह अपने-पराए का भेद भूलकर कविता की रचना करता है। कविता समाज को बाँधती है, एक करती है।

प्रश्न- 2 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध बनता हैं?

उत्तर- कविता का 'उड़ने' व 'खिलने' से सीधा संबंध है। चिड़िया एक स्थान से दूसरे स्थान तक उड़कर जाती है, परंतु कविता कल्पना के सहारे बहुत ऊँचे तक उड़ती है। यह काल की सीमा तक को लाँघ जाती है। इसी तरह कविता फूल की तरह

विकसित होती है। फूल अपनी सुंदरता व गंध से समाज को प्रसन्न रखता है, उसी तरह कविता भी मानवीय भावों से विकसित होकर तरह-तरह के रंग दिखाती है तथा उसकी खुशबू सनातन है। वह हर युग में मानव को आनंद देती है।

प्रश्न- 3 कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर- कवि ने बच्चे और कविता को समानांतर रखा है। बच्चों में रचनात्मक ऊर्जा होती है। उनके खेलने की कोई निश्चित सीमा नहीं होती। उनके सपने असीम होते हैं। इसी तरह कविता भी रचनात्मक तत्वों से युक्त होती है। उसका क्षेत्र भी विस्तृत होता है। उनकी कल्पना शक्ति अद्भुत होती है।

प्रश्न- 4 कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' क्या होते हैं?

उत्तर- कवि का मानना है कि कविता कभी मुरझाती नहीं है। यह अमर होती है तथा युग-युगांतर तक मानव-समाज को प्रभावित करती रहती है। अपनी जीवंतता की वजह से इसकी महक बरकरार रहती है। कविता के माध्यम से जीवन-मूल्य पीढ़ी दर पीढ़ी चलते रहते हैं।

प्रश्न- 5 भाषा को 'सहूलियत' से बरतने से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- कवि कहता है कि मानव मन में भावों का उदय होता है। यदि वह भाषा के चमत्कार में उलझ जाता है तो वह अपने भावों को सही ढंग से अभिव्यक्त नहीं कर पाता। वह तभी उन्हें प्रकट कर सकता है जब भाषा को वह साधन बनाए, साध्य नहीं। साधन बनाने पर भाषा सहजता से इस्तेमाल हो सकती है। वह लोगों तक अपनी बात कह सकता है।

प्रश्न- 6 बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है, कैसे?

उत्तर- बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, परंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। इसका कारण उपयुक्त शब्दों का प्रयोग न करना होता है। मनुष्य अपनी भाषा को कठिन बना देता है तथा आडंबरपूर्ण या चमत्कारपूर्ण शब्दों से अपनी बात को कहने में स्वयं को श्रेष्ठ समझता है। इससे वह अपनी मूल बात को कहने में असफल हो जाता है। मनुष्य को समझना चाहिए कि हर शब्द का अपना विशिष्ट अर्थ होता है, भले ही वह समानार्थी या पर्यायवाची हो। शब्दों के चक्कर में उलझकर भाव अपना अर्थ खो बैठते हैं।

प्रश्न- 7 'कविता के बहाने' कविता में कवि की क्या आशंका है और क्यों?

उत्तर- इस कविता में कवि को कविता के अस्तित्व के बारे में संदेह है। उसे आशंका है कि औद्योगीकरण के कारण मनुष्य यांत्रिक होता जा रहा है। उसके पास भावनाएँ व्यक्त करने या सुनने का समय नहीं है। प्रगति की अंधी दौड़ से मानव की कोमल भावनाएँ समाप्त होती जा रही हैं। अत: कवि को कविता का अस्तित्व खतरे में दिखाई दे रहा है।

प्रश्न- 8 कवि के अनुसार कोई बात पेचीदा कैसे हो जाती है?

उत्तर- कवि कहता है कि जब अपनी बात को सहज रूप से न कहकर तोड़-मरोड़कर या घुमा-फिराकर कहने का प्रयास किया जाता है तो बात उलझती चली जाती है। ऐसी बातों के अर्थ श्रोता या पाठक समझ नहीं पाता। वह मनोरंजन तो पा सकता है, परंतु कवि के भावों को समझने में असमर्थ होता है। इस तरीके से बात पेचीदा हो जाती है।

प्रश्न- 9 प्रशंसा का व्यक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता हैं? 'बात सीधी थी पर' कविता के आधार पर बताइए।

उत्तर- प्रशंसा से व्यक्ति स्वयं को सही व उच्च कोटि का मानने लगता है। वह गलत-सही का निर्णय नहीं कर पाता। उसका विवेक कुंठित हो जाता है। कविता में प्रशंसा मिलने के कारण कवि अपनी सहज बात को शब्दों के जाल में उलझा देता है। फलत: उसके भाव जनता तक नहीं पहुँच पाते।

प्रश्न- 10 'बात सीधी थी पर' कविता में भाषा के विषय में व्यंग्य करके कवि क्या सिद्ध करना चाहता है?

उत्तर- 'बात सीधी थी पर' कविता में कवि ने भाषा के विषय में व्यंग्य करके यह सिद्ध करना चाहता है कि लोग किसी बात को कहने के क्रम में भाषा को सीधे, सरल और सहज शब्दों में न कहकर तोड़-मरोड़कर, उलट-पलटकर, शब्दों को घुमा-फिराकर कहते हैं, जिससे भाषा कठिन होती जाती है और बात बनने की बजाय बिगड़ती और उलझती चली जाती है। इससे हमारा कथ्य और भी जटिल होता जाता है क्योंकि बात सरल बनने की जगह पेचीदा बन जाती है।

कैमरे में बंद अपाहिज - रघुवीर सहाय

प्रश्न- 1 कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी गई हैं। इनका क्या औचित्य है?

उत्तर- कवि ने कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी हैं। ये कोष्ठक कवि के मुख्य भाव को व्यक्त करते हैं। इनमें लिखी पंक्तियों के माध्यम से अलग-अलग लोगों को संबोधित किया गया है। ये एक तरह से संचालन करने के लिए हैं; जैसे-

कैमरामैन के लिए-

- कैमरा दिखाओ इसे बड़ा-बड़ा
- कैमरा ……. की कीमत है।

दर्शकों के लिए

- हम खुद इशारे से बताएँगे क्या ऐसा?
- यह प्रश्न पूछा नहीं जाएगा

अपंग व्यक्ति के लिए

- यह अवसर खो देंगे ?
- बस थोड़ी कसर रह गई।

ये कोष्ठक कविता के मुख्य उद्देश्य को अभिव्यक्त करने में सहायक होते हैं।

प्रश्न- 2 'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है-विचार कीजिए।

उत्तर- यह कविता मानवीय करुणा तो प्रस्तुत करती ही है साथ ही इस कविता में उन लोगों की बनावटी करुणा का वर्णन भी मिलता है जो दुख दरिद्रता को बेचकर यश प्राप्त करना चाहते हैं। एक अपाहिज व्यक्ति के साथ झूठी सहानुभूति जताकर उसकी करुणा का सौदा करना चाहते हैं। एक अपाहिज की करुणा को पैसे के लिए टी.वी. पर दर्शाना वास्तव में क्रूरता की चरमसीमा है।

प्रश्न- 3 'हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर- 'हम समर्थ शक्तिमान' पंक्ति के माध्यम से मीडिया की ताकत व कार्यक्रम संचालकों की मानसिकता का पता चलता है। मीडियाकर्मी या मीडिया-संचालक अपने प्रचार-प्रसार की ताकत के कारण किसी का भी मजाक बना सकते हैं तथा किसी को भी नीचे गिरा सकते हैं। चैनल के मुनाफ़े के लिए संचालक किसी की करुणा को भी बेच सकते हैं। कार्यक्रम का निर्माण व प्रस्तुति संचालकों की मर्जी से होता है। **'हम एक दुर्बल को लाएँगे'** पंक्ति में लाचारी का भाव है। मीडिया के सामने आने वाला व्यक्ति कमजोर होता है। मीडिया के अटपटे प्रश्नों से संतुलित व्यक्ति भी विचलित हो जाता है। अपंग या कमजोर व्यक्ति तो रोने लगता है। यह सब कुछ उसे कार्यक्रम-संचालक की इच्छानुसार करना होता है।

प्रश्न- 4 यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रोने लगेंगे? तो उससे प्रश्नकर्ता का कौन-सा उद्देश्य पूरा होगा?

उत्तर- यदि साक्षात्कार देने वाला अपंग व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रो देंगे तो प्रश्नकर्ता सहानुभूति प्राप्त करने में सफल हो जाएगा। उसका यह भी उद्देश्य पूरा हो जाएगा कि हमने सामाजिक कार्यक्रम दिखाया है। एक ऐसा कार्यक्रम जिसमें अपंग व्यक्ति की व्यथा का मार्मिक चित्रण हुआ है। उस व्यक्ति की सोच और वेदना का हू-ब-हू चित्र हमने दिखाया है।

प्रश्न- 5 'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है?

उत्तर- इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति व्यावसायिक नजरिया प्रस्तुत किया है। परदे पर जो कार्यक्रम दिखाया जाता है, उसकी कीमत समय के अनुसार होती है। दूरदर्शन व कार्यक्रम-संचालक को जनता के हित या पीड़ा से कोई मतलब नहीं होता। वे अपने कार्यक्रम को कम-से-कम समय में लोकप्रिय करना चाहते हैं। अपंग की पीड़ा को कम करने की बजाय अधिक करके दिखाया जाता है ताकि करुणा को 'नकदी' में बदला जा सके। संचालकों की सहानुभूति भी बनावटी होती है।

प्रश्न 6 शारीरिक चुनौती का सामना कर रहे किसी मित्र का परिचय किस तरह कराना चाहिए?

उत्तर- शारीरिक चुनौती का सामना कर रहे मित्र का परिचय करते समय उसकी अपंगता का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए और न ही उसकी अपंगता का एहसास दिलाना चाहिए। लोगों से उसकी खूबियों के विषय में बताना चाहिए और अपनी मित्रता को महत्त्व देना चाहिए है। बचपन की बातों का जिक्र करते हुए उसकी प्रशंसा करनी चाहिए। पढ़ाई और स्कूल की अन्य गतिविधियों में उसकी उपलब्धि के बारे में बताना चाहिए।

प्रश्न- 7 'सामाजिक उद्देश्य से युक्त' ऐसे कार्यक्रम को देखकर आपको कैसा लगेगा?

उत्तर- सामाजिक उद्देश्य से युक्त ऐसे कार्यक्रम को देखकर मुझे बहुत दुख होगा। ऐसे कार्यक्रम किसी की सहायता नहीं करते। ये सिर्फ़ अपनी लोकप्रियता बढ़ाना चाहते हैं ताकि वे अधिक से अधिक धन कमा सकें। ऐसे कार्यक्रम बनाने वालों का उद्देश्य समाज-सेवा नहीं होता। वे मात्र संवेदना बेचना जानते हैं। ऐसे कार्यक्रमों पर तुरंत रोक लगानी चाहिए। दर्शकों को भी ऐसे कार्यक्रमों को सिरे से नकार देना चाहिए।

प्रश्न- 8 कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रश्नकर्ता क्या सोचता है?

उत्तर- प्रश्नकर्ता सोचता है कि यदि अपंग व्यक्ति के साथ-साथ दर्शक भी रो देंगे तो उनकी सहानुभूति हमारे चैनल को मिल जाएगी। तब हम इसी प्रकार के और कार्यक्रम दिखाया करेंगे, जिस कारण हमें खूब फायदा मिलेगा। हमारा चैनल दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करता जाएगा। लोग हर समय हमारे चैनल को देखेंगे।

प्रश्न-9 प्रश्नकर्ता अपाहिज व्यक्ति को उसके अपाहिजपन का अहसास क्यों दिलाना चाहता है?

उत्तर- प्रश्नकर्ता चाहता है कि वह रो दे ताकि उसका रोना देखकर लोगों की करुणा जाग उठे। यदि ऐसा हो गया तो कार्यक्रम निश्चित रूप से सफल हो जाएगा। इसीलिए वह अपाहिज व्यक्ति को उसके अपाहिजपन का अहसास दिलाता है।

प्रश्न-10 'यह अवसर खो देंगे' पंक्ति से क्या आशय है?

उत्तर- प्रश्नकर्ता अपाहिज व्यक्ति से कई तरह के प्रश्न करता है। यह उससे पूछता है कि आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है। इस प्रश्न का उत्तर सोचकर बताइए। यदि आपने इस समय इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया तो आप लाखों दर्शकों के सामने अपना अनुभव बताने का सुनहरा अवसर खो देंगे।

प्रश्न-11 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता का काव्य-सौंदर्य बताइए।

उत्तर- प्रस्तुत कविता में मीडिया के लोगों पर व्यंग्य किया गया है। मीडिया वालों को दुनिया के दुःख-दर्द से कुछ लेना-देना नहीं है। टेलीविजन पर अपंग व्यक्ति को दर्शकों के सामने प्रस्तुत करके वे अपना कारोबार और अपनी टीआरपी बढ़ाते हैं। कवि ने कुछ विशेष शब्दों का विशेष अर्थों में प्रयोग किया है। इस पद का प्रत्येक शब्द अर्थ की गंभीरता लिए हुए है। कवि ने भावों के अनुकूल अलंकारों का सुंदर एवं सार्थक प्रयोग किया है। अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश, प्रश्न, उदाहरण आदि अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। अलंकार योजना की दृष्टि से कविता अनूठी बन पड़ी है। दैनिक बोलचाल के शब्दों से युक्त सहज खड़ीबोली का प्रयोग किया गया है। कविता मुक्त छंद में रची गई है।

उषा – शमशेर बहादुर सिंह

प्रश्न-1 कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द-चित्र है?

उत्तर- कविता के नीले शंख, राख से लीपा हुआ गीला चौका, सिल, स्लेट, नीला जल और गोरी युवती की मखमली देह आदि उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है। इन्हीं उपमानों के माध्यम से कवि ने सूर्योदय का गतिशील वर्णन किया है। ये उपमान भी कविता को गति प्रदान करते हैं।

प्रश्न-2 नयी कविता में कोष्ठक, विराम-चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है। उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठकों से कविता में विशेष अर्थ पैदा हुआ है, कैसे ?

उत्तर- नयी कविता के कवियों ने नए-नए प्रयोगों से स्वयं को अलग दिखाना चाहा है। शमशेर बहादुर सिंह ने कोष्ठकों का प्रयोग किया है। कोष्ठकों में दी गई सामग्री मुख्य सामग्री से संबंधित है तथा पूरक का काम करती है। वह कथन को स्पष्टता प्रदान करती है। यहाँ (अभी गीला पड़ा है) वाक्य कोष्ठकों में दिया गया है जो प्रात:कालीन सुबह की नमी व ताजगी को व्यक्त करता है। कोष्ठकों से पहले के वाक्य से काम की पूर्णता का पता तो चलता है, परंतु स्थिति स्पष्ट नहीं होती। गीला पड़ने से कथन अधिक प्रभावपूर्ण बन जाता है।

प्रश्न-3 **अपने परिवेश के उपमानों का प्रयोग करते हुए सूर्योदय और सूर्यास्त का शब्द-चित्र खींचिए।**

उत्तर- सुबह के समय सूर्य उदित होते समय ऐसा लगता है मानो कोई नीले सरोवर में स्नान करके बाहर आ रहा हो। सूर्य की किरणें धीरे-धीरे आकाश पर छा जाती हैं। ओस के कणों पर सूर्य की किरणें अद्भुत दृश्य उत्पन्न करती हैं तथा प्रकृति के दृश्य पल-पल में बदलते हैं। पक्षी चहचहाने लगते हैं। पशुओं व मानवों में नयी शक्ति का संचार हो जाता है। जीवन सजीव हो उठता है। जैसे-जैसे शाम होती है, सूर्य एक थके हुए पथिक की भाँति धीमी गति से अस्त होने लगता है। पक्षी अपने घरों की

तरफ लौटने लगते हैं। सूर्य का रंग लाल हो जाता है मानो वह विश्राम करने जा रहा हो। सारा जीव-जगत भी आराम करने की तैयारी शुरू कर देता है।

प्रश्न-4 सूर्योदय से पहले आकाश में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं? 'उषा' कविता के आधार पर बताइए।

उत्तर- सूर्योदय से पहले आकाश का रंग शंख जैसा नीला था, उसके बाद आकाश राख से लीपे चौके जैसा हो गया। सुबह की नमी के कारण वह गीला प्रतीत होता है। सूर्य की प्रारंभिक किरणों से आकाश ऐसा लगा मानो काली सिल पर थोड़ा लाल केसर डालकर उसे धो दिया गया हो या फिर काली स्लेट पर लाल खड़िया मिट्टी मल दी गई हो। सूर्योदय के समय सूर्य का प्रतिबिंब ऐसा लगता है जैसे नीले स्वच्छ जल में किसी गोरी युवती का प्रतिबिंब झिलमिला रहा हो।

प्रश्न-5 'उषा' कविता के आधार पर उस जादू को स्पष्ट कीजिए जो सूर्योदय के साथ टूट जाता है।

उत्तर- सूर्योदय से पूर्व उषा का दृश्य अत्यंत आकर्षक होता है। भोर के समय सूर्य की किरणें जादू के समान लगती हैं। इस समय आकाश का सौंदर्य क्षण-क्षण में परिवर्तित होता रहता है। यह उषा का जादू है। नीले आकाश का शंख-सा पवित्र होना, काली सिल पर केसर डालकर धोना, काली स्लेट पर लाल खड़िया मल देना, नीले जल में गोरी नायिका का झिलमिलाता प्रतिबिंब आदि दृश्य उषा के जादू के समान लगते हैं। सूर्योदय होने के साथ ही ये दृश्य समाप्त हो ज़ाते हैं।

प्रश्न-6 स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने - इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि कहता है कि सुबह के समय अँधेरा होने के कारण आकाश स्लेट के समान लगता है। उस समय सूर्य की लालिमा-युक्त किरणों से ऐसा लगता है जैसे किसी ने काली स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल दिया हो। कवि आकाश में उभरे लाल-लाल धब्बों के बारे में बताना चाहता है।

प्रश्न-7 भोर *के नभ को ' राख से लीपा, गीला चौका ' की संज्ञा दी गई है। क्यों ?*

उत्तर- कवि कहता है कि भोर के समय ओस के कारण आकाश नमीयुक्त व धुंधला होता है। राख से लीपा हुआ चौका भी मटमैले रंग का होता है। दोनों का रंग लगभग एक जैसा होने के कारण कवि ने भोर के नभ को 'राख से लीपा, गीला चौका' की संज्ञा दी है। दूसरे, चौके को लीपे जाने से वह स्वच्छ हो जाता है। इसी तरह भोर का नभ भी पवित्र होता है।

प्रश्न-8 सिल और स्लेट का उदाहारण देकर कवि ने आकाश के रंग के बारे में क्या कहा है ?

उत्तर- कवि ने सिल और स्लेट के रंग की समानता आकाश के रंग से की है। भोर के समय आकाश का रंग गहरा नीला-काला होता है और उसमें थोड़ी-थोड़ी सूर्योदय की लालिमा मिली हुई होती है।

प्रश्न-10 'उषा' कविता में भोर के नभ की तुलना किससे की गई हैं और क्यों?

उत्तर- 'उषा' कविता में प्रात:कालीन नभ की तुलना राख से लीपे गए गीले चौके से की गई है। इस समय आकाश नम एवं धुंधला होता है। इसका रंग राख से लीपे चूल्हे जैसा मटमैला होता है। जिस प्रकार चूल्हा-चौका सूखकर साफ़ हो जाता है उसी प्रकार कुछ देर बाद आकाश भी स्वच्छ एवं निर्मल हो जाता है।

'बादल राग'- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

1. 'बादल राग' कविता में अट्टालिका को आतंक का भवन क्यों कहा गया है?

उत्तर- 'कविता में अट्टालिका को आतंक भवन इसलिए कहा गया है क्योंकि इन भवनों में शोषण के न 'बादल रागएनए - तरीके खोजे जाते हैं।

2. रुद्ध कोष है, क्षुब्धतोष किसके लिए कहा गया है और क्यों-?

उत्तर - क्रांति होने पर पूँजीपति वर्ग का धन छिन जाता है, कोष रिक्त हो जाता है। उसके धान की आमद समाप्त हो जाती है। उसका संतोष भी जब बीते दिनों की बात हो जाता है।

3. क्रांति की गर्जना का शोषक वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ता है ? उनका मुख ढाँपना किस मानसिकता का द्योतक है ? बादल राग कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर - शोषक वर्ग ने आर्थिक साधनों पर एकाधिकार जमा लिया है, परन्तु क्रांति की गर्जना सुनकर वह अपनी सत्ता को खत्म होते देखता है। वह बुरी तरह भयभीत हो जाता है। उसकी शान्ति समाप्त हो जाती है। शोषक वर्ग का मुख ढाँपना उनकी कमजोर स्थिति को दर्शाता है। क्रांति के परिणामों से वे भयभीत है।

4. 'सदा पंक पर ही होता जल विप्लव प्लावन।-' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – इसका आशय है कि वर्षा से जो बाढ़ आती है वह सदा कीचड़ भरी धरती को हो डुबोती है अर्थात् शोभा की मार सबसे अधिक दबेकुचले तथा गरीबों को हो झेलनी पड़ती है।-

5. विप्लवी बादल की युद्ध रूपी नौका की क्या- क्या विशेषताएँ है ?

उत्तर - बादलों के अंदर आम आदमी की इच्छाएँ भरी हुई है। जिस तरह से युद्ध की नौका में युद्ध की सामग्री भरी होती है। युद्ध की तरह बादल के आगमन पर रणभेरी बजती है। सामान्यजन की आशाओं के अंकुर एक साथ फूट पड़ते हैं।

6.'छोटे ही हैं शोभा पाते में निहित लाक्षणिकता क्या है ?

उत्तर- बचपन में मनुष्य निश्चिंत होता है। निर्धन मनुष्य उस बच्चे के समान है जो क्रांति के समय भी निर्भय होता है और अंततः लाभान्वित होता है।

7.बादल के बरसने का गरीब एवं धनी वर्ग से क्या सम्बन्ध जोड़ा गया है ?

उत्तर- बादल के बरसने से गरीब वर्ग आशा से भर जाता है एवं धनी वर्ग अपने विनाश की आशंका से भयभीत हो उठता है।

8.'बादल राग' कविता का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

उत्तर- कविता का मुख्य उद्देश्य समाज में व्याप्त विषमता को समाप्त करना है। इस विषमता को दूर करने का एकमात्र उपाय नक्रांति है। यहाँ क्रांति से अभिप्राय समाज में आमूलचूल परिवर्त लाना है। साथ ही एक वर्गहीन व्यवस्था स्थापित करना है।

9. पृथ्वी में सोये अंकुर किस आशा से ताक रहे हैं ?

उत्तर - बादल के बरसने से बीज अंकुरित हो लहलहाने लगते हैं। अतः बादल की गर्जन उनमें आशाएँ उत्पन्न करती है। वे सर हैं ऊँचा कर बादलों के आने की राह निहारते। ठीक उसी प्रकार निर्धन व्यक्ति शोषक के अत्याचार से मुक्ति पाने और अपने जीवन की खुशहाली की आशा में क्रांति रूपी बादल की प्रतीक्षा करते हैं।

कवितावली, लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप – तुलसीदास

प्रश्न-1 तुलसीदास के कवित्त के आधार पर तत्कालीन समाज की आर्थिक विषमता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- तुलसीदास अपने युग के स्रष्टा एवं द्रष्टा थे। उन्होंने अपने युग की प्रत्येक स्थिति को गहराई से देखा एवं अनुभव किया था। लोगों के पास चूँकि धन की कमी थी इसलिए वे धन के लिए सभी प्रकार के अनैतिक कार्य करने लग गए थे। उन्होंने अपने बेटा-बेटी तक बेचने शुरू कर दिए ताकि कुछ पैसे मिल सकें। पेट की आग बुझाने के लिए हर अधर्मी और नीचा कार्य करने के लिए तैयार रहते थे। जब किसान के पास खेती न हो और व्यापारी के पास व्यापार न हो तो ऐसा होना स्वाभाविक है।

प्रश्न-2 पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है-तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग सत्य है ? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर- पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है- तुलसी का यह काव्य-सत्य कुछ हद तक इस समय का भी युग-सत्य हो सकता है। किंतु यदि आज व्यक्ति निष्ठा भाव, मेहनत से काम करे तो उसकी सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है। निष्ठा और पुरुषार्थ-दोनों मिलकर ही मनुष्य के पेट की आग का शमन कर सकते हैं। दोनों में एक भी पक्ष असंतुलित होने पर वांछित फल नहीं मिलता। अत: पुरुषार्थ की महत्ता हर युग में रही है और आगे भी रहेगी।

प्रश्न-3 धूत कहौ, अवधूत कहौ, राजपूतु कहौ जोलहा कहौ कोऊ

काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब काहू की जाति बिगार न सोऊ।

इस सवैया में 'काहू के बेटा सों बेटी न ब्याहब' कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता?

उत्तर- तुलसीदास जाति-पाँति से दूर थे। वे इनमें विश्वास नहीं रखते थे। उनके अनुसार व्यक्ति के कर्म ही उसकी जाति बनाते हैं। पुरुष प्रधान समाज में विवाह होने पर लड़की की जाति या धर्म लड़के के जाति या धर्म के अनुसार हो जाती है। यदि वे काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब कहते हैं तो उसका सामाजिक अर्थ में यही परिवर्तन होता कि बेटा या बेटी में उन्हें कोई अंतर नहीं दिखाई देता। यद्यपि उन्हें बेटी या बेटा को ब्याहना नहीं है, लेकिन वे दोनों की बराबर कद्र करते हैं।

प्रश्न-4 'धूत कहौ' वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?

उत्तर- तुलसीदास ने इस छंद में अपने स्वाभिमान को व्यक्त किया है। वे सच्चे रामभक्त हैं तथा उन्हीं के प्रति समर्पित हैं। उन्होंने किसी भी कीमत पर अपना स्वाभिमान कम नहीं होने दिया और एकनिष्ठ भाव से राम की अराधना की। समाज के

कटाक्षों का उन पर कोई प्रभाव नहीं है। उनका यह कहना कि उन्हें किसी के साथ कोई वैवाहिक संबंध स्थापित नहीं करना, समाज के मुँह पर तमाचा है। वे किसी के आश्रय में भी नहीं रहते। वे भिक्षावृत्ति से अपना जीवन-निर्वाह करते हैं तथा मस्जिद में जाकर सो जाते हैं। वे किसी की परवाह नहीं करते तथा किसी से लेने-देने का व्यवहार नहीं रखते। वे बाहर से सीधे हैं, परंतु हृदय में स्वाभिमानी भाव को छिपाए हुए हैं।

प्रश्न-5 भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर-लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर- लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम को जिस तरह विलाप करते दिखाया गया है, वह ईश्वरीय लीला की बजाय आम व्यक्ति का विलाप अधिक लगता है। राम ने अनेक ऐसी बातें कही हैं जो आम व्यक्ति ही कहता है, जैसे-यदि मुझे तुम्हारे वियोग का पहले पता होता तो मैं तुम्हें अपने साथ नहीं लाता। मैं अयोध्या जाकर परिवारजनों को क्या मुँह दिखाऊँगा, माता को क्या जवाब दूँगा आदि। ये बातें ईश्वरीय व्यक्तित्व वाला नहीं कह सकता क्योंकि वह तो सब कुछ पहले से ही जानता है। उसे कार्यों का कारण व परिणाम भी पता होता है। वह इस तरह शोक भी नहीं व्यक्त करता। राम द्वारा लक्ष्मण के बिना खुद को अधूरा समझना आदि विचार भी आम व्यक्ति कर सकता है। इस तरह कवि ने राम को एक आम व्यक्ति की तरह प्रलाप करते हुए दिखाया है जो उसकी सच्ची मानवीय अनुभूति के अनुरूप ही है। हम इस बात से सहमत हैं कि यह विलाप राम की नर-लीला की अपेक्षा मानवीय अनुभूति अधिक है।

प्रश्न-6 शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

उत्तर- जब सभी लोग लक्ष्मण के वियोग में करुणा में डूबे थे तो हनुमान ने साहस किया। उन्होंने वैद्य द्वारा बताई गई संजीवनी लाने का प्रण किया। करुणा के इस वातावरण में हनुमान का यह प्रण सभी के मन में वीर रस का संचार कर गया। सभी वानरों और अन्य लोगों को लगने लगा कि अब लक्ष्मण की मूर्च्छा टूट जाएगी। इसीलिए कवि ने हनुमान के अवतरण को वीर रस का आविर्भाव बताया है।

प्रश्न-7 जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई।
बरु अपजस सहतेऊँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।
भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप-वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है?

उत्तर- भाई के शोक में डूबे राम ने कहा कि मैं अवध क्या मुँह लेकर जाऊँगा? वहाँ लोग कहेंगे कि पत्नी के लिए प्रिय भाई को खो दिया। वे कहते हैं कि नारी की रक्षा न कर पाने का अपयश में सह लेता, किन्तु भाई की क्षति का अपयश सहना मुश्किल है। नारी की क्षति कोई विशेष क्षति नहीं है। राम के इस कथन से नारी की निम्न स्थिति का पता चलता है। उस समय पुरुष-प्रधान समाज था। नारी को पुरुष के बराबर अधिकार नहीं थे। उसे केवल उपभोग की चीज समझा जाता था। उसे असहाय व निर्बल समझकर उसके आत्मसम्मान को चोट पहुँचाई जाती थी।

प्रश्न-8 'पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी' तुलसी के युग का ही नहीं आज के युग का भी सत्य है। भुखमरी में किसानों की आत्महत्या और संतानों (खासकर बेटियों) को भी बेच डालने की हृदय-विदारक घटनाएँ हमारे देश में घटती रही हैं। वर्तमान परिस्थितियों और तुलसी के युग की तुलना करें।

उत्तर- गरीबी के कारण तुलसीदास के युग में लोग अपने बेटा-बेटी को बेच देते थे। आज के युग में भी ऐसी घटनाएँ घटित होती है। किसान आत्महत्या कर लेते हैं तो कुछ लोग अपनी बेटियों को भी बेच देते हैं। अत्यधिक गरीब व पिछड़े क्षेत्रों में यह स्थिति आज भी यथावत है। तुलसी तथा आज के समय में अंतर यह है कि पहले आम व्यक्ति मुख्यतया कृषि पर निर्भर था, आज आजीविका के लिए अनेक रास्ते खुल गए हैं।

प्रश्न-9 तुलसी के युग की बेकारी के क्या कारण हो सकते हैं ? आज की बेकारी की समस्या के कारणों के साथ उसे मिलाकर कक्षा में परिचर्चा करें।

उत्तर- तुलसी युग की बेकारी का सबसे बड़ा कारण गरीबी और भुखमरी थी। लोगों के पास इतना धन नहीं था कि वे कोई रोजगार कर पाते। इसी कारण लोग बेकार होते चले गए। यही कारण आज की बेकारी का भी है। आज भी गरीबी है, भुखमरी है। लोगों को इन समस्याओं से मुक्ति नहीं मिलती, इसी कारण बेरोजगारी बढ़ती जा रही है।

प्रश्न-10 राम कौशल्या के पुत्र थे और लक्ष्मण सुमित्रा के। इस प्रकार वे परस्पर सहोदर (एक ही माँ के पेट से जन्मे) नहीं थे। फिर, राम ने उन्हें लक्ष्य करके ऐसा क्यों कहा—'मिलह न जगत सहोदर भ्राता'। इस पर विचार करें।

उत्तर- राम और लक्ष्मण भले ही एक माँ से पैदा नहीं हुए थे, परंतु वे एक ही पिता दशरथ के पुत्र थे और हमेशा एक-दूसरे के साथ रहते थे। राम अपनी माताओं में कोई अंतर नहीं समझते थे। लक्ष्मण सदैव परछाई की तरह राम के साथ रहते थे। उनके जैसा त्याग सहोदर भाई भी नहीं कर सकता था। इसी कारण राम ने कहा कि लक्ष्मण जैसा सहोदर भाई संसार में दूसरा नहीं मिल सकता।

प्रश्न-11 तुलसी ने अपने युग की जिस दुर्दशा का चित्रण किया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- तुलसीदास के युग में जनसामान्य के पास आजीविका के साधन नहीं थे। किसान की खेती चौपट रहती थी। भिखारी को भीख नहीं मिलती थी। दान-कार्य भी बंद ही था। व्यापारी का व्यापार ठप था। नौकरी भी लोगों को नहीं मिलती थी। चारों तरफ बेरोजगारी थी। लोगों को समझ में नहीं आता था कि वे कहाँ जाएँ क्या करें?

प्रश्न-12 तुलसी के समय के समाज के बारे में बताइए।

उत्तर- तुलसीदास के समय का समाज मध्ययुगीन विचारधारा का था। उस समय बेरोजगारी थी तथा आम व्यक्ति की हालत दयनीय थी। समाज में कोई नियम-कानून नहीं था। व्यक्ति अपनी भूख शांत करने के लिए गलत कार्य भी करते थे। धार्मिक कट्टरता व्याप्त थी। जाति व संप्रदाय के बंधन कठोर थे। नारी की दशा हीन थी। उसकी हानि को विशेष नहीं माना जाता था।

प्रश्न-13 तुलसी युग की आर्थिक स्थिति का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर- तुलसी के समय आर्थिक दशा खराब थी। किसान के पास खेती न थी, व्यापारी के पास व्यापार नहीं था। यहाँ तक कि भिखारी को भीख भी नहीं मिलती थी। लोग यही सोचते रहते थे कि क्या करें, कहाँ जाएँ? वे धन-प्राप्ति के उपायों के बारे में सोचते थे। वे अपनी संतानों तक को बेच देते थे। भुखमरी का साम्राज्य फैला हुआ था।

प्रश्न-14 लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम क्या सोचने लगे?

उत्तर- लक्ष्मण शक्तिबाण लगने से मूर्च्छित हो गए। यह देखकर राम भावुक हो गए तथा सोचने लगे कि पत्नी के बाद अब भाई को खोने जा रहे हैं। केवल एक स्त्री के कारण मेरा भाई आज मृत्यु की गोद में जा रहा है। यदि स्त्री खो जाए तो कोई बड़ी हानि नहीं होगी, परंतु भाई के खो जाने का कलंक जीवनभर मेरे माथे पर रहेगा। वे सामाजिक अपयश से घबरा रहे थे।

प्रश्न-15 क्या तुलसी युग की समस्याएँ वर्तमान में समाज में भी विद्यमान हैं? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- तुलसी ने लगभग 500 वर्ष पहले जो कुछ कहा था, वह आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने अपने समय की मूल्यहीनता, नारी की स्थिति, आर्थिक दुरवस्था का चित्रण किया है। इनमें अधिकतर समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। आज भी लोग जीवन-निर्वाह के लिए गलत-सही कार्य करते हैं। नारी के प्रति नकारात्मक सोच आज भी विद्यमान है। अभी भी जाति व धर्म के नाम पर भेदभाव होता है। इसके विपरीत, कृषि, वाणिज्य, रोजगार की स्थिति आदि में बहुत बदलाव आया है। इसके बाद भी तुलसी युग की अनेक समस्याएँ आज भी हमारे समाज में विद्यमान हैं।

प्रश्न-16 कुंभकरण ने रावण को किस सच्चाई का आइना दिखाया?

उत्तर- कुंभकरण रावण का भाई था। वह लंबे समय तक सोता रहता था। उसका शरीर विशाल था। देखने में ऐसा लगता था मानो काल आकर बैठ गया हो। वह मुँहफट तथा स्पष्ट वक्ता था। वह रावण से पूछता है कि तुम्हारे मुँह क्यों सूखे हुए हैं? रावण की बात सुनने पर वह रावण को फटकार लगाता है तथा उसे कहता है कि अब तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। इस प्रकार उसने रावण को उसके विनाश संबंधी सच्चाई का आईना दिखाया।

रुबाइयाँ : फिराक गोरखपुरी

प्रश्न- शायर "राखी के लच्छे" को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?

उत्तर – रक्षाबंधन का त्यौहार सावन के महीने में आता है। उस समय हर वक्त आकाश में काले धने बादल छाये रहते हैं। कवि ने राखी के लच्छों को बिजली की चमक के समान बताया है जिस के माध्यम से वह यह कहना चाहता है कि बहनें अपने भाइयों की कलाई सजाने के लिए रंग-बिरंगी राखी खरीदती हैं। इन राखियों को चुनते समय उनकी पसंद का विशेष ध्यान

रखती हैं। शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक कहकर भाई-बहन के संबंध की घनिष्टता को व्यक्त करना चाहता है। भाई-बहन को शायर बादल की घटा तथा बिजली के रूप में अभिव्यक्त करता है। राखी उसी घनिष्टता का प्रतीक है, जो प्रत्येक भाई के हाथ में राखी के धागे के रूप में दिखाई देता है। यह दोनों के मध्य प्रेम तथा पवित्रता का सूचक है।

प्रश्न- बच्चे के द्वारा माँ के चेहरे को एकटक निहारने के चित्र को प्रस्तुत कीजिए ?

उत्तर- माँ अपने बच्चे को स्वच्छ पानी से नहला कर , उसके उलझे बालों में कंघी कर उन्हें सुलझती है। फिर जब माँ उसे अपने घुटनों के बीच खड़ा कर कपड़े पहनाती है तो नन्हा बच्चा अपनी माँ के चेहरे को टकटकी लगाकर बड़े प्यार से देखने लगता हैं। उस समय उसे अपनी माँ किसी फरिस्ते के समान लगती हैं।

प्रश्न- "बच्चे के घरौंदे में जलाती है दिए से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर – जिस तरह दीवाली की शाम माँ अपने सजे-संवरे घर में दीपक जलाकर ईश्वर से अपने सभी परिजनों के लिए सुख-समृद्धि की मंगल कामना करती है। ठीक उसी प्रकार वह अपने छोटे बच्चे के मिट्टी के घर में भी दीया जलाकर उसके सुखद भविष्य और खुशहाल जीवन की दुआ मांगती है।

प्रश्न- बच्चे को माँ चाँद किस प्रकार धरती पर लाकर देती है ?

उत्तर – रात में आसमान में चमकते चाँद को देखकर उसे एक खिलौना समझकर जब बच्चा उसे मांगने लगता है तो माँ उसके हाथ में एक दर्पण थमा देती है जिसमें चाँद का प्रतिबिंब दिखाई देता है। दर्पण में चाँद के प्रतिबिंब को दिखाकर माँ बच्चे से कहती है कि यह लो तुम्हारा चाँद।

प्रश्न-फिराक की रुबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के बिंबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर- फिराक की रुबाइयों में ग्रामीण अंचल के घरेलू रूप का स्वाभाविकता और सात्विकता चित्रण मिलता है। माँ का अपने बच्चे को लेकर आँगन में खड़ा होना, उसे अपनी बांहो में झुलाना, बच्चे को नहलाना व कपड़े पहनना, उसके बालों में कंधी करना, बच्चे का चाँद के लिए जिद करना आदि का सजीव चित्रण है।

दीवाली के दिन घर की पुताई व रंग-रोगन आदि करना, शाम को दिए जलाना, रक्षाबंधन के त्यौहार का खुशनुमा माहौल आदि सब ग्रामीण व आम जीवन से जुड़ा हुआ है।

प्रश्न- माँ को अपनी गोद में सोया बच्चा कैसा लगता है?

उत्तर- प्त्येक माँ के लिए उसका बच्चा चाँद समान होता है यही बात को कवि अपनी कविता में व्यक्त करते है की माँ को अपनी गोद में सोया हुआ बच्चा चाँद के समान सुन्दर और बेदाग़ लगता है अर्थात् माँ की ममता इतनी असीम है की आसमान के चाँद और अपने बच्चे के मुखड़े में कोई फर्क मालूम नहीं होता अर्थात् माँ के लिए आसमान का चाँद और गगन का चाँद एक हैं।

प्रश्न- कवि के अनुसार रक्षाबंधन क्या है?

उत्तर- कवि अपने काव्य में बताते है की रक्षाबंधन एक पावन पर्व है जो सावन के मधुर मौसम में मनाया जाता है। सावन में जैसे काली घटाएँ आकाश में छा जाती है उसी प्रकार रक्षाबंधन में रंग-बिरंगी राखियों के गुच्छों से बाजार भर जाता है। जैसे सावन में बिजली घटाओ में चमकती है प्रकार राखियां भी चमकती है जो बेहेन अपनी भाई के कलाई पर सजाती हैं।

प्रश्न- "आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी ...... करके जब घुटनियों में ले के हैं पिन्हाती कपड़े। इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ कविता 'रुबाइयाँ' के पहले छंद से ली गई हैं। निम्न पंक्तियों में माँ और बच्चे के स्नेह का परिचय दिया गया है। माँ अपने चाँद जैसे बच्चे को आँगन में अपनी गोद में लिए उछाल-उछाल कर झूला रही है जिससे बच्चा आनंदित हो खिलखिला उठता है। माँ बच्चे को स्नेहपूर्ण निर्मल जल से नहलाती है, उलझे हुए केशो में कंघी करती है, साफ़ सुन्दर कपड़े पहनाती है। माँ और बच्चा एक दूसरे को निहारते हैं जो की एक अद्‌भुत, पवित्र प्रेम का दर्पण है

प्रश्न . "दीवाली की शाम घर पुते और सजे........... इन पंक्तियों का स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कवि ने बड़ी ही कुशलता से माँ और बच्चे के स्नेह और ममता का चित्रण किया है। कवि कहते है कि दीवाली की संध्या हर घर रोशन और रंगो से पुता हुआ होता है, ऐसे में माँ अपने बच्चे की ख़ुशी के लिए चीनी के खिलौने लाती है जिसे देख उसका बच्चा आनंदित हो उठता है और उसकी ख़ुशी देख माँ भी मुस्कुराने लगती है तथा अपने बच्चे के छोटे से घरोंदे में दिया जलाती है। रंग पुते घर और दियों के उजाले से बना माहौल देख सभी खुश हैं ऐसे में बच्चा आँगन में खड़ा हो चाँद की चमक

देख मोहित हो जाता है और अपनी माँ से चाँद को पाने की हठ करता है। माँ बड़ी ही दुलार से उसे चाँद आईने में उतार कर दिखती है और उसे खुश कर देती है।

प्रश्न - बालक द्वारा चाँद माँगने की ज़िद पर माँ क्या करती है ? अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

उत्तर- बालक द्वारा चाँद माँगने की ज़िद पर माँ उसे अन्य खिलौनों से बहलाने की कोशिश करती है, पर बालक चाँद का खिलौना ही चाहता है। जब वह ज़िद करके अपनी माँ से चाँद के खिलौने की माँग करता है तो माँ घर के अंदर से आइना ले आती है और वह आइने में बच्चे को उसका चेहरा दिखाते हुई कहती है कि लो, अब चाँद धरती पर उतर आया है अर्थात् माँ बच्चे को आइना दिखाकर उसे चाँद के समान सुंदर बता रही है इस प्रकार इस पंक्ति में बच्चे के मुख व चाँदी की तुलना की गई है। इस प्रसंग में गोस्वामी तुलसीदास ने भी बच्चे की क्रोध से पूर्ण चेहरे का वर्णन करते हुए उसके मुखड़े को अति आकर्षण युक्त बताया है।

छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख- उमाशंकर जोशी

प्रश्न- 1 छोटे चौकोने खेत को कागज़ का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है?

उत्तर- छोटे चौकोने खेत को कागज़ का पन्ना कहने में यही अर्थ निहित है कि कवि ने कवि कर्म को खेत में बीज रोपने की तरह माना है। इसके माध्यम से कवि बताना चाहता है कि कविता रचना सरल कार्य नहीं है। जिस प्रकार खेत में बीज बोने से लेकर फ़सल काटने तक काफ़ी मेहनत करनी पड़ती है, उसी प्रकार कविता रचने के लिए अनेक प्रकार से मेहनत करनी पड़ती है।

प्रश्न- 2 रचना के संदर्भ में 'अंधड़' और 'बीज' क्या है?

उत्तर- रचना के संदर्भ में 'अंधड़' का अर्थ है-भावना का आवेग और 'बीज' का अर्थ है -विचार व अभिव्यक्ति। भावना के आवेग से कवि के मन में विचार का उदय होता है तथा रचना प्रकट होती है।

प्रश्न- 3 'रस का अक्षय पात्र' से कवि ने रचना कर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है?

उत्तर- अक्षय का अर्थ है - नष्ट न होने वाला। कविता का रस इसी तरह का होता है। रस का अक्षय पात्र कभी भी खाली नहीं होता। वह जितना बाँटा जाता है, उतना ही भरता जाता है। यह रस चिरकाल तक आनंद देता है। खेत का अनाज तो खत्म हो सकता है, लेकिन काव्य का रस कभी खत्म नहीं होता। कविता रूपी रस अनंतकाल तक बहता है। कविता रूपी अक्षय पात्र हमेशा भरा रहता है।

प्रश्न- 4 व्याख्या करें-

(1) शब्द के अंकुर फूटे
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

उत्तर- कवि कहना चाहता है कि जब वह छोटे खेत रूपी कागज के पन्ने पर विचार और अभिव्यक्ति का बीज बोता है तो वह कल्पना के सहारे उगता है। उसमें शब्दरूपी अंकुर फूटते हैं। फिर उनमें विशेष भावरूपी पुष्प लगते हैं। इस प्रकार भावों व कल्पना से वह विचार विकसित होता है।

(2) रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से ज़रा भी नहीं कम होती।

उत्तर- कवि कहता है कि कवि-कर्म में रोपाई क्षण भर की होती है अर्थात् भाव तो क्षण-विशेष में बोया जाता है। उस भाव से जो रचना सामने आती है, वह अनंतकाल तक लोगों को आनंद देती है। इस फसल की कटाई अनंतकाल तक चलती है। इसके रस को कितना भी लूटा जाए, वह कम नहीं होता। इस प्रकार कविता कालजयी होती है।

प्रश्न- 5 'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र क्यों कहा है?

उत्तर- कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र इसलिए कहा है क्योंकि अक्षय पात्र में रस कभी खत्म नहीं होता। उसके रस को जितना बाँटा जाता है, उतना ही वह भरता जाता है। खेत की फसल कट जाती है, परंतु वह हर वर्ष फिर उग आती है। कविता का रस भी चिरकाल तक आनंद देता है। यह सृजन-कर्म की शाश्वतता को दर्शाता है।

प्रश्न- 6 'छोटा मेरा खेत' कविता का रूपक स्पष्ट कीजिए?

उत्तर- इस कविता में कवि ने कवि-कर्म को कृषि-कर्म के समान बताया है। जिस तरह कृषक खेत में बीज बोता है, फिर वह बीज अंकुरित, पल्लवित होकर पौधा बनता है तथा फिर वह परिपक्व होकर जनता का पेट भरता है। उसी तरह भावनात्मक आँधी के कारण किसी क्षण एक रचना, विचार तथा अभिव्यक्ति का बीज बोया जाता है। यह विचार कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है तथा रचना का रूप ग्रहण कर लेता है। इस रचना के रस का आस्वादन अनंतकाल तक लिया जा सकता है। साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता।

प्रश्न- 7 कवि को खेत का रूपक अपनाने की ज़रूरत क्यों पड़ी?

उत्तर- कवि का उद्देश्य कवि-कर्म को महत्ता देना है। वह कहता है कि काव्य-रचना बेहद कठिन कार्य है। बहुत चिंतन के बाद कोई विचार उत्पन्न होता है तथा कल्पना के सहारे उसे विकसित किया जाता है। इसी प्रकार खेती में बीज बोने से लेकर फसल की कटाई तक बहुत परिश्रम किया जाता है। इसलिए कवि को खेत का रूपक अपनाने की जरूरत पड़ी।

प्रश्न- 8 'बगुलों के पंख' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर- यह सुंदर दृश्य कविता है। कवि आकाश में उड़ते हुए बगुलों की पंक्ति को देखकर तरह-तरह की कल्पनाएँ करता है। ये बगुले कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की सफेद काया के समान लगते हैं। कवि को यह दृश्य अत्यंत सुंदर लगता है। वह इस दृश्य में अटककर रह जाता है। एक तरफ वह इस सौंदर्य से बचना चाहता है तथा दूसरी तरफ वह इसमें बँधकर रहना चाहता है।

प्रश्न- 9 'पाँती-बँधी' से कवि का आवश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इसका अर्थ है-एकता। जिस प्रकार ऊँचे आकाश में बगुले पंक्ति बाँधकर एक साथ चलते हैं। उसी प्रकार मनुष्यों को एकता के साथ रहना चाहिए। एक होकर चलने से मनुष्य अद्भुत विकास करेगा तथा उसे किसी का भय भी नहीं रहेगा।

भक्तिन - महादेवी वर्मा

प्रश्न -1 भक्तिन अपना वास्तविक नाम क्यों छुपाती थी ?

उत्तर -भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था। हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार लक्ष्मी धन की देवी हैं। लक्ष्मी जगत-पालक भगवान विष्णु की पत्नी है, धन-ऐश्वर्य की देवी है। भक्तिन को अपने नाम के अर्थ और यथार्थ में विरोधाभास लगता है क्योंकि वह निर्धन एवं दुर्भाग्यशाली है। अत: वह स्वयं को लक्ष्मी नहीं कहलवाना चाहती थी। इसलिये वह अपना वास्तविक नाम छुपाती थी।

प्रश्न -2 लेखिका ने लक्ष्मी का नाम भक्तिन क्यों रखा?

उत्तर- जब वह शहर में लेखिका के यहाँ जीविका खोजने के उद्देश्य से आई तो उसके गले में पड़ी कंठी-माला, उसके घुटे हुए सिर एवं सादगीपूर्ण वेशभूषा को देखकर लेखिका ने उसका नाम भक्तिन रख दिया।

प्रश्न -3 भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में विभाजित किया गया है?

उत्तर- भक्तिन के जीवन को चार भागों में बाँटा गया है। पहला परिच्छेद- भक्तिन का बचपन, दूसरा परिच्छेद- वैवाहिक जीवन, तीसरा परिच्छेद- संघर्षमय जीवन और चौथा परिच्छेद- महादेवी वर्मा की सेविका।

प्रश्न -4 भक्तिन का बचपन कैसा था ?

उत्तर -बचपन में ही माँ की मृत्यु होने से भक्तिन का बचपन दुखमय रहा, सौतेली माँ ने पाँच वर्ष की आयु में ही उसका विवाह कर दिया और नौ वर्ष की उम्र में भक्तिन का गौना कर उसे ससुराल भेज दिया।

प्रश्न 5- भक्तिन (लक्ष्मी) की विमाता ने उसे पिता की बीमारी का संदेश क्यों नहीं भेजा?

उत्तर- भक्तिन के पिता उस पर अगाध स्नेह रखते थे। पिता की संपत्ति में से लक्ष्मी अपना हिस्सा न माँगे इसलिये विमाता ने उसे पिता की बीमारी का समाचार तब भेजा जब वह मर चुका था।

प्रश्न 6- भक्तिन के जीवन का दूसरा परिच्छेद कैसा रहा?

उत्तर- भक्तिन के जीवन के दूसरे परिच्छेद में सुख कम और दुख अधिक रहा। भक्तिन का पति, उसके संस्कार, तेज, परिश्रमी स्वभाव और कार्य कुशलता से प्रभावित था, वह अपनी पत्नी को बहुत चाहता था परंतु तीन-तीन बेटियों को जन्म देने के कारण भक्तिन को अपनी सास और जिठानियों की घोर उपेक्षा सहनी पड़ी।

प्रश्न 7- भक्तिन और उसकी बेटियों के साथ क्या भेदभाव होता था?

उत्तर- भक्तिन को घर भर के सारे काम करने पड़ते थे जबकि सास और जिठानियाँ आराम से बैठकर बातें करती रहती थीं भक्तिन की बेटियाँ दिनभर गोबर पाथती थीं जिठानियों के काले-कलूटे बेटे दूध मलाई खाकर खेलते रहते थे। भक्तिन और उसकी बेटियों को काले गुड़ की डली के साथ चना बाजरा दिया जाता था।

प्रश्न 8- भक्तिन का दुर्भाग्य भी कम हठी नही था, लेखिका ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर-

1- बचपन में ही माँ की मृत्यु।

2- विमाता की उपेक्षा।

3- भक्तिन (लक्ष्मी) का बाल विवाह।

4- पिता का निधन।

5- तीन-तीन बेटियों को जन्म देने के कारण सास और जिठानियों के द्वारा भक्तिन की उपेक्षा।

6- पति की असमय मृत्यु।

7- दामाद का निधन और पंचायत द्वारा निकम्मे तीतरबाज युवक से भक्तिन की विधवा बेटी का जबरन विवाह।

8- लगान न चुका पाने पर जमींदार द्वारा भक्तिन का अपमान।

प्रश्न 9- भक्तिन ने महादेवी वर्मा के जीवन को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर- भक्तिन के साथ रहकर महादेवी की जीवन शैली सरल हो गयी, वे अपनी सुविधाओं की चाह को छिपाने लगीं और असुविधाओं को सहने लगीं। भक्तिन ने उन्हें देहाती भोजन खिलाकर उनका स्वाद बदल दिया। भक्तिन मात्र एक सेविका न होकर महादेवी की अभिभावक और आत्मीय संगिनी बन गयी।

प्रश्न 10- भक्तिन के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- महादेवी वर्मा की सेविका भक्तिन के व्यक्तित्व की विशेषताएँ निम्नांकित हैं-

1-समर्पित सेविका 2-स्वाभिमानी 3-तर्कशीला 4-परिश्रमी 5-संघर्षशील

प्रश्न 11- भक्तिन के दुर्गुणों का उल्लेख करें।

उत्तर- भक्तिन में कई अवगुण भी हैं-

1- वह घर में पड़े रुपए पैसे को भंडार घर की मटकी में छुपा देती है। अपने इस कार्य को चोरी नहीं मानती।

2- महादेवी के क्रोध से बचने के लिये भक्तिन बात को इधर-उधर करके बताने को झूठ नहीं मानती। अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए वह तर्क-वितर्क करती है।

3- वह दूसरों को अपनी इच्छानुसार बदल देना चाहती है पर स्वयं बिलकुल नही बदलती।

प्रश्न 12- निम्नांकित भाषा-प्रयोगों का अर्थ स्पष्ट कीजिए-

उत्तर-

(क) **पहली कन्या के दो और संस्करण कर डाले-** भक्तिन ने अपनी पहली कन्या के बाद दो और कन्याएँ पैदा कीं ।

(ख) **खोटे सिक्कों की टकसाल जैसी पत्नी-** आज भी अशिक्षित ग्रामीण समाज में बेटियों को खोटा सिक्का कहा जाता है। भक्तिन ने एक के बाद एक तीन बेटियाँ पैदा कर दी इसलिए उसे खोटे सिक्के को ढालने वाली मशीन कहा गया।

प्रश्न-13 भक्तिन पाठ में लेखिका ने समाज की किन समस्याओं का उल्लेख किया है?

उत्तर- भक्तिन पाठ के माध्यम से लेखिका ने भारतीय ग्रामीण समाज की अनेक समस्याओं का उल्लेख किया है-

1- लड़के-लड़कियों में किया जाने वाला भेदभाव 2-विधवाओं की समस्या 3- न्याय के नाम पर पंचायतों के द्वारा स्त्रियों के मानवाधिकार को कुचलना 4- अशिक्षा और अंधविश्वास

बाजार दर्शन – जैनेन्द्र कुमार

प्रश्न-1 पर्चेजिंग पावर किसे कहा गया है और बाजार पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- पर्चेजिंग पावर का अर्थ है खरीदने की शक्ति। पर्चेजिंग पावर के घमंड में व्यक्ति दिखावे के लिए आवश्यकता से अधिक खरीदारी करता है और बाजार को शैतानी एवं व्यंग्य की शक्ति देता है। पर्चेजिंग पावर का इस्तेमाल करने वाले लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं।

प्रश्न-2 लेखक ने बाजार का जादू किसे कहा है और इसका लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- बाजार की चमक-दमक के चुंबकीय आकर्षण को बाजार का जादू कहा गया है। यह जादू आँखों की राह कार्य करता है। बाजार के इसी आकर्षण के कारण ग्राहक आवश्यकता न होने पर भी सजी-धजी चीजों को खरीदने के लिए विवश हो जाते हैं।

प्रश्न-3 आशय स्पष्ट करें।

मन खाली होना, मन भरा होना, मन बंद होना

उत्तर- मन खाली होना- मन में कोई निश्चित वस्तु खरीदने का लक्ष्य न होना। निरुद्देश्य बाजार जाना व्यर्थ की चीजों को खरीदकर लाना।

मन भरा होना- मन लक्ष्य से भरा होना। जिसका मन भरा हो वह भली-भांति जानता है कि उसे बाजार से कौन-सी वस्तु खरीदनी है। वह अपनी आवश्यकता की चीज खरीदकर बाजार को सार्थकता प्रदान करता है।

मन बंद होना- मन में किसी भी प्रकार की इच्छा को न आने देना। बलपूर्वक अपनी इच्छाओं को दबा देना।

प्रश्न-4 'जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है।' यहाँ किस बल की चर्चा की गयी है?

उत्तर- लेखक ने संतोषी स्वभाव के व्यक्ति के आत्मबल की चर्चा की है। दूसरे शब्दों में यदि मन में संतोष हो तो व्यक्ति दिखावे और ईर्ष्या से दूर रहता है उसमें संचय करने की प्रवृत्ति नहीं होती।

प्रश्न-5 अर्थशास्त्र कब अनीतिशास्त्र बन जाता है?

उत्तर- जब बाजार में कपट और शोषण बढ़ने लगे। खरीददार और दुकानदार एक दूसरे को ठगने की घात में लगे रहें। एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखाई दे तब बाजार का अर्थशास्त्र, अनीतिशास्त्र बन जाता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना हैं।

प्रश्न-6 भगत जी बाजार और समाज को किस प्रकार सार्थकता प्रदान कर रहे हैं?

उत्तर- भगतजी के मन में सांसारिक आकर्षणों के लिए कोई तृष्णा नहीं है। वे संचय, लालच और दिखावे से दूर रहते हैं। बाजार और व्यापार उनके लिए आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मात्र है। भगतजी के मन का संतोष और निस्पृह भाव, उनको श्रेष्ठ उपभोक्ता और विक्रेता बनाते हैं।

निम्नांकित बिंदु उनके व्यक्तित्व के सशक्त पहलू को उजागर करते हैं।

1-पंसारी की दुकान से केवल जीरा और नमक खरीदना। 2-निश्चित समय पर चूरन बेचने के लिये निकलना। 3-छह आने की कमाई होते ही चूरन बेचना बंद कर देना। 4-बचे हुए चूरन को बच्चों को मुफ़्त बाँट देना। 5- सभी का जय जय राम कहकर स्वागत करना। 6-बाजार की चमक दमक से आकर्षित न होना। 7- समाज को संतोषी जीवन की शिक्षा देना।

प्रश्न-7 बाजार की सार्थकता किसमें है?

उत्तर- मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में ही बाजार की सार्थकता है। जो ग्राहक अपनी आवश्यकताओं की चीजें खरीदते हैं वे बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। जो विक्रेता, ग्राहकों का शोषण नहीं करते और छल-कपट से ग्राहकों को लुभाने का प्रयास नही करते वे भी बाजार को सार्थक बनाते हैं।

काले मेघा पानी दे – धर्मवीर भारती

प्रश्न- 1 इन्दर सेना घर-घर जाकर पानी क्यों माँगती थी?

उत्तर- गाँव के लोग बारिश के लिए भगवान इंद्र से प्रार्थना किया करते थे। जब पूजा-पाठ, व्रत आदि उपाय असफ़ल हो जाते थे तो भगवान इंद्र को प्रसन्न करने के लिए गाँव के किशोर, बच्चे कीचड़ में लथपथ होकर गली-गली घूमकर लोगों से पानी माँगते थे।

प्रश्न- 2 इन्दरसेना के संबंध में लेखक का क्या दृष्टिकोण है?

उत्तर- इन्दरसेना का कार्य लेखक को अंधविश्वास लगता है, उसका मानना है कि यदि इंदरसेना देवता से पानी दिलवा सकती है तो स्वयं अपने लिए पानी क्यों नहीं मांग लेती? पानी की कमी होने पर भी लोग घर में एकत्र किये हुए पानी को इंदरसेना पर फ़ेंकते हैं। लेखक इसे पानी की निर्मम बरबादी मानता है।

प्रश्न- 3 जीजी ने लेखक को किस प्रकार समझाया?

उत्तर- जीजी ने लेखक को निम्न तर्क देकर समझाया-

1- त्याग का महत्व- कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है।

2- दान की महत्ता- ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान दिया है।

3- इंद्रदेव को जल का अर्घ्य चढ़ाना- इंदरसेना पर पानी फ़ेंकना पानी की बरबादी नहीं बल्कि इंद्रदेव को जल का अर्घ्य चढ़ाना है।

4- पानी की बुवाई करना- जिस प्रकार किसान फ़सल उगाने के लिए जमीन पर बीज डालकर बुवाई करता है वैसे ही पानी वाले बादलों की फ़सल पाने के लिए पहले पानी की बुवाई की जाती है।

प्रश्न- 4 इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती थी ?

उत्तर- गंगा भारतीय समाज में सबसे पूज्य नदी है। वह भारतीयों के लिए केवल एक नदी नहीं अपितु माँ है, स्वर्ग की सीढ़ी है, मोक्षदायिनी है। गंगाजल पावन है, पवित्र करने वाली है। उसका जल अमृत तुल्य है। ऐसे परिवेश में लड़के सबसे पहले गंगा मैया की जय ही बोलेंगे। गंगा भी तो स्वर्ग से उतरकर सागर के साठ हजार पुत्रों को अपने जल के स्पर्श से मोक्ष देने आई थी।

प्रश्न- 5 नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है ?

उत्तर- भारतीय सामाजिक परिवेश में नदियों का महत्वपूर्ण स्थान है। नदियो की महत्ता निम्न बातों से प्रकट होती है-

1. इस देश मे अनेक नदियों को मोक्षदायिनी कहा है।
2. सात पवित्र नदियाँ- गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु, कावेरी, गोदावरी के पवित्र जल में डुबकी लगाने की कामना प्रत्येक भारतीय में रहती है।
3. हमारे देश के अधिकांश पवित्र स्थान नदियों के तट पर स्थित हैं। यथा-हरिद्वार, ऋषिकेश, प्रयाग, बनारस, उज्जैन, नासिक, मथुरा, आदि।
4. हमारा देश कृषि प्रधान है। नदियों के जल से ही यह समाज जीवित रहा है और तभी संस्कृति पनपी है।

प्रश्न- 6 लेखक दुखी क्यों है, उसके मन में कौन से प्रश्न उठ रहे हैं ?

उत्तर- आजादी के कई वर्ष बाद भी भारतीयों की सोच में सकारात्मक बदलाव न देखकर लेखक दुखी है। उसके मन में कई प्रश्न उठ रहे हैं - क्या हम सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र हैं? क्या हम अपने देश की संस्कृति और सभ्यता को समझ पाए हैं? राष्ट्र निर्माण में हम पीछे क्यों हैं, हम देश के लिए क्या कर रहे हैं? हम स्वार्थ और भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हैं, त्याग में क्यों नहीं? सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएँ गरीबों तक क्यों नहीं पहुँचती है?

पहलवान की ढोलक - फणीश्वरनाथ रेणु

प्रश्न-1 महामारी से ग्रस्त गाँव की रात्रि की विभीषिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर- गाँव में गरीबी थी। मलेरिया और हैजे से लोग मौत के मुँह में जा रहे थे। रोज दो-तीन लाशें उठती थी। रात को सन्नाटा रहता था, जिसे सियारों और उल्लुओं की आवाजें और भी भयानक बना देती थी। बीमार लोगों के कराहने, उल्टी करने और बच्चों के कमजोर कंठ से निकली माँ-माँ की करुण पुकार भी रात्रि की विभीषिका को कम नहीं करती थी।

प्रश्न-2 ढोलक की आवाज का पूरे गाँव पर क्या असर होता था?

उत्तर- ढोलक की आवाज से रात की विभीषिका और सन्नाटा कम होता था महामारी से पीड़ित लोगों की नसों में बिजली-सी दौड़ जाती थी, उनकी आँखों के सामने दंगल का दृश्य साकार हो जाता था और वे अपनी पीड़ा भूल खुशी-खुशी मौत को गले

लगा लेते थे। इस प्रकार ढोल की आवाज, मृतप्राय गाँववालों की नसों में संजीवनी शक्ति को भर बीमारी से लड़ने की प्रेरणा देती थी।

प्रश्न-3 लुट्टन ने अपना गुरु किसे माना और क्यों?

उत्तर- लुट्टन ने कुश्ती के दांव-पेंच किसी गुरु से नहीं बल्कि ढोल की आवाज से सीखे थे। ढोल से निकली हुई ध्वनियाँ उसे दांव-पेच सिखाती हुई और आदेश देती हुई प्रतीत होती थी। जब ढोल पर थाप पड़ती थी तो पहलवान की नसें उत्तेजित हो जाती थी वह लड़ने के लिए मचलने लगता था।

प्रश्न-4 लुट्टन सिंह राज पहलवान कैसे बना?

उत्तर- श्यामनगर के राजा कुश्ती के शौकीन थे। उन्होंने दंगल का आयोजन किया। पहलवान लुट्टन सिंह भी दंगल देखने पहुँचा। चाँद सिंह पहलवान जो शेर के बच्चे के नाम से प्रसिद्ध था, कोई भी पहलवान उससे भिड़ने की हिम्मत नहीं करता था। चाँद सिंह अखाड़े में अकेला गरज रहा था। लुट्टन सिंह ने चाँद सिंह को चुनौती दे दी और उससे भिड़ गया। ढ़ोल की आवाज सुनकर लुट्टन की नस-नस में जोश भर गया। उसने चाँद सिंह को चारों खाने चित कर दिया। राजा साहब ने लुट्टन की वीरता से प्रभावित होकर उसे राज पहलवान बना दिया।

प्रश्न-5 लुट्टन को दरबार क्यों छोड़ना पड़ा?

उत्तर- राजा की मृत्यु के बाद उसके बेटे ने गद्दी संभाली। उसे घोड़ों की रेस का शौक था । मैनेजर ने नये राजा को भड़काया, पहलवान और उसके दोनों बेटों के भोजनखर्च को भयानक और फ़िज़ूलखर्च बताया। फ़लस्वरूप नए राजा ने कुश्ती को बंद करवा दिया और पहलवान लुट्टनसिंह को उसके दोनों बेटों के साथ महल से निकाल दिया।

प्रश्न-6 किन घटनाओं से पहलवान लुट्टन के संघर्षशील व्यक्तित्व और हिम्मती होने का परिचय मिलता है?

उत्तर- पहलवान लुट्टन बहुत हिम्मती था। अपने दुखों की परवाह न करते हुए दूसरों को हिम्मत बंधाना बहुत हिम्मत का काम है। उसने निम्नांकित अवसरों पर अपनी दिलेरी और हिम्मत का परिचय दिया।

1- श्याम नगर के दंगल में चाँदसिंह से भिड़ते समय।
2- अपने बेटों की मृत्यु पर उनका अंतिम संस्कार करते समय।
3- बेटों की मृत्यु के बाद भी गाँव वालों का हौंसला बढ़ाने के लिए रात-रात भर ढोलक बजाते रहना।

शिरीष के फूल - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रश्न-1 हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी हो जाती है- शिरीष के फूल के आधार पर स्पष्ट करें ?

उत्तर- शिरीष के फूल को संस्कृत साहित्य में बहुत कोमल माना गया है। वह इतना कोमल है कि केवल भौंरों के पदों का दबाव ही सह सकता है। शिरीष की लकड़ी इतनी मजबूत अवश्य होती है कि इस पर झूला डाला जा सके। उसके फल इतने कठोर होते है कि नए फल आने तक भी अपना स्थान नहीं छोड़ते। शिरीष वायुमण्डल से रस खींचकर ही इतना कोमल और इतना कठोर बना है। शिरीष के फूल के आधार पर यह कहना उचित ही है कि हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी कभी जरूरी हो जाती है।

प्रश्न-2 द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन स्थितियों मे अविचल रह कर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है- स्पष्ट करें।

उत्तर- शिरीष को गरमी, धूप, वर्षा आँधी, लू, प्रभावित नहीं करती। वह तब भी लहलहाता है, जब पृथ्वी अग्नि के समान तप रही होती है। शिरीष से सीख लेते हुए लेखक सोचता है कि हमारे देश में जो मार काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर है, क्या वह देश को स्थिर नहीं रहने देगा। गुलामी, अशांति और विरोधी वातावरण के बीच अपने सिद्धांतों की रक्षा करते हुए गांधी जी स्थिर रह सके थे तो देश भी रह सकता है। जीने की प्रबल अभिलाषा के कारण विषम परिस्थितयों मे भी यदि शिरीष खिल सकता है तो हमारा देश भी विषम परिस्थितियों में स्थिर रह सकता है।

प्रश्न-3 हाय वह अवधूत आज कहाँ है? ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देह बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के किस संकट की ओर संकेत किया है ?

उत्तर- यहाँ अवधूत 'गाँधी जी' के लिए प्रयुक्त हुआ है। उन्होंने अपने आत्मबल से देह बल को पराजित किया। आज आत्मबल पर देह बल का वर्चस्व दिखाई दे रहा है। आज गाँधी जी के अभाव में वर्तमान सभ्यता के संकट में लेखक को भयंकर कष्ट का अनुभव हो रहा है।

प्रश्न-4 आधुनिक काल के किस कवि को कालिदास के समकक्ष रखा जा सकता है?

उत्तर- लेखक के अनुसार आधुनिक काल के कवि रवींद्रनाथ ठाकुर और सुमित्रानंदन पंत को कालिदास के समकक्ष रखा जा सकता है क्योंकि ये भी उन्हीं के समान अनासक्त एवं उन्मुक्त हृदय के हैं।

प्रश्न- 5 शिरीष को देखकर लेखक के मन में कैसी तरंगें उठती हैं?

उत्तर- लेखक सोचने लगता है कि इस चिलचिलाती धूप में वह इतना सरस कैसे रह पाता है? क्या ये लू आँधी, धूप, अपने आप में सत्य नहीं है? यह अपना जीवन रस कहाँ से ले पाता है।

प्रश्न-5 शिरीष के समान किसे बताया गया है, और क्यों?

उत्तर- शिरीष की भाँति महात्मा गाँधी को बताया गया है। जिस प्रकार शिरीष चिलचिलाती धूप, अग्नि कुंड बनी धरती में स्वयं को कठोर होते हुए सुकोमल बना रहता है ठीक वैसे ही देश में मची मार-काट, अग्निदाह और खून-खच्चर के बीच महात्मा गांधी इतने कोमल और कठोर बने रह सके थे। सत्य और अहिंसा के अपने सिद्धांतों के प्रति अडिग थे।

श्रम विभाजन और जाति प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज - डॉ. भीमराव आंबेडकर

प्रश्न-1 जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी एक कारण कैसे बनती रही है?

उत्तर- जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी एवं भुखमरी का एक कारण हमेशा बनती रही है। इसके मुख्य कारण निम्नवत हैं –

1- मनुष्य के पेशे का पूर्व निर्धारण
2- प्रतिकूल परिस्थितियों में भी पेशा बदलने की अनुमति न देना।
3- अपने पूर्व निर्धारित पेशे के प्रति व्यक्ति की अरूचि।
5. जाति प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो।

प्रश्न-2 आदर्श समाज की स्थापना का आधार क्या है?

उत्तर- निम्नांकित तीन बिंदुओं के आधार पर आदर्श समाज की स्थापना की जा सकती है-

1-समता 2-स्वतंत्रता 3-भाईचारा

प्रश्न-3 शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों की असमानता संभावित रहने के बावजूद 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धान्त मानने का आग्रह क्यों हैं ?

उत्तर- डॉ. आम्बेडकर यह जानते हुए भी कि शारीरिक वंश परंपरा की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता का होना संभव है। समता के व्यवहार्य सिद्धान्त को मानने का आग्रह करते हैं-

इसके पीछे लेखक का तर्क यह है कि समाज को यदि अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करनी है, तो समाज के सभी सदस्यों को आरम्भ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाएँ। राजनीतिज्ञों को भी सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने के लिए अवसर देने चाहिए। उनका तर्क है कि वंश में जन्म लेना या सामाजिक परंपरा व्यक्ति के वश में नहीं है। अतः इस आधार पर निर्णय लेना उचित नहीं है।

प्रश्न-4 समता का औचित्य कहाँ तक है?

उत्तर- समता का औचित्य बहुत आगे तक जाता है, जो जाति, धर्म, संप्रदाय से ऊपर उठकर मानवता अर्थात् मानव मात्र के प्रति समान व्यवहार है।

प्रश्न-5 राजनीतिज्ञ पुरूष के संदर्भ में समता को कैसे स्पष्ट किया गया है?

उत्तर- राजनेता के पास अनेक लोग आते हैं, उसकी उनके पास पर्याप्त जानकारी नहीं होती है। अतः उसे समता और मानवता के आधार पर व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न-6 राजनीतिज्ञ समान व्यवहार क्यों नहीं करते ?

उत्तर- सभी लोगों के समान होते हुए भी समाज में उनका वर्गीकरण और श्रेणीकरण करना आवश्यक होता है। इसलिए राजनीतिज्ञ समान व्यवहार नहीं करते हैं।

वितान भाग-2

सिल्वर वैडिंग

प्रश्न-1 यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर- यशोधर बाबू बचपन से ही जिम्मेदारियों के बोझ से लद गए थे। बचपन में ही उनके माता-पिता का देहांत हो गया था। उनका पालन-पोषण उनकी विधवा बुआ ने किया। मैट्रिक होने के बाद वे दिल्ली आ गए तथा किशन दा जैसे कुंआरे के पास रहे। इस तरह वे सदैव उन लोगों के साथ रहे जिन्हें कभी परिवार का सुख नहीं मिला। वे सदैव पुराने लोगों के साथ रहे, पले, बढ़े। अत: उन परंपराओं को छोड़ नहीं सकते थे। उन पर किशन दा के सिद्धांतों का बहुत प्रभाव था। इन सब कारणों से यशोधर बाबू समय के साथ बदलने में असफल रहते हैं। दूसरी तरफ, उनकी पत्नी यद्यपि पुराने संस्कारों की थीं और एक संयुक्त परिवार में आई थीं जहाँ उन्हें सुखद अनुभव हुआ। उनकी इच्छाएँ अतृप्त रहीं। वे मातृ सुलभ प्रेम के कारण अपनी संतानों का पक्ष लेती हैं और बेटी की बातों का समर्थन करती हैं। वे बेटों के किसी मामले में दखल नहीं देती हैं। इस प्रकार वे स्वयं को शीघ्र ही बदल लेती हैं।

प्रश्न-2 पाठ में 'जो हुआ होगा' वाक्य की आप कितनी अर्थ छवियाँ खोज सकते/सकती हैं?

उत्तर- 'जो हुआ होगा' वाक्यांश का प्रयोग किशन दा की मृत्यु के संदर्भ में होता है। यशोधर ने किशन दा के जाति भाई से उनकी मृत्यु का कारण पूछा तो उसने जवाब दिया- जो हुआ होगा अर्थात् क्या हुआ, पता नहीं। इस वाक्य की अनेक छवियाँ बनती हैं –

1. पहला अर्थ खुद कहानीकार ने बताया कि पता नहीं, क्या हुआ।
2. दूसरा अर्थ यह है कि किशनदा अकेले रहे। जीवन के अंतिम क्षणों में भी किसी ने उन्हें नहीं स्वीकारा। इस कारण उनके मन में जीने की इच्छा समाप्त हो गई।
3. तीसरा अर्थ समाज की मानसिकता है। किशनदा जैसे व्यक्ति का समाज के लिए कोई महत्त्व नहीं है। वे सामाजिक नियमों के विरोध में रहे। फलतः समाज ने भी उन्हें दरकिनार कर दिया।

प्रश्न-3 'समहाउ इंप्रापर' वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारंभ में तकिया कलाम की तरह करते हैं? इस काव्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या संबंध बनता है?

उत्तर- यशोधर बाबू 'समहाउ इंप्रॉपर' वाक्यांश का प्रयोग तकिया कलाम की तरह करते हैं। उन्हें जब कुछ अनुचित लगता या उनके नजरिए से कोई भी कमी नजर आती है तो वे इस वाक्यांश का प्रयोग करते हैं। वे नए के साथ तालमेल नहीं बैठा पाते हैं। अत: यह वाक्यांश उनके असंतुलन एवं व्यक्तित्व को प्रकट करता है। कहानी के अंत में यशोधर के व्यक्तित्व की सारी विशेषता सामने उभर आती है। वे जमाने के हिसाब से अप्रासंगिक हो गए हैं।

प्रश्न-4 यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में किशनदा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। आपके जीवन को दिशा देने में किसका महत्त्वपूर्ण योगदान है और कैसे?

उत्तर- मेरे जीवन को दिशा देने में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान मेरे गुरुओं का रहा है। उन्होंने हमेशा मुझे यही शिक्षा दी कि सत्य बोलो। सत्य बोलने वाला व्यक्ति हर तरह की परेशानी से मुक्त हो जाता है जबकि झूठ बोलने वाला अपने ही जाल में फँस जाता है। उसे एक झूठ छुपाने के लिए सैकड़ों झूठ बोलने पड़ते हैं। अपने गुरुओं की इस बात को मैंने हमेशा याद रखा। वास्तव में उनकी इसी शिक्षा ने मेरे जीवन की दिशा बदल दी।

प्रश्न-5 वर्तमान समय में परिवार की संरचना, स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव इस कहानी से कहाँ तक सामंजस्य बिठा पाते हैं?

उत्तर- इस कहानी में दर्शाए गए परिवार के स्वरूप व संरचना आज भी लगभग हर परिवार में पाई जाती है। संयुक्त परिवार प्रथा समाप्त हो रही है। पुरानी पीढ़ी की बातों या सलाह को नयी पीढ़ी सिरे से नकार रही है। नए युवा कुछ नया करना चाहते हैं, परंतु बुजुर्ग परंपराओं के निर्वाह में विश्वास रखते हैं। यशोधर बाबू की तरह आज का मध्य- वर्गीय पिता विवश है।

वह किसी विषय पर अपना निर्णय नहीं दे सकता। माताएँ बच्चों के समर्थन में खड़ी नजर आती हैं। आज बच्चे अपने दोस्तों के साथ पार्टी करने में अधिक खुश रहते हैं। वे आधुनिक जीवन शैली को ही सब कुछ मानते हैं। लड़कियाँ फ़ैशन के अनुसार वस्त्र पहनती हैं। यशोधर की लड़की उसी का प्रतिनिधि है। अत: यह कहानी आज लगभग हर परिवार की है।

प्रश्न-6 कहानी की मूल संवेदना पीढ़ी अंतराल है, कैसे?

उत्तर- 'सिल्वर वैडिंग' शीर्षक कहानी की मूल संवेदना है। यशोधर बाबू और उसके पुत्रों में एक पीढ़ी का अंतराल है। इसी कारण यशोधर बाबू अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाते हैं। यह सिद्धांत और व्यवहार की लड़ाई है। यशोधर बाबू सिद्धांतवादी हैं तो उनके पुत्र व्यवहारवादी। आज सिद्धांत नहीं व्यावहारिकता चलती है। यशोधर बाबू के विचार पूरी तरह से पुराने हैं जो नयी पीढ़ी के साथ कहीं भी तालमेल नहीं रखते। पीढ़ी का अंतराल और उनके विचारों का अंतराल यशोधर बाबू और उनके परिवार के सदस्यों में वैचारिक अलगाव पैदा कर देता है।

प्रश्न-7 अपने घर और विद्यालय के आस-पास हो रहे उन बदलावों के बारे में लिखें जो सुविधाजनक और आधुनिक होते हुए भी बुजुर्गों को अच्छे नहीं लगते?

उत्तर- हमारे घर व विद्यालय के आस-पास निम्नलिखित बदलाव हो रहे हैं जिन्हें बुजुर्ग पसंद नहीं करते हैं-

1. युवाओं द्वारा मोबाइल का प्रयोग करना।
2. युवाओं द्वारा पैदल न चलकर तीव्र गति से चलाते हुए मोटर-साइकिल या स्कूटर का प्रयोग।
3. लड़कियों द्वारा जीन्स व शर्ट पहनना।
4. लड़के-लड़कियों की दोस्ती व पार्क में घूमना।
5. खड़े होकर भोजन करना।
6. तेज आवाज में संगीत सुनना।

प्रश्न-8 नया छोकरा चड्ढा यशोधर बाबू से किस प्रकार की धृष्टता करता था?

उत्तर- चड्ढा असिस्टेंट ग्रेड में आया था। चूंकि वह नौजवान था, इसलिए वह पंत बाबू के साथ धृष्टता किया करता था। उनकी उम्र का लिहाज भी वह नहीं करता था। उनकी घड़ी को वह चूनेदानी कहता; कभी उनकी कलाई पकड़ लेता। उसे इस बात का जरा भी खयाल नहीं होता था कि पंत बुजुर्ग व्यक्ति हैं। वह तो अपनी जवानी के जोश में जो कुछ करता उसे अच्छा लगता है। धीरे-धीरे यशोधर पंत ने इन बातों की ओर ध्यान देना छोड़ दिया। वे किसी तरह का विरोध भी नहीं करते थे।

प्रश्न-9 किशनदा का बुढ़ापा सुखी क्यों नहीं रहा?

उत्तर- बाल-जती किशनदा का बुढ़ापा सुखी नहीं रहा। उनके तमाम साथियों ने हौजखास, ग्रीनपार्क,ग्रेटर कैलाश कहीं-न-कहीं ज़मीन ली, मकान बनवाया, लेकिन उन्होंने कभी इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। रिटायर होने के छह महीने बाद जब उन्हें क्वार्टर खाली करना पड़ा तब उनके द्वारा उपकृत लोगों में से एक ने भी उन्हें अपने यहाँ रखने की पेशकश नहीं की। स्वयं यशोधर बाबू उनके सामने ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं रख पाए क्योंकि उस समय तक उनकी शादी हो चुकी थी और उनके दो कमरों के क्वार्टर में तीन परिवार रहा करते थे। किशनदा कुछ साल राजेंद्र नगर में किराए का क्वार्टर लेकर रहे और फिर अपने गाँव लौट गए जहाँ साल भर बाद उनकी मृत्यु हो गई। विचित्र बात यह है कि उन्हें कोई भी बीमारी नहीं हुई। बस रिटायर होने के बाद मुरझाते-सूखते ही चले गए। अकेलेपन ने उनके अंदर की जीवनशक्ति को समाप्त कर दिया था।

प्रश्न-10 आज पारिवारिक संबंध आर्थिक संबंधों पर ज्यादा निर्भर रहते हैं, स्पष्ट करें।

उत्तर- विज्ञान के इस युग में आज संबंधों का मानक आर्थिक स्थिति बन गई है। आज पारिवारिक संबंध तभी सही रहते हैं जब आर्थिक स्थिति बेहतर हो। यशोधर पंत की पारिवारिक स्थिति इसी अर्थ पर निर्भर करती है। बच्चे चाहते हैं कि पिता किसी न किसी ढंग से ऊपरी कमाई करें और उनका जीवन सुखी बनाएँ लेकिन सिद्धांतवादी पंत ने ऐसा कभी सोचा भी नहीं। और तो और अपने कोटे का निर्धारित फ्लैट भी उन्होंने नहीं लिया। इन सभी बातों से उनके बच्चे सदा उनसे खिन्न रहे। यद्यपि बड़ा बेटा भूषण एक विज्ञापन एजेंसी में पंद्रह सौ रुपये मासिक की नौकरी करता है तथापि पिता और पुत्र के बीच की वैचारिक खाई बनाने में पैसे की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। कहीं न कहीं पैसा ही इन संबंधों को प्रभावित कर रहा है।

प्रश्न-11 गीता की महिमा सुनते-सुनते जनार्दन शब्द सुनते ही यशोधर पंत क्या सोचने लगते हैं?

उत्तर- गीता की महिमा सुनते-सुनते अचानक यशोधर पंत के कानों में 'जनार्दन' शब्द सुनाई पड़ा। यह सुनते ही उन्हें अपने जीजा जनार्दन जोशी की याद आ गई। उन्हें याद आया कि परसों ही चिट्ठी आई है कि उनके जीजा जी बीमार हैं। वे

अहमदाबाद में रहते हैं। ऐसे समय में उनका हाल-चाल जानने के लिए अहमदाबाद जाना ही होगा। यशोधर पंत एक मिलनसार व्यक्ति हैं। हर किसी के सुख-दुख में वे जाते हैं। वे चाहते हैं कि उनके बच्चे भी पारिवारिकता के प्रति उत्साही बनें। लेकिन ऐसा नहीं हो पाता। पत्नी और बच्चों का तो यह मानना है कि पुराने रिश्तों के प्रति लगाव रखना मूर्खता है? क्योंकि इन्हें निभाने के लिए समय और पैसा दोनों की हानि होती है। अपने जीजा जनार्दन जोशी का हाल-चाल जानने के लिए वे अहमदाबाद जाने के लिए उतावले हैं जब बड़ा बेटा उन्हें पैसे देने से मना कर देता है तो वे उधार पैसे लेकर अहमदाबाद जाने का निर्णय करते हैं।

प्रश्न-12 यशोधर बाबू किशनदा की किन परंपराओं को अभी तक निभा रहे हैं?

उत्तर- यशोधर बाबू किशनदा के भक्त हैं। वे उनके विचारों का अनुसरण करते हैं, जो निम्नलिखित हैं-

(क) उन्होंने कभी मकान नहीं लिया क्योंकि किशनदा ने कहा कि मूर्ख मकान बनाते हैं, समझदार उसमें रहते हैं।

(ख) उन्होंने कभी अपने सिद्धांतों को नहीं छोड़ा।

(ग) उन्हें हर नई चीज़ में कमी नज़र आती थी।

(घ) वे किशनदा की उस बात को मानते हैं कि जवानी में व्यक्ति गलतियाँ करता है, परंतु बाद में समझदार हो जाता है।

(ङ) वे 'जन्यो पुन्यू' के दिन सब कुमाउँनियों को जनेऊ बदलने के लिए अपने घर बुलाते थे, होली गवाते थे तथा रामलीला की तालीम के लिए क्वार्टर का एक कमरा देते थे।

प्रश्न-13 यशोधर बाबू की पत्नी ने मॉडर्न बनने के पीछे क्या तर्क दिए थे?

उत्तर- यशोधर बाबू की पत्नी अपने मूल संस्कारों से किसी भी तरह आधुनिक नहीं है, परंतु बच्चों की तरफदारी करने की मातृसुलभ मजबूरी ने उन्हें भी मॉडर्न बना डाला है। जिस समय उनकी शादी हुई थी यशोधर बाबू के साथ गाँव से आए ताऊजी और उनके दो विवाहित बेटे भी रहा करते थे। इस संयुक्त परिवार में पीछे ही पीछे बहुओं में गज़ब के तनाव थे लेकिन ताऊजी के डर से कोई कुछ कह नहीं पाता था। यशोधर बाबू की पत्नी को शिकायत है कि संयुक्त परिवार वाले उस दौर में पति ने हमारा पक्ष कभी नहीं लिया, बस जिठानियों की चलने दी। उनका यह भी मानना है कि मुझे आचार-व्यवहार के ऐसे बंधनों में रखा गया मानो मैं जवान औरत नहीं, बुढ़िया थी। जितने भी नियम इनकी बुढ़िया ताई के लिए थे, वे सब मुझ पर भी लागू करवाए – ऐसा कहती है घरवाली बच्चों से। बच्चे उससे सहानुभूति व्यक्त करते हैं। फिर वह यशोधर जी से उन्मुख होकर कहती है-मैं भी इन बातों को उसी हद तक मानूंगी जिस हद तक सुभीता हो। अब मेरे कहने से वह सब ढोंग-ढकोसला हो नहीं सकता।

प्रश्न-14 'सिल्वर वैडिंग' के आधार पर बताइए कि यशोधर बाबू किशनदा को अपना आदर्श क्यों मानते थे?

उत्तर- 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यशोधर बाबू किशनदा के मानस पुत्र लगते हैं। उनका व्यक्तित्व किशनदा की प्रतिच्छाया है। कम उम्र में यशोधर पहाड़ से दिल्ली आ गए थे तथा किशनदा ने ही उन्हें आश्रय दिया था। उन्हें सरकारी विभाग में नौकरी दिलवाई। इस तरह जीवन में महत्त्वपूर्ण योगदान करने वाले व्यक्ति से प्रभावित होना स्वाभाविक है। किशनदा की निम्नलिखित आदतों का यशोधर बाबू ने जीवन भर निर्वाह किया-

- ऑफिस में सहयोगियों के साथ संबंध
- सुबह सैर करने की आदत
- पहनने-ओढ़ने का तरीका
- किराए के मकान में रहना
- आदर्श बातें करना
- किसी बात को कहकर मुसकराना
- सेवानिवृत्ति के बाद गाँव जाने की बात कहना आदि

यशोधर बाबू ने रामलीला करवाना आदि भी किशनदा से ही सीखा। वे अंत तक अपने सिद्धांतों पर चिपटे रहे। किशनदा के उत्तराधिकारी होते हुए भी उन्होंने परिवार नामक संस्था को बनाया।

प्रश्न-15 यशोधर पंत की तीन चारित्रित विशेषताएँ सोदाहरण बताइए।

उत्तर- यशोधर पंत गृह मंत्रालय में सेक्शन अफ़सर हैं। वह पहाड़ से दिल्ली आए थे और यहाँ किशन दा के साथ रहे। उनका यशोधर बाबू पर असर था। यशोधर के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

1. **भौतिक सुख के विरोधी –** यशोधर भौतिक संसाधनों के घोर विरोधी थे। उन्हें घर या दफ्तर में पार्टी करना पसंद नहीं था। वे पैदल चलते थे या साइकिल पर चलते थे। केक काटना, काले बाल करना, मेकअप, धन संग्रह आदि पसंद नहीं था।
2. **असंतुष्ट पिता –** यशोधर जी एक असंतुष्ट पिता भी थे। अपने बच्चों के विचारों से सहमत नहीं थे। बेटी के पहनावे को वे सही नहीं मानते थे। बेटे उनसे किसी बात में सलाह नहीं लेते थे क्योंकि उन्हें सब कुछ गलत नज़र आता था।
3. **परंपरावादी –** यशोधर परंपरा का निर्वाह करते थे। उन्हें सामाजिक रिश्ते निबाहने में आनंद आता था। वे अपनी बहन को नियमित तौर पर पैसा भेजते थे। वे रामलीला आदि का आयोजन करवाते थे।
4. **अपरिवर्तनशील –** यशोधर बाबू आदर्शों से चिपके रहे। वे समय के अनुसार अपने विचारों में परिवर्तन नहीं ला सके। वे रूढ़िवादी थे। उन्हें बच्चों के नए प्रयासों पर संदेह रहता था। वे सेक्शन अफ़सर होते हुए भी साइकिल से दफ्तर जाते थे।

जूझ : आनंद यादव

प्रश्न-1 जूझ' शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथा नायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है?

उत्तर- शीर्षक किसी भी रचना के मुख्य भाव को व्यक्त करता है। इस पाठ का शीर्षक 'जूझ' पूरे अध्याय में व्याप्त है। 'जूझ' का अर्थ है - संघर्ष। इसमें कथा नायक आनंद ने पाठशाला जाने के लिए संघर्ष किया। यह एक किशोर के देखे और भोगे हुए गँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ व परिवेश को विश्वसनीय ढंग से व्यक्त करता है। इसके अलावा आनंद की माँ भी अपने स्तर पर संघर्ष करती है। लेखक के संघर्ष में उसकी माँ, देसाई सरकार, मराठी व गणित के अध्यापक ने सहयोग दिया। अत: यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है। इस कहानी के कथानायक में संघर्ष की प्रवृत्ति है। उसका पिता उसको पाठशाला जाने से मना कर देता है। इसके बावजूद, कथा नायक माँ को पक्ष में करके देसाई सरकार की सहायता लेता है। वह दादा व देसाई सरकार के समक्ष अपना पक्ष रखता है तथा अपने ऊपर लगे आरोपों का उत्तर देता है। आगे बढ़ने के लिए वह हर कठिन शर्त मानता है। पाठशाला में भी वह नए माहौल में ढलने, कविता रचने आदि के लिए संघर्ष करता है। इस प्रकार यह शीर्षक कथा-नायक की केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है।

प्रश्न-2 स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?

उत्तर- लेखक को मराठी का अध्यापक बड़े आनंद के साथ पढ़ाता था। वह भाव छंद और लय के साथ कविताओं का पाठ करता था। बस तभी लेखक के मन में भी यह विचार आया कि क्यों न वह भी कविताएँ लिखना शुरू करें। खेतों में काम करते-करते और भैंसे चराते-चराते उसे बहुत-सा समय मिल जाता था। इस कारण लेखक ने कविताएँ लिखनी आरंभ कर दी और अपनी सारी कविताओं को वह मराठी के अध्यापक को दिखाता था ताकि उसकी कमियों को दूर किया जा सके।

प्रश्न-3 श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं को रेखांकित करें जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रुचि जगाई?

उत्तर- श्री सौंदलगेकर मराठी के अध्यापक थे। लेखक बताता है कि पढ़ाते समय वे स्वयं में रम जाते थे। उनका कविता पढ़ाने का अंदाज बहुत अच्छा था। सुरीला गला, छद की बढ़िया लय-ताल और उसके साथ ही रसिकता थी उनके पास। पुरानी-नयी मराठी कविताओं के साथ-साथ उन्हें अनेक अंग्रेजी कविताएँ भी कंठस्थ थीं। पहले वे एकाध कविता गाकर सुनाते थे-फिर बैठे-बैठे अभिनय के साथ कविता का भाव ग्रहण कराते। उसी भाव की किसी अन्य की कविता भी सुनाकर दिखाते। वे स्वयं भी कविता लिखते थे। याद आई तो वे अपनी भी एकाध कविता यह सब सुनते हुए, अनुभव करते हुए लेखक को अपना भान ही नहीं रहता था। लेखक अपनी आँखें और | प्राणों की सारी शक्ति लगाकर दम रोककर मास्टर के हाव-भाव, ध्वनि, गति आदि पर ध्यान देता था। उससे प्रभावित होकर लेखक भी तुकबंदी करने का प्रयास करता था। अध्यापक लेखक की तुकबंदी का संशोधन करते तथा उसे कविता के लय, छंद, अलंकार आदि के बारे में बताते। इन सब कारणों से लेखक के मन में कविताओं के प्रति रुचि जगी।

प्रश्न-4 कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया?

उत्तर- जब लेखक को कविता के प्रति कोई लगाव नहीं था तो उसे अपना अकेलापन काटने को दौड़ता था। इसी अकेलेपन ने उसके मन पर निराशा की छाया डाल दी थी। इसी कारण वह जीवन के प्रति निर्मोही हो गया था। लेकिन जब उसका लगाव

कविता के प्रति हुआ तो उसकी धारणा एकदम बदल गई। उसे अकेलापन अब अच्छा लगने लगा था। वह चाहता था कि कोई उसे कविता रचते समय न टोके। वास्तव में कविता के प्रति लगाव होने के बाद लेखक के लिए अकेलापन ज़रूरी हो गया था। इसी अकेलेपन में वह कविताएँ रच सकता था।

प्रश्न-5 आपके खयाल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में दत्ताजी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का?

उत्तर- पढ़ाई-लिखाई के संबंध में दत्ता जी राव का रवैया सही था। लेखक का दृष्टिकोण पढ़ाई के प्रति यथार्थवादी था। उसे पता था कि खेती से गुजारा नहीं होने वाला। पढ़ने से उसे कोई-न-कोई नौकरी अवश्य मिल जाएगी और गरीबी दूर हो जाएगी। वह सोचता भी है-पढ़ जाऊँगा तो नौकरी लग जाएगी, चार पैसे हाथ में रहेंगे, विठोबा आण्णा की तरह कुछ धंधा-कारोबार किया जा सकेगा। दत्ता जी राव का रवैया भी सही है। उन्होंने लेखक के पिता को धमकाया तथा लेखक को पाठशाला भिजवाया। यहाँ तक कि खुद खर्चा उठाने तक की धमकी लेखक के पिता को दी। इसके विपरीत, लेखक के पिता का रवैया एकदम अनुचित था। उसकी यह सोच, 'तेरे ऊपर पढ़ने का भूत सवार हुआ है। मुझे मालूम है बालिस्टर नहीं होने वाला है तू"-एकदम प्रतिगामी था। वह खेती के काम को ज्यादा बढ़िया समझता था तथा स्वयं अय्याशी करने के लिए बच्चे की खेती में झोंकना चाहता था।

प्रश्न-6 दत्ताजी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी माँ को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा। यदि झूठ का सहारा न लेना पड़ता तो आगे का घटनाक्रम क्या होता? अनुमान लगाएँ।

उत्तर- यदि झूठ का सहारा न लेते तो लेखक अनपढ़ रह जाता और वह जीवनभर खेतों में कोल्हू के बैल की तरह जुता रहता। उसे सिवाय भैंसे चराने अथवा खेती करने के और कोई काम न होता। वह दिन-भर खेतों पर काम करता और शाम को घर लौट आता। उसका पिता अय्याशी करता रहता। लेखक के सारे सपने टूट जाते। वह अपना जीवन और प्रतिभा ऐसे ही व्यर्थ जाने देता। बिना झूठ का सहारा लिए उसकी प्रतिभा कभी भी न चमक पाती। केवल एक झूठ ने लेखक के जीवन की दिशा ही बदल दी।

प्रश्न-7 जूझ' उपन्यास में लेखक ने क्या संदेश दिया है? क्या लेखक अपने उद्देश्य में सफल रहा है?

उत्तर- इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने यही संदेश देना चाहा है कि व्यक्ति को संघर्षों से जूझते रहना चाहिए। समस्याएँ तो जीवन में आती रहती हैं। इन समस्याओं से भागना नहीं चाहिए बल्कि इनका मुकाबला करना चाहिए। इसके लिए आत्मविश्वास का होना जरूरी है। बिना आत्मविश्वास के व्यक्ति संघर्ष नहीं कर सकता। जो व्यक्ति संघर्ष करता है उसे एक न एक दिन सफलता अवश्य मिलती है। संघर्ष करना तो मानव की नियति है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में जीवनभर संघर्ष करता है। यदि संघर्ष नहीं किया तो मानव जीवन एकाकी एवं नीरस बन जाएगा। इन संघर्षों से जूझ कर व्यक्ति सफलता के ऊँचे शिखर पर पहुँच सकता है। लेखक का जीवन भी बहुत संघर्षशील रहा है। इन संघर्षों से दो चार होकर ही उसने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त कर लिया। इस तरह हम कह सकते हैं कि लेखक अपना उद्देश्य प्रस्तुत करने में सफल रहा है।

प्रश्न-8 लेखक का पाठशाला में पहला अनुभव कैसा रहा?

उत्तर- लेखक फिर से पाँचवीं कक्षा में जाकर बैठने लगा। वहाँ उसे पुनः नाम लिखवाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। 'पाँचवीं ना पास' की टिप्पणी उसके नाम के आगे लिखी हुई थी। पहले दिन गली के दो लड़कों को छोड़कर कोई भी लड़की उसका जानकार नहीं था। लेखक को बहुत बुरा लगा। वह सोचने लगा कि उसे अब उन लड़कों के साथ बैठना पड़ेगा जिन्हें वह मंद बुद्धि समझता था। उसके साथ के सभी लड़के तो आगे की कक्षाओं में चले गए थे। इसलिए वह कक्षा में स्वयं को बहुत अकेला महसूस कर रहा था।

प्रश्न-9 'जूझ' उपन्यास की संवाद योजना की समीक्षा करें।

उत्तर- संवाद योजना की दृष्टि से यह उपन्यास बहुत सफल रहा है। इस उपन्यास के संवाद रोचक, मार्मिक, छोटे किंतु प्रभावशाली हैं। उपन्यासकार ने पात्रों के अनुकूल संवाद प्रस्तुत किए हैं। इसीलिए उनकी संवाद योजना पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ भी प्रस्तुत करती हैं। इस उपन्यास के सभी पात्र अपने स्तर और स्थिति के अनुसार संवाद बोलते हैं। लगभग सभी संवाद पात्रों की मनोस्थिति को प्रस्तुत करते हैं। छोटे संवाद अधिक प्रभावशाली हैं। टेबल पर मटमैला गमछा देखकर उन्होंने पूछा "किसका है रे?" "मेरा है मास्टर।" "तू कौन है?" "मैं जकाते। "पिछले साल फेल होकर इसी कक्षा में बैठा हूँ।"

प्रश्न-10 कविताएँ पढ़ते हुए लेखक को कितनी शक्तियाँ प्राप्त हुई?

उत्तर- लेखक बताता है कि कविताएँ पढ़ते हुए अथवा कविताओं के साथ खेलते हुए उसे दो बड़ी शक्तियाँ प्राप्त हुई। पहली लेखक को खेत पर काम करते हुए अकेलापन और ऊबाऊपन महसूस होता था लेकिन कविताएँ पढ़ने से लेखक का यह

ऊबाऊपन बिलकुल दूर हो गया। लेखक अपने आप ही खेलने लगा। लेखक को ऐसा, लगने लगा कि यदि वह अकेला रहे तो ही अच्छा है क्योंकि अकेले रहने से वह ज्यादा कविताएँ लिख सकता था। दूसरे लेखक को कविता गाना आ गया। अब वह काव्य पाठ करते-करते नाचने-गाने लगता। उसे लय तुकबंदी और छंद का ज्ञान होने लगा। गाने के साथ-साथ अभिनय करना भी लेखक सीख गया। कविता पाठ ने लेखक को न केवल श्रेष्ठ कवि बना दिया बल्कि उसकी काव्य प्रतिभा को कई लोगों ने पहचाना।

प्रश्न-11 लेखक कविता किस ढंग से लिखता था और कविता बंदी के प्रति उसकी लगन कैसी थी?

उत्तर- जब लेखक मराठी अध्यापक सौंदलगेकर से प्रभावित हुआ तो उसने खेतों में काम करते-करते कविताएँ लिखने अथवा रचना का निश्चय किया। भैंस चराते-चराते लेखक फसलों पर, जंगली फूलों पर तुकबंदी करता। ज़ोर-ज़ोर से गुनगुनाता। कविताएँ लिखता फिर उन्हें मास्टर जी को भी दिखाता। कविता रचने के लिए लेखक खीसे में कागज और पेंसिल भी रखने लगा। कभी यदि उसके पास कागज और पेंसिल नहीं होता तो लेखक लकड़ी के छोटे से टुकड़े से भैंस की पीठ पर रेखा खींचकर लिखता था। वास्तव में कविता के प्रति लेखक की लगन बहुत ज्यादा थी। कविता के लिए वह अपना पूरा जीवन बिता देना चाहता था।

प्रश्न-12 दत्ताजी राव ने दादा की खिंचाई किस प्रकार की?

उत्तर- सरकार ने आनंदा की पढ़ाई के मामले पर दादा पर खूब गुस्सा किया। उन्होंने दादा की खूब हजामत बनाई। देसाई के मफ़ा (खेत) को छोड़ देने के बाद दादा का ध्यान किस तरह काम की तरफ नहीं रहा। मन लगाकर वह खेत में किस तरह श्रम नहीं करता है; फसल में लागत नहीं लगाता है, लुगाई और बच्चों को काम में जोतकर किस तरह खुद गाँव भर में खुले साँड़ की तरह घूमता है और अब अपनी मस्ती के लिए किस तरह छोरा के जीवन की बलि चढ़ा रहा है।

प्रश्न-13 पहले दिन शरारती लड़के चव्हाण ने लेखक के साथ क्या किया?

उत्तर- जब पहले दिन लेखक स्कूल आया तो वह सहमा हुआ था। उसके पास ढंग के कपड़े तथा बस्ता भी नहीं था। उसकी जान-पहचान भी नहीं थी। शरारती चव्हाण ने पूछा कि वह नया लगता है या फिर वह गलती से आ बैठा है। लेखक बालुगड़ी की लाल माटी के रंग में मटमैली धोती व गमछा पहने हुए था। चव्हाण ने उसका गमछा छीन लिया और उसे अपने सिर पर लपेट कर मास्टर की नकल की। उसने उसे उतारकर टेबल पर रखा और अपने सिर पर हाथ फेरते हुए हुश्श की आवाज़ की। मास्टरजी के आने पर वह चुपचाप अपनी जगह पर जा बैठा।

प्रश्न-14 जूझ' कहानी मुख्य पात्र की किस चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है?

उत्तर- शीर्षक किसी रचना का मुख्य आधार होता है। इससे पाठक को विषयवस्तु का बोध होता है। 'जूझ' शीर्षक अपने आप में अपनी बात को प्रकट करता है। जूझ' का अर्थ है- संघर्ष। इस कहानी में लेखक का संघर्ष दिखाया गया है। यह शीर्षक आत्मकथा के मूल स्वर के रूप में सर्वत्र दिखाई देता है। कथानायक को शिक्षा प्राप्त करने के लिए कई स्तरों पर संघर्ष करना पड़ा। परिवार, समाज, आर्थिक, विद्यालय आदि हर स्तर पर उसका संघर्ष दिखाई देता है। यह शीर्षक कथानायक के पढ़ाई के प्रति जूझने की भावना को उजागर करता है।

प्रश्न-15 जूझ' कहानी में आपको किस पात्र ने सबसे अधिक प्रभावित किया और क्यों?

उत्तर- 'जूझ' कहानी में दत्ता जी राव देसाई एक प्रभावशाली चरित्र के रूप में हैं। वे आम लोगों के कष्ट दूर करने की कोशिश भी करते हैं। उनके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

1. **तर्कशील –** दत्ता जी राव तर्क के माहिर हैं। लेखक की पढ़ाई के संबंध में वे लेखक के पिता से तर्क करते हैं। जिसके कारण वह उसे पढ़ाने की मंजूरी देता है।
2. **मददगार –** दत्ता जी राव लोगों की मदद करते हैं। वे लेखक की पढ़ाई का खर्च भी उठाने को तैयार हो जाते हैं।
3. **प्रेरक –** दत्ता साहब का व्यक्तित्व प्रेरणादायक है। वे अच्छे कार्यों के लिए दूसरों को प्रोत्साहित भी करते हैं। इसी की प्रेरणा से लेखक का पिता बेटे को पढ़ाने को तैयार होता है।
4. **समझदार –** दत्ता बेहद सूझबूझ वाले व्यक्ति थे। लेखक की माँ की बात का अर्थ वे सीधे ही समझ जाते हैं। वे लेखक के पिता को बुलाकर उसे समझाते हैं कि वह बेटे की पढ़ाई करवाए। वह माँ-बेटे की बात को भी गुप्त ही रखता है।

अतीत में दबे पाँव : ओम थानवी

प्रश्न-1 सिंधु सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था, कैसे?

उत्तर- सिंधु-सभ्यता के शहर मुअनजो-दड़ो की व्यवस्था, साधन और नियोजन के विषय में खूब चर्चा हुई है। इस बात से सभी प्रभावित हैं कि वहाँ की अन्न-भंडारण व्यवस्था, जल-निकासी की व्यवस्था अत्यंत विकसित और परिपक्व थी। हर निर्माण बड़ी बुद्धिमानी के साथ किया गया था; यह सोचकर कि यदि सिंधु का जल बस्ती तक फैल भी जाए तो कम-से-कम नुकसान हो। इन सारी व्यवस्थाओं के बीच इस सभ्यता की संपन्नता की बात बहुत ही कम हुई है। वस्तुत: इनमें भव्यता का आडंबर है ही नहीं। व्यापारिक व्यवस्थाओं की जानकारी मिलती है, मगर सब कुछ आवश्यकताओं से ही जुड़ा हुआ है, भव्यता का प्रदर्शन कहीं नहीं मिलता। संभवत: वहाँ की लिपि पढ़ ली जाने के बाद इस विषय में अधिक जानकारी मिले।

प्रश्न-2 'सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया?

उत्तर- सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्त्व ज्यादा था। वास्तुकला या नगर-नियोजन ही नहीं, धातु और पत्थर की। मूर्तियाँ, मृद्-भांडे, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुनिर्मित मुहरें, उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश-विन्यास, आभूषण और सबसे ऊपर सुघड़ अक्षरों का लिपिरूप सिंधु सभ्यता को तकनीक-सिद्ध से ज्यादा कला-सिद्ध जाहिर करता है। खुदाई के दौरान जो भी वस्तुएँ मिलीं या फिर जो भी निर्माण शैली के तत्व मिले, उन सभी से यही बात निकलकर आती है कि सिंधु सभ्यता समाज प्रधान थी। यह व्यक्तिगत न होकर सामूहिक थी। इसमें न तो किसी राजा का प्रभाव था और न ही किसी धर्म विशेष का। इतना अवश्य है कि कोई-न-कोई राजा होता होगा लेकिन राजा पर आश्रित यह सभ्यता नहीं थी। इन सभी बातों के आधार पर यह बात कही जा सकती है कि सिंधु सभ्यता का सौंदर्य समाज पोषित था।

प्रश्न-3 पुरातत्व के किन चिह्नों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि-"सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।"

उत्तर- सिंधु-सभ्यता से जो अवशेष प्राप्त हुए हैं उनमें औजार तो हैं, पर हथियार नहीं हैं। मुअनजो-दड़ो, हड़प्पा से लेकर हरियाणा तक समूची सिंधु-सभ्यता में हथियार उस तरह नहीं मिले हैं जैसे किसी राजतंत्र में होते हैं। दूसरी जगहों पर राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले महल, उपासना-स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड आदि मिलते हैं। हड़प्पा संस्कृति में न भव्य राजप्रासाद मिले हैं, न मंदिर, न राजाओं व महतों की समाधियाँ। मुअनजो-दड़ो से मिला नरेश के सिर का मुकुट भी बहुत छोटा है। इन सबके बावजूद यहाँ ऐसा अनुशासन जरूर था जो नगर-योजना, वास्तु-शिल्प, मुहर-ठप्पों, पानी या साफ़-सफ़ाई जैसी सामाजिक व्यवस्थाओं में एकरूपता रखे हुए था। इन आधारों पर विद्वान यह मानते हैं कि यह सभ्यता समझ से अनुशासित सभ्यता थी, न कि ताकत से।

प्रश्न-4 'यह सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आप को कहीं नहीं ले जातीं; वे आकाश की तरफ़ अधूरी रह जाती हैं, लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर हैं, वहाँ से आप इतिहास को नहीं उस के पार झाँक रहे हैं।' इस कथन के पीछे लेखक का क्या आशय है?

उत्तर- इस कथन के पीछे लेखक का आशय यही है कि खंडहर होने के बाद भी पायदान बीते इतिहास का पूरा परिचय देते हैं। इतनी ऊँची छत पर स्वयं चढ़कर इतिहास का अनुभव करना एक बढ़िया रोमांच है। सिंधु घाटी की सभ्यता केवल इतिहास नहीं है बल्कि इतिहास के पार की वस्तु है। इतिहास के पार की वस्तु को इन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर ही देखा जा सकता है। ये अधूरे पायदान यही दर्शाते हैं. कि विश्व की दो सबसे प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास कैसा रहा।

प्रश्न-5 टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों को भी दस्तावेज़ होते हैं-इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- यह सच है कि टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज होते हैं। मुअनजो-दड़ो में प्राप्त खंडहर यह अहसास कराते हैं कि आज से पाँच हजार साल पहले कभी यहाँ बस्ती थी। ये खंडहर उस समय की संस्कृति का परिचय कराते हैं। लेखक कहता है कि इस आदिम शहर के किसी भी मकान की दीवार पर पीठ टिकाकर सुस्ता सकते हैं चाहे वह एक खंडहर ही क्यों न हो, किसी घर की देहरी पर पाँव रखकर आप सहसा सहम सकते हैं, रसोई की खिड़की पर खड़े होकर उसकी गंध महसूस कर सकते हैं या शहर के किसी सुनसान मार्ग पर

कान देकर बैलगाड़ी की रुन-झुन सुन सकते हैं। इस तरह जीवन के प्रति सजग दृष्टि होने पर पुरातात्विक खंडहर भी जीवन की धड़कन सुना देते हैं। ये एक प्रकार के दस्तावेज होते हैं जो इतिहास के साथ-साथ उस अनछुए समय को भी हमारे सामने उपस्थित कर देते हैं।

प्रश्न-6 नदी, कुएँ, स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था को देखते हुए लेखक पाठकों से प्रश्न पूछता है कि क्या हम सिंधु घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कह सकते हैं? आपका जवाब लेखक के पक्ष में है या विपक्ष में? तर्क दें।

उत्तर- सिंधु घाटी सभ्यता में नदी, कुएँ, स्नानागार व बेजोड़ निकासी व्यवस्था के अनुसार लेखक इसे 'जल-संस्कृति' की संज्ञा देता है। मैं लेखक की बात से पूर्णत: सहमत हूँ। सिंधु-सभ्यता को जल-संस्कृति कहने के समर्थन में निम्न लिखित कारण हैं –

1. यह सभ्यता नदी के किनारे बसी है। मुअनजो-दड़ो के निकट सिंधु नदी बहती है।
2. यहाँ पीने के पानी के लगभग सात सौ कुएँ मिले हैं। ये कुएँ पानी की बहुतायत सिद्ध करते हैं।
3. मुअनजो-दड़ो में स्नानागार हैं। एक पंक्ति में आठ स्नानागार हैं जिनमें किसी के भी द्वार एक-दूसरे के सामने नहीं खुलते। कुंड में पानी के रिसाव को रोकने के लिए चूने और चिराड़ी के गारे का इस्तेमाल हुआ है।
4. जल-निकासी के लिए नालियाँ व नाले बने हुए हैं जो पकी ईटों से बने हैं। ये ईटों से ढँके हुए हैं। आज भी शहरों में जल-निकासी के लिए ऐसी व्यवस्था की जाती है।
5. मकानों में अलग-अलग स्नानागार बने हुए हैं।
6. मुहरों पर उत्कीर्ण पशु शेर, हाथी या गैडा जल-प्रदेशों में ही पाए जाते हैं।

प्रश्न-7 सिंधु घाटी सभ्यता का कोई लिखिए साक्ष्य नहीं मिला है। सिर्फ़ अवशेषों के आधार पर ही धारणा बनाई है। इस लेख में मुअन-जोदड़ो के बारे में जो धारणा व्यक्त की गई है। क्या आपके मन में इससे कोई भिन्न धारणा या भाव भी पैदा होता है?

उत्तर- यदि मोहनजोदड़ो अर्थात् सिंधु घाटी की सभ्यता के बारे में धारणा बिना साक्ष्यों के बनाई गई है तो यह गलत नहीं है। क्योंकि जो कुछ हमें खुदाई से मिला है वह किसी साक्ष्य से कम नहीं। खुदाई के दौरान मिले बर्तनों, सिक्कों, नगरों, सड़कों, गलियों को साक्ष्य ही कहा जा सकता। साक्ष्य लिखित हों यह जरूरी नहीं है। जो कुछ हमें सामने दिखाई दे रहा है वह भी तो प्रमाण है। फिर हम इस तथ्य को कैसे भुला दें कि ये दोनों नगर विश्व की प्राचीनतम संस्कृति और सभ्यता के प्रमाण हैं। इन्हीं के कारण अन्य सभी संस्कृतियाँ विकसित हुई। मुअन-जोदड़ो के बारे में जो धारणा व्यक्त की गई है। वह हर दृष्टि से प्रामाणिक है। उसके बारे में अन्य कोई धारणा मेरे मन में नहीं बनती।

प्रश्न-8 मुअनजोदड़ो की बड़ी बस्ती के बारे में विस्तार से बताइए।

उत्तर- लेखक बताता है कि बड़ी बस्ती के घर बहुत बड़े होते थे। इसी प्रकार इन घरों के आँगन भी बहुत खुले होते थे। इन घरों की दीवारें ऊँची और मोटी होती थीं। जिस आधार पर कहा जा सकता है कि मोटी दीवारों वाले घर दो मंजिले होते होंगे। कुछ दीवारों में छेद भी मिले हैं जो यही संकेत देते हैं कि दूसरी मंजिल को उठाने के लिए शायद शहतीरों के लिए यह जगह छोड़ दी गई होगी। सभी घर पक्की ईंटों के हैं। एक ही आकार की ईंटे इन घरों में लगाई गई हैं। यहाँ पत्थर का प्रयोग ज्यादा नहीं हुआ। कहीं-कहीं नालियों को अनगढ़ पत्थरों से ढक दिया है ताकि गंदगी न फैले। इस प्रकार मुअनजोदड़ो की बड़ी बस्ती निर्माण कला की दृष्टि से संपन्न एवं कुशल थी।

प्रश्न-9 क्या सिन्धु सभ्यता में रंगाई का काम होता था?

उत्तर- सिन्धु सभ्यता में भी रंगाई का काम होता था। लोग बड़े चाव से यह काम किया करते थे। आज भी मुअन- जोदड़ो में एक रंगरेज का कारखाना मौजूद है। यहाँ ज़मीन में गोल गड्ढे उभरे हुए हैं। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि इसमें रंगाई के लिए बर्तन रखे जाते होंगे। पश्चिम में ठीक गढ़ी के पीछे यह कारखाना मिला है। अतः इस बात को बिना किसी शंका के कहा जा सकता है कि प्राचीन लोग रंगाई का काम किया करते थे।

प्रश्न-10 खुदाई के दौरान मुअनजोदड़ो से क्या-क्या मिला?

उत्तर- मुअनजोदड़ो से निकली वस्तुओं की पंजीकृत संख्या पचास हजार है। अहम चीजें तो आज कराची, लाहौर, दिल्ली और लंदन में रखी हुई हैं। मुट्ठीभर चीजें यहाँ के अजायबघर में रखी हुई हैं जिनमें गेहूँ, ताँबे और काँसे के बर्तन, मुहरें, वाद्य यंत्र, चाक पर बने बड़े-बड़े मिट्टी के मटके, चौपड़ की गोटियाँ, दीये, माप तौल के पत्थर, ताँबे का शीशा, मिट्टी की बैलगाड़ी, दो पाटों वाली चक्की, मिट्टी के कंगन, मनकों वाले पत्थर के हार प्रमुख हैं। इस प्रकार खुदाई के दौरान बहुत-सी वस्तुएँ मिलीं जिनमें कुछ तो संग्रहालयों में चली गई और बाकी बची चोरी हो गई।

प्रश्न-11 सिंधु घाटी की सभ्यता कैसी थी? तर्क सहित उत्तर दें।

उत्तर- लेखक के मतानुसार सिंधु घाटी की सभ्यता 'लो-प्रोफ़ाइल' सभ्यता थी। दूसरे स्थानों पर खुदाई करने से राजतंत्र को प्रदर्शित करने वाले महल धर्म की ताकत दिखाने वाले पूजा स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड मिले हैं जबकि मुअनजोदड़ो की खुदाई के दौरान न तो राजप्रसाद ही मिले और न ही मंदिर। यहाँ किसी राजा अथवा महंत की समाधि भी नहीं मिली। यहाँ जो नरेश की मूर्ति मिली है उनके मुकुट का आकार बहुत छोटा है। इतना छोटा कि इससे छोटे सिरपेच(मुकुट) की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इन लोगों की नावों का आकार भी ज्यादा बड़ा नहीं था। इन आधारों पर कहा जा सकता है कि सिंधु घाटी की । सभ्यता आडंबर हीन सभ्यता थी। ऐसी सभ्यता जो छोटी होते हुए भी महान थी। जो विश्व की प्राचीनतम संस्कृति थी।

प्रश्न-12 किन आधारों पर कहा जा सकता है कि सिंधु सभ्यता में राजतंत्र नहीं था?

उत्तर- मुअनजोदड़ो के अजायबघर में प्रदर्शित चीज़ों में औज़ार तो हैं, पर हथियार कोई नहीं है। मुअनजोदड़ो क्या, हड़प्पा से लेकर हरियाणा तक समूची सिंधु सभ्यता में हथियार उस तरह कहीं नहीं मिले हैं जैसे किसी राजतंत्र में होते हैं। इस बात को लेकर विद्वान सिंधु सभ्यता में शासन या सामाजिक प्रबंध के तौर-तरीके को समझने की कोशिश कर रहे हैं। वहाँ अनुशासन ज़रूर था, पर ताकत के बल पर नहीं। वे मानते हैं कोई सैन्य सत्ता शायद यहाँ न रही हो। मगर कोई अनुशासन ज़रूर था जो नगर योजना, वास्तुशिल्प, मुहर-ठप्पों, पानी या साफ़-सफ़ाई जैसी सामाजिक व्यवस्थाओं आदि में एकरूपता तक को कायम रखे हुए था।

दूसरी बात, जो सांस्कृतिक धरातल पर सिंधु घाटी सभ्यता को दूसरी सभ्यताओं से अलग ला खड़ा करती है, वह है प्रभुत्व या दिखावे के तेवर का नदारद होना। दूसरी जगहों पर राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले महल, उपासना-स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड आदि मिलते हैं। हड़प्पा संस्कृति में न भव्य राजप्रसाद मिले हैं, न मंदिर। न राजाओं, महंतों की समाधियाँ। यहाँ के मूर्तिशिल्प छोटे हैं और औज़ार भी। मुअनजोदड़ो के नरेश' के सिर पर जो 'मुकुट' है, शायद उससे छोटे सिरपंच की कल्पना भी नहीं की जा सकती। और तो और, उन लोगों की नावें बनावट में मिस्र की नावों जैसी होते हुए भी आकार में छोटी रहीं। आज के मुहावरे में कह सकते हैं वह 'लो-प्रोफ़ाइल' सभ्यता थी।

प्रश्न-13 मुअनजोदड़ो और हड़प्पा के बारे में लेखक क्या बताता है?

उत्तर- मुअनजोदड़ो और हड़प्पा प्राचीन भारत के ही नहीं, दुनिया के दो सबसे पुराने नियोजित शहर माने जाते हैं। ये सिंधु घाटी सभ्यता के परवर्ती यानी परिपक्व दौर के शहर हैं। खुदाई में और शहर भी मिले हैं। लेकिन मुअनजोदड़ो ताम्र काल के शहरों में सबसे बड़ा है। वह सबसे उत्कृष्ट भी है। व्यापक खुदाई यहीं पर संभव हुई। बड़ी तादाद में इमारतें, सड़कें, धातु-पत्थर की मूर्तियाँ, चाक पर बने चित्रित भांडे, मुहरें, साजोसामान और खिलौने आदि मिले। सभ्यता का अध्ययन संभव हुआ। उधर सैकड़ों मील दूर हड़प्पा के ज्यादातर साक्ष्य रेललाइन बिछने के दौरान विकास की भेंट चढ़ गए।' मुअनजोदड़ो के बारे में धारणा है कि अपने दौर में वह घाटी की सभ्यता का केंद्र रहा होगा। यानी एक तरह की राजधानी। माना जाता है यह शहर दो सौ हेक्टर क्षेत्र में फैला था। आबादी कोई पचासी हजार थी। जाहिर है, पाँच हजार साल पहले यह आज के 'महानगर' की परिभाषा को भी लांघता होगा।

प्रश्न-14 लेखक के मुअनजोदड़ो की नगर योजना की तुलना आज के नगरों से किस प्रकार की है?

उत्तर- नगर नियोजन की मोहनजोदड़ो अनूठी मिसाल है; इस कथन का मतलब आप बड़े चबूतरे से नीचे की तरफ देखते हुए सहज ही भाँप सकते हैं। इमारतें भले खंडहरों में बदल चुकी हों, मगर शहर की सड़कों और गलियों के विस्तार को स्पष्ट करने के लिए ये खंडहर काफ़ी हैं। यहाँ की कमोबेश सारी सड़कें सीधी हैं या फिर आड़ी। आज वास्तुकार इसे 'ग्रिड प्लान' कहते हैं। आज की सेक्टर-मार्का कॉलोनियों में हमें आड़ा-सीधा 'नियोजन' बहुत मिलता है। लेकिन वह रहन-सहन को नीरस बनाता है। शहरों में नियोजन के नाम पर भी हमें अराजकता ज़्यादा हाथ लगती है। ब्रासीलिया या चंडीगढ़ और इस्लामाबाद 'ग्रिड' शैली के शहर हैं जो आधुनिक नगर नियोजन के प्रतिमान ठहराए जाते हैं, लेकिन उनकी बसावट शहर के खुद विकास करने का कितना अवकाश छोड़ती है इस पर बहुत शंका प्रकट की जाती है।

प्रश्न-15 महाकुंड में जल निकासी व्यवस्था कैसी थी?

उत्तर- महाकुंड स्तूप के टीले से नीचे उतरने पर मिलता है। धरोहर के प्रबंधकों ने गली का नाम दैव मार्ग रखा है। माना जाता है कि उस सभ्यता में सामूहिक स्नान किसी अनुष्ठान का अंग होता था। कुंड करीब चालीस फुट लंबा और पच्चीस फुट चौड़ा है। गहराई सात फुट। कुंड में उत्तर और दक्षिण से सीढ़ियाँ उतरती हैं। इसके तीन तरफ साधुओं के कक्ष बने हुए हैं। उत्तर में दो पांत में आठ स्नानघर हैं। इनमें किसी का द्वार दूसरे के सामने नहीं खुलता। सिद्ध वास्तुकला का यह भी एक नमूना है। इस कुंड में खास बात पक्की ईंटों का जमाव है।

कुंड का पानी रिस न सके और बाहर का 'अशुद्ध पानी कुंड में न आए, इसके लिए कुंड के तल में और दीवारों पर ईंटों के बीच चूने और चिरोड़ी के गारे का इस्तेमाल हुआ है। पार्श्व की दीवारों के साथ दूसरी दीवार खड़ी की गई है जिसमें सफ़ेद डामर का प्रयोग है। कुंड के पानी के बंदोबस्त के लिए एक तरफ कुआँ है। दोहरे घेरे वाला यह अकेला कुआँ है। इसे भी कुंड के पवित्र या आनुष्ठानिक होने का प्रमाण माना गया है। कुंड से पानी को बाहर बहाने के लिए नालियाँ हैं। इनकी खासियत यह है कि ये भी पक्की ईंटों से बनी हैं और ईंटों से ढकी भी हैं।

प्रश्न-16 पर्यटक मुअनजोदड़ो में क्या-क्या देख सकते हैं? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर वर्णन कीजिए।

उत्तर- पर्यटक मुअनजोदड़ो में निम्नलिखित चीजें देख सकते हैं-

1. **बौद्ध स्तूप –** मुअनजोदड़ो में सबसे ऊँचे चबूतरे पर बड़ा बौद्ध स्तूप है। यह स्तूप मुअनजोदड़ो के बिखरने के बाद बना था। 25 फुट ऊँचे चबूतरे पर बना है। इसमें भिक्षुओं के रहने के कमरे भी बने हैं।
2. **स्नानागार –** यहाँ पर 40 फुट लंबा तथा 25 फुट चौड़ा कुंड बना हुआ है। यह सात फुट गहरा है। कुंड के उत्तर और दक्षिण से सीढ़ियाँ उतरती हैं। उत्तर में आठ स्नानागार एक पंक्ति में हैं। इसमें एक तरफ तीन कक्ष हैं।
3. **अजायबघर –** यहाँ का अजायबघर छोटा ही है। यहाँ काला पड़ गया गेहूँ, ताँबे और काँसे के बर्तन, मुहरें, वाद्य, चाक पर बने विशाल मृद्भांड, दीये, ताँबे का आईना, दो पाटन वाली चक्की आदि रखे हैं।

संदर्भ एवं आभार

1- www.learncbse.in>ncert-solutions- for class 12-hindi

2- https://keepinspringme.in>question

3- www.studyrankers.com>ncert

4- www.cbsetuts.com>ncert-solutions

5- cbseacademic-nic.in

6- ncert.nic.in/textbook